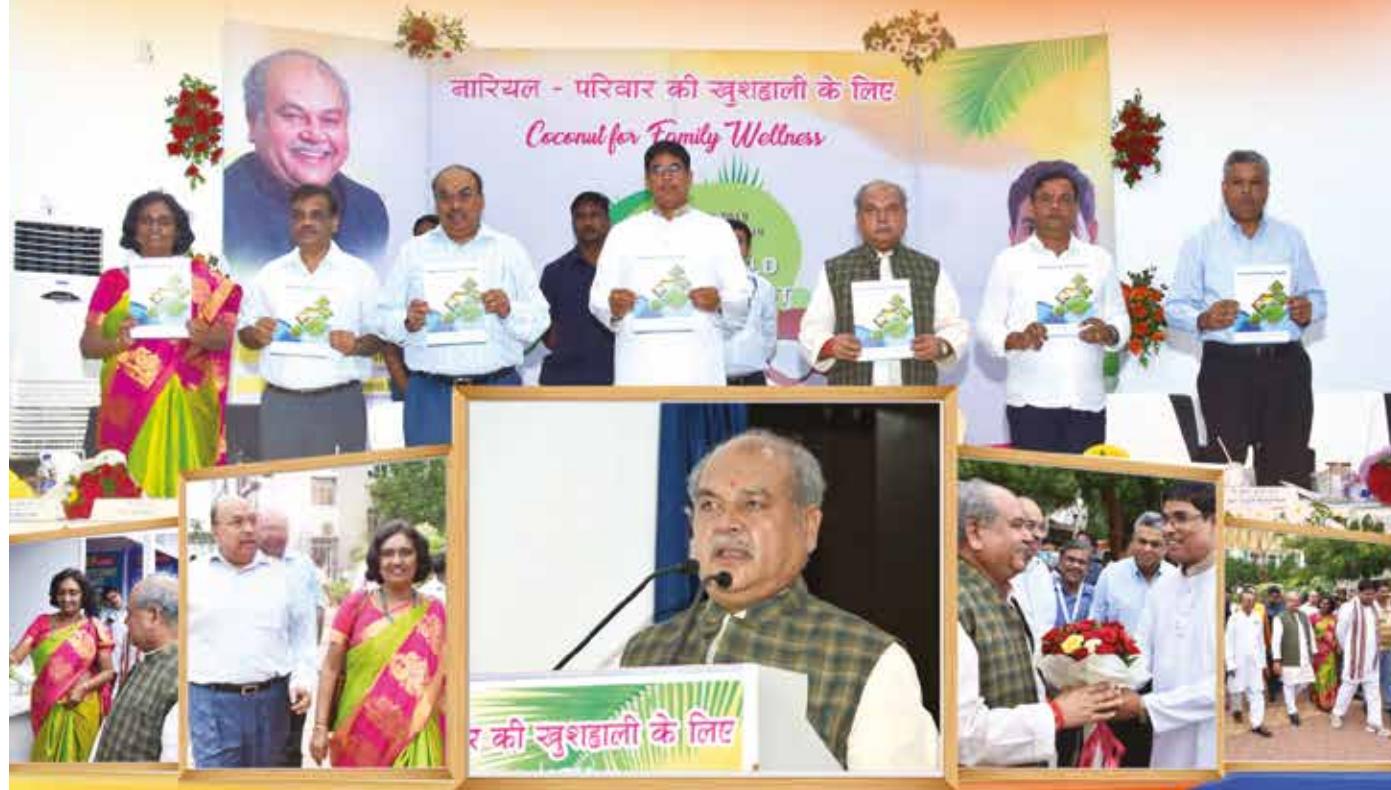
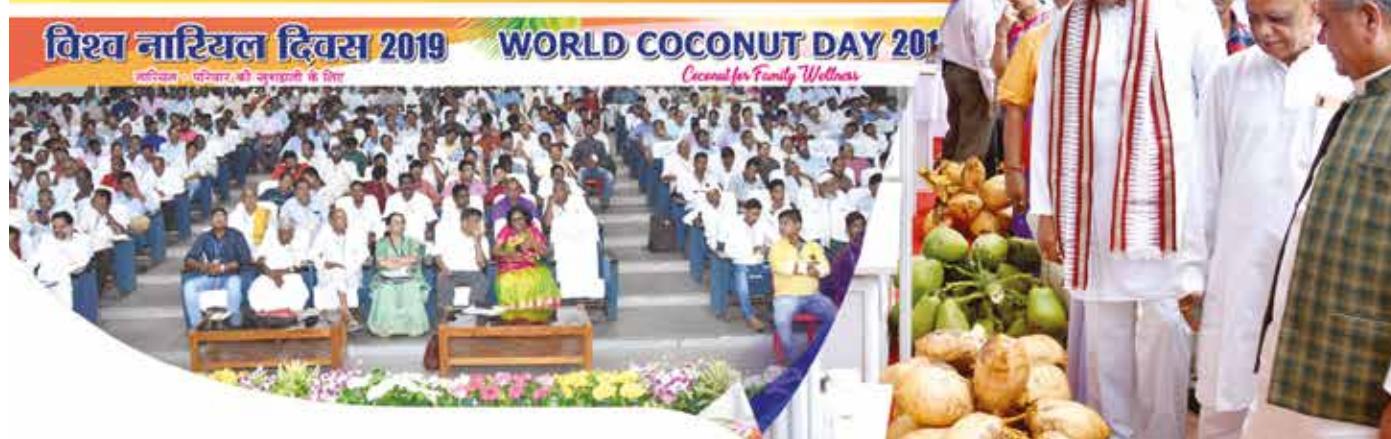


भारतीय नारियल पत्रिका



विश्व नारियल दिवस 2019





नारियल विकास बोर्ड

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXX

संख्या : 2

जुलाई - सितंबर 2019

कोची-11

प्रमाणशं मंडल :

अध्यक्ष

वी.उषा रानी भा.प्र.से.

सदस्य

डा.बी.एन.एस.मूर्ति

संजीव कुमार सिह

डा.वेंकटेश एन.हुबल्ली

संपादक मंडल

सदस्य

आर. मधु

डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सरदिनु दास

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु रानी एन.

डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार)
केरा भवन, कोची - 682 011, भारत
दू. भा. : 0484-2376265, 2377266,
2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानवेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अन्मने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहाटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँचः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओडिशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकाता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्थमंगलम (केरल), वीगवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागांव (छत्तीसगढ़), मध्यपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओडिशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाजार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाष्पकुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार

- नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। द्व नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। □ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकीय अपनाने को प्रोत्साहित करना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। □ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। □ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना।
- केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। द्व नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निर्देशन, बाजार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकीयों का विकास, निर्देशन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाजार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकीयों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.	नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा
एक प्रति	10 रु.	सर्वश्री पाइको प्रिंटिंग प्रेस, कोची-18 में मुद्रित
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.	

**श्रीमती जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से. ने नारियल विकास बोर्ड के
अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया**



श्रीमती जी.जयलक्ष्मी भा.प्र.से., महा निदेशक, राष्ट्रीय पौधा स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान
ने कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन कार्यरत नारियल
विकास बोर्ड, कोची के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया।

**श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से. नारियल विकास बोर्ड के
अध्यक्ष के पद से कार्यमुक्त**



श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., 23 अक्टूबर 2019 को नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष के पद से
कार्यमुक्त हुई। वे नाविबो अध्यक्ष का अतिरिक्त प्रभार 08 मार्च 2019 से संभाल रही थी।

उन्होंने अपने दीर्घदर्शी दृष्टिकोण से देश के नारियल की खेती एवं उद्योग के एकीकृत विकास के लिए
नारियल के क्षेत्र में कई नवीन प्रयास शुरू किए। उन्होंने भारत सरकार की 2022 तक किसानों की आय दुगुनी
करने की एवं भारत को प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन में अग्रणी बनाने की संकल्पना साकार करने में महत्वपूर्ण
भूमिका निभाई। इस संबंध में बोर्ड ने चालू वित्त वर्ष के दौरान नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन प्रसंस्करण
एवं मूल्य वर्धन के लिए 40 करोड़ रुपए विनिर्दिष्ट किया है। देश में नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार हेतु
उन्होंने 2019-20 में नारियल के नए रोपण के अधीन 21000 हेक्टर क्षेत्र लाने एवं पुराने एवं अनुत्पादी पेड़ों
को निकालकर मौजूदा बागानों का पुनरुज्जीवन करने के लिए भी पहल की। देश भर के किसानों के बीच
वैज्ञानिक नारियल खेती पर जागरूकता पैदा करना उनके कार्यकाल में शुरू किया गया प्रमुख कार्यक्रम है।

अध्यक्ष की कलम से.....

प्रिय पाठकों,

नारियल विकास बोर्ड की हार्दिक शुभकामनाएं !

नारियल विकास बोर्ड ने 2 सितंबर 2019 को केआईआईटी कैंपस, भुवनेश्वर, ओडिशा में 21वें विश्व नारियल दिवस समारोह मनाया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण तकनीकी सत्र था जो नारियल की खूबियों पर जागरूकता सृजित करने और नारियल प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियाँ, प्रसंस्करण, मूल्य वर्धन, विपणन और निर्यात संबंधी नवीनतम और अधुनातन जानकारियों से किसानों को अवगत कराने के लिए विषय विशेषज्ञों ने चलाया। सम्मेलन में देशभर के नारियल उत्पादक राज्यों से करीब 1000 किसानों ने भाग लिया और इन्हीं बड़ी संख्या में किसानों की सहभागिता इससे पहले कभी नहीं हुई थी।



माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जी ने अपने उद्घाटन भाषण में यह आश्वासन दिया कि भारत सरकार देश में नारियल खेती, प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन के विकास हेतु प्रतिबद्ध है। उन्होंने नाविकों की सराहनीय सेवाओं की प्रशंसा की जो भारत में नारियल क्षेत्र के एकीकृत विकास हेतु विविध योजनाओं और गतिविधियों के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका निभा रहा है। माननीय मंत्री जी ने ओडिशा में फानी चक्रवाती तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं से क्षतिग्रस्त किसानों के प्रति अपनी सच्ची सहानुभूति व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि किसानों के कल्याण के लिए भारत सरकार द्वारा हर संभव प्रयास और सहयोग प्रदान किया जाएगा। माननीय मंत्री जी ने याद दिलायी कि वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने की जो संकल्पना भारत सरकार ने ली है वह हासिल करने के लिए प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन को बढ़ावा देना अत्यंत अनिवार्य है।

श्री संजय अग्रवाल भा.प्र.से., सचिव, कृषि और श्री बी. प्रधान भा.प्र.से., अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार ने इस अवसर पर बात की और नारियल किसानों को अपनी कठिन मेहनत और योगदान के लिए बधाई दी और सूचित किया कि भारत सरकार सदैव किसानों का साथ देगी और किसानों को हर संभव सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने नवीन उत्पादों के विकास के लिए और देश की निर्यात आय में उनके योगदान के लिए सारे उद्यमियों की सराहना की।

नारियल जो कि एक चमत्कारी फल है, की संभावनाएं असीम हैं और यह मानवजाति के लिए वरदान है। भारत नारियल की उत्पादकता में विश्व का अग्रणी देश है और लगभग 1.2 करोड़ परिवार अपनी आजीविका चलाने के लिए इस फसल पर निर्भर हैं। नारियल के लिए किफायती और स्थायी भाव सुनिश्चित करने और नारियल किसानों को बेहतर संभावनाएं प्रदान करने के लिए उत्पादन से विपणन तक सारे चरणों के एकीकरण को अहमियत देना अनिवार्य है।

मैं अपने किसान मित्रों और उद्यमियों से आह्वान करता हूँ कि इस क्षेत्र की संभावनाओं का भरपूर लाभ उठाएं।

(वी.उषा रानी भा.प्र.से.)

अध्यक्ष

उत्पादकता में टिकाऊपन के लिए नारियल का पौष्टिक प्रबंधन

जीना मैथ्यु, वी.कृष्णकुमार, एस.इंदुजा और ए.अब्दुल हारिस
भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम

नारियल, जिसे जीवनदायी वृक्ष(कल्प वृक्ष) कहा जाता है, सचमुच मानवराशि के लिए वरदान है। आहार, चारा, रेशा, स्वास्थ्य पेय और भवन निर्माण सामग्रियाँ प्रदान करने की सहज क्षमता के साथ यह हमारे रोजमर्रे की जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बन गया है। जहाँ तक इसके जीवन चक्र का सवाल है नारियल पेड़ मानवजाति को भी कभी कभी पीछे छोड़ जाता है और इसकी उत्पादन अवधि 6 से 8 दशक तक रहती है। इस अवधि के दौरान ताड़ की उत्पादकता की क्षमता का भरपूर लाभ उठाने के लिए फलों की तुड़ाई और फसल अपशिष्टों को हटाने से नष्ट होने वाले पौष्टिक तत्वों की पुनः पूर्ति पर्याप्त रूप से करती रहनी चाहिए।

नारियल की पौष्टिक अपेक्षाएं

पौधा चाहे किसी भी प्रकार का हो, उसकी बढ़वार के लिए वैश्विक तौर पर सत्रह अनिवार्य पोषक तत्व अपेक्षित हैं।

इनमें से, नारियल के लिए अनिवार्य पोषक तत्व हैं नत्रजन(N), पोटेशियम(K), कैल्शियम(Ca), मैग्नीशियम (Mg), सल्फर(S), फोस्फरस(P), क्लोरिन(Cl) और बोरोन(B) इत्यादि। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम में आयोजित अध्ययन से यह पाया गया है कि प्रत्यक्ष तौर पर स्वस्थ वयस्क ताड़ द्वारा अवशोषित पोषक तत्वों की मात्रा 889 ग्राम नत्रजन, 389.7 ग्राम कैल्शियम, 1075 ग्राम पोटेशियम, 71.6 ग्राम मैग्नीशियम, 229.69 ग्राम सल्फर, 321.63 मि.ग्रा. बोरोन, 2304 मि.ग्रा. जिंक, 569 मि.ग्रा. कोपर और 1784 मि.ग्रा. मैंगनीज़ की दर पर है। सारे पोषक तत्वों में से स्वस्थ ताड़ सबसे अधिक मात्रा में पोटेशियम सोख लेता है। कुल पोटेशियम का 74 प्रतिशत संचित जैवभार(तना) के रूप में भंडारित होता है जबकि पुनर्चक्रण करने योग्य जैवभार के रूप में (ताड़ के बे हिस्से

जो पुनर्चक्रण से मिट्टी में मिलाया जा सकता है) पोटेशियम का 24 प्रतिशत भंडारित होता है और बाकी गरी में निहित होता है। इससे यह देखा जा सकता है कि नारियल के जैवभार में अधिक मात्रा में पोषक तत्वों का भंडारण होता आ रहा है।

स्वास्थ्यपूर्ण मिट्टी में, उपलब्ध नत्रजन, फोस्फरस और पोटेशियम की अनुकूलतम दर क्रमशः प्रति हेक्टर 280-560 कि.ग्रा., प्रति हेक्टर 10-25 कि.ग्रा. और प्रति हेक्टर 110-280 कि.ग्रा. होती है। कैल्शियम, मैग्नीशियम और सल्फर 300 पीपीएम, 120 पीपीएम और 5 पीपीएम से अधिक होना स्वास्थ्यपूर्ण मिट्टी के लिए उचित माना जाता है। जिंक, कोपर और मैग्नीज़ जैसे सूक्ष्मपौष्टिक तत्वों के मामले में यदि मिट्टी में ये पोषक तत्व 1 पीपीएम से कम हो तो उस में इनका अभाव माना जाता है। मिट्टी में बोरोन संघटक 0.5 पीपीएम से कम हो तो उस मिट्टी में बोरोन का अभाव माना जाता है और जहाँ तक आयरन का संबंध है मिट्टी में इसकी मात्रा 5पीपीएम से अधिक होना उचित होता है, अन्यथा उस में आयरन का अभाव माना जाता है।

नारियल की उत्पादकता पर पोषक तत्वों की भूमिका

हर जीवित वस्तु के लिए आहार अनिवार्य है और बहुवर्षीय रोपण फसल होने के नाते नारियल पेड़ के लिए संतुलित मात्रा में पोषक तत्वों की अपेक्षा होती है ताकि फलों की तुड़ाई के साथ एवं ताड़ अपशिष्टों के रूप में जो पोषक तत्व नष्ट होते हैं इनकी प्रतिपूर्ति की जा सके। सही मात्रा में सही समय पर और सही अनुपात में पोषक तत्वों का प्रयोग करना अत्यंत अनिवार्य है। पोषक तत्वों की प्रतिरोधी प्रतिक्रियाओं (किसी एक पोषक तत्व की अधिकता से दूसरे की प्रतिक्रिया कम हो जाती है) तथा फसलों द्वारा पोषक तत्वों के अवशोषण में बाधा पड़ जाने की दृष्टि से पोषक तत्वों की मात्रा की अधिकता और मात्रा की कमी खतरनाक होती हैं। अतः नारियल की बढ़वार और उत्पादकता में हरेक पोषक तत्व की भूमिका की जानकारी होना उचित है।

प्रमुख पोषक तत्व(नत्रजन, फोस्फरस और पोटेशियम)

नत्रजन अमिनो अम्लों, प्रोटीनों और न्यूक्लिक अम्लों का संघटक है। पाइरोल रिंगों, जिससे कि क्लोरोफिल के



चित्र 1 : नारियल में नत्रजन की कमी का लक्षण

पोरफिरिन ढाँचे का निर्माण हुआ है और अन्य जैव अणुओं में नत्रजन निहित होता है। मिट्टी के जैविक तत्वों का मुख्य संघटक होने के कारण वह मिट्टी, जिनमें जैविक तत्वों की मात्रा कम होती है तथा वह मिट्टी जो उद्धारित है, में नत्रजन की कमी की समस्या उत्पन्न होती है। जलजमाव वाली परिस्थिति बने रहने से भी उपलब्ध नत्रजन नष्ट हो जाता है और इसके फलस्वरूप नारियल ताड़ों में नत्रजन की कमी के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। नत्रजन की कमी वाली मिट्टी में नारियल पौधों की बढ़वार रुक जाना और पत्तों में पीलापन पाए जाना आम बात है। फोस्फरस और पोटेशियम के अवशोषण में भी नत्रजन सहायता करता है और इसलिए नत्रजन की कमी होने से अन्य पोषक तत्वों के अवशोषण एवं स्वांगीकरण में भी रुकावट आती है। इन कारकों के अलावा कुक्कुट खाद जैसे उच्च कार्बन:नत्रजन अनुपात वाली जैव खादों का प्रयोग करने से अस्थायी तौर पर नत्रजन का अवशोषण रुक जाता है और इससे भी नत्रजन की कमी की समस्या उत्पन्न होती है खासतौर पर छोटे ताड़ों में।

क्लोरोफिल संघटक कम होने से पर्णवृत्त के निकट पुराने पत्तों का रंग सुनहरे पीले रंग का होना तथा पत्तों के सिरे हल्के भूरे रंग का होना और बाद में इनका सूख जाना नत्रजन की कमी के आम लक्षण हैं(चित्र 1)। पीलापन पत्तों और पत्तियों के सिरे से शुरू होता है और मध्यशिरा की ओर बढ़ने लगता है। नत्रजन की कमी का खास लक्षण यह होता है कि मध्यशिरा भी पीले रंग का हो जाता है।



चित्र 2 : नारियल में फोस्फरस की कमी का लक्षण

मिट्टी के जाँच परिणामों के आधार पर नत्रजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करके इसकी कमी का प्रबंधन किया जा सकता है। प्रयुक्त नत्रजन का गैसीय रूप में नष्ट रोकने के लिए जलजमाव वाली परिस्थिति से बचना चाहिए। मिट्टी में जैविक तत्वों की मात्रा पर्याप्त रूप में बनाए रखने के लिए अनुशंसित मात्रा में जैविक उर्वरकों का प्रयोग करना भी अनिवार्य है।

नारियल के पोषण में अहम भूमिका निभाने वाला दूसरा प्रमुख पोषक तत्व फोस्फरस है। न्यूक्लिक अम्ल का संघटक होने के नाते और ऊर्जा अंतरण एवं कोशिकाओं की श्वसन प्रक्रिया में इसकी अहमियत को मदेनज़र रखते हुए यह सभी पौधों की बढ़वार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। छोटे नारियल ताड़ों की बढ़वार में, खासतौर पर जड़ों के फैलाव और विकास में भी फोस्फरस का पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। प्रारंभिक पुष्पण को फोस्फरस की उपलब्धता काफी अधिक प्रभावित करती है। यही नहीं, नत्रजन की क्रियाएं प्रभावी बनाने के लिए अपेक्षित मात्रा में फोस्फरस की आपूर्ति सुनिश्चित करना अनिवार्य है। छोटे ताड़ अच्छी तरह जड़ पकड़कर बढ़ जाने के लिए मिट्टी में अपेक्षित मात्रा में फोस्फरस की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। मखरली मिट्टी तथा अत्यधिक रूप से अम्लीय मिट्टी(पीएच 4.5 से कम) में और चूनेदार मिट्टियों में आमतौर पर फोस्फरस की कमी की समस्या का सामना करना पड़ जाता है। फोस्फरस की कमी वाली परिस्थितियों में जड़ वृद्धि लगभग रुक जाती है। पत्तों में बैंगनी रंग में कमी के लक्षण प्रकट होते हैं (चित्र 2)। अनुशंसित मात्रा

में फोस्फरस निहित उर्वरकों का प्रयोग करके फोस्फरस की कमी की समस्या का प्रबंधन किया जा सकता है।

तथापि, फोस्फरस निहित उर्वरकों के निरंतर प्रयोग से मिट्टी में उपलब्ध फोस्फरस की मात्रा अधिक हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप सूक्ष्म पोषक तत्व विशेषतया बोरोन और जिंक की उपलब्धता कम हो जाएगी। प्रयोगशालाओं में व्यवस्थित विश्लेषण के ज़रिए मिट्टी की जाँच करने पर यदि मिट्टी में उपलब्ध फोस्फरस का स्तर 20 पीपीएम से अधिक हो तो, अगले दो साल तक फोस्फरस निहित उर्वरकों का प्रयोग नहीं करना है और बाद में मिट्टी में इसकी उपलब्धता के आधार पर फिर डाला जा सकता है।

नारियल उत्पादन प्रणाली का सबसे प्रमुख पोषक तत्व पोटेशियम है और नारियल से बड़ी मात्रा में यह निकल जाता है। पोटेशियम कीटों और रोगों के प्रकोप से प्रतिरोधी क्षमता प्रदान करने के साथ साथ अजैविक दबाव विशेषतया सूखे के प्रति सहनशीलता क्षमता प्रदान करता है। यह पर्णरंध्र का खुलना और बंद होना नियमित रखता है और इससे पौध तंत्र में जल का संतुलन नियमित रहता है। यह शर्करा, वसा और रेशीय सामग्रियों के उत्पादन में भी अनिवार्य तत्व है। मादा फूलों के उत्पादन में और फल लगने में भी इसकी अहम भूमिका है। कल्पवृक्ष होने के नाते नारियल पेड़ के सभी हिस्सों का प्रभावी उपयोग विविध प्रयोजनों के लिए होता है। अतः ताड़ के इन संघटकों के ज़रिए हटाए जाने वाले पोषक तत्वों की यदि पुनःपूर्ति नहीं की जाती है तो ताड़ में इन पोषक तत्वों की कमी की समस्या उत्पन्न होती है।

मिट्टी में अधिक मात्रा में चूना डालने से, मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग अधिक होने से और मिट्टी की अम्लता से नारियल के पेड़ों में पोटेशियम की कमी उत्पन्न होती है। निम्न धनायन विनियम क्षमता वाली और कम मात्रा में जैविक तत्व निहित हल्की बलुई मिट्टी में बढ़ने वाले नारियल पेड़ में पोटेशियम की कमी होने की संभावना अधिक होती है। इस संबंध में यह ध्यान दिया जाए कि नारियल बागों में कंदमूल फसलें, चारा घास, केला और अनन्नास जैसी पोटेशियम का



चित्र 3 : पोटेशियम की कमी का लक्षण

अवशोषण अधिक करने वाली अंतर फसलों की खेती करते समय हरेक फसल की अपेक्षाओं के आधार पर पर्याप्त मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करते हुए उन्हें उगाएं।

पोटेशियम की कमी के दौरान बाहरी पत्ते संतरे रंग में बदलने लगते हैं और इनमें संतरे रंग के धब्बे प्रकट होते हैं (चित्र 3)। पत्तों का बेरंग होना बाहरी पत्तों के सिरे से शुरू होकर किनारों से मूल भाग की तरफ बराबर बढ़ने लगता है। किंतु मध्यशिरा हरे रंग का रह जाता है। पत्तों का सिरा मुरझाने लगता है और ऊतकक्षय शुरू हो जाता है। बाद में ऊतकक्षय वाले धब्बे एकसाथ मिलकर जला हुआ सा प्रकट होता है। हरे रंग में त्रिकोण का प्रकट होना नारियल में पोटेशियम की कमी की खास विशेषता होती है जिसका मूल आधार सबसे निचली पत्तियों पर और शीर्ष पत्तों के सिरों की तरफ होता है। मिट्टी की जाँच के आधार पर पोटेशियम उर्वरकों के प्रयोग के साथ साथ थालों में ताड़ के अपशिष्टों का पुनर्चक्रण इसकी कमी दूर करने के लिए सहायक है।

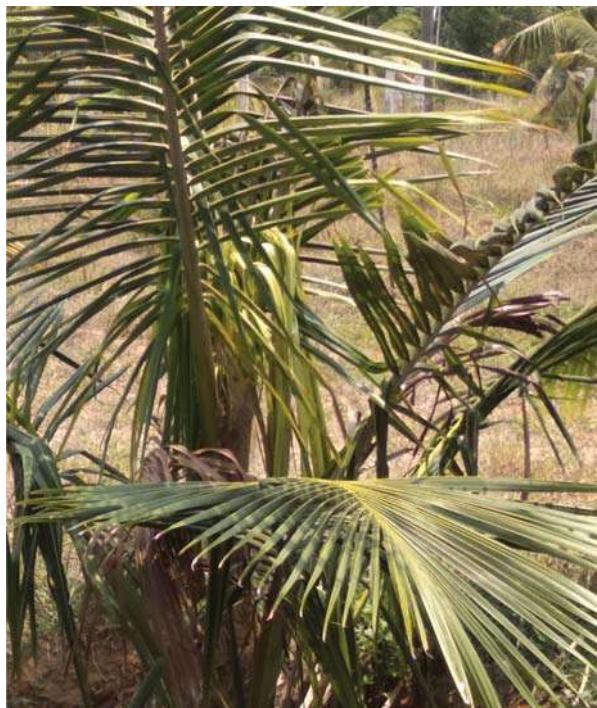
गौण पोषक तत्व(कैल्शियम, मैग्नीशियम और सल्फर)

नारियल के पोषण में मुख्य उर्वरकों का प्रयोग अक्सर अनुशंसित मात्रा में किया जाता है। किंतु मिट्टी की अम्लता की गंभीर समस्या के साथ साथ फसल द्वारा हटाए जाने के कारण मिट्टी से अधिक मात्रा में अधिशोषण के परिणामस्वरूप कैल्शियम, मैग्नीशियम और सल्फर जैसे गौण पोषक तत्वों की कमी उत्पन्न हो सकती है।

पत्तों को तंदुरुस्ती और ओज प्रदान करने में सहायक प्रमुख पोषकतत्व आयन कैल्शियम है। ऊतकों की तथा

कोशिका भित्ति के विकास में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। अम्लीय मिट्टीयों में कैल्शियम की मात्रा कम होती है और फसल द्वारा लगातार हटाए जाने से कैल्शियम की कमी होती है। कैल्शियम पत्तों का अचल तत्व है और इसकी कमी के लक्षण सबसे पहले छोटे पत्तों पर प्रकट होते हैं। नारियल पेड़ों पर कैल्शियम की कमी तरुण ऊतकों की तंदुरुस्ती और ओज नष्ट होना, ऊतकक्षय होना और कोंपल वाला भाग मुरझाना जैसे लक्षणों से प्रकट होती है। कैल्शियम की कमी वाली परिस्थिति में 0.5 प्रतिशत कैल्शियम नाइट्रेट घोल का छिड़काव अनुशंसित है। उर्वरकों के प्रयोग के दो हफ्ते के पहले प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. की दर पर चूने का प्रयोग करने से मिट्टी में कैल्शियम की आपूर्ति होती है।

क्लोरोफिल का प्रधान आयन होने के नाते रंग प्रणाली में मैग्नीशियम की खास भूमिका होती है और पौधे की संश्लेषण क्षमता पर इसका प्रभाव पड़ता है। यह मादा फूलों का उत्पादन बढ़ाता है और पौधों में कई एनजाइम तंत्रों को सक्रिय करता है। इसकी कमी होने पर पुराने पत्तों के सिरे से पीलापन शुरू हो जाता है जो मूल भाग की तरफ बढ़ने लगता है और



चित्र 4 : नारियल में कैल्शियम की कमी का लक्षण



चित्र 5 : नारियल में मैग्नीशियम की कमी के लक्षण

बाद में छोटे पत्ते भी पीले पड़ने लगते हैं (चित्र 5)। मैग्नीशियम की कमी वाले पत्तों का मध्य भाग स्वच्छ हरे रंग का होता है और किनारे नींबु के उजले पीले से संतरे रंग के हो जाते हैं। पीलापन मुख्यतः उन भागों पर प्रकट होता है जहाँ सूर्यप्रकाश पड़ता है। अधिकांश मामलों में छायायुक्त भाग हरा रहता है।

उर्वरकों की दूसरी खुराक के प्रयोग के दौरान प्रति ताड़ 500 ग्राम की दर पर मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग करके मैग्नीशियम की कमी का प्रबंधन किया जा सकता है।

नारियल के गोण पोषक तत्वों में अगला प्रमुख पोषक तत्व सल्फर है। सल्फर तेल के उत्पादन में अपेक्षित तत्व है और यह तेल और खोपरे की गुणवत्ता को सुधारता है। यह नारियल की खूबियाँ बेहतर बनाता है। सल्फर की कमी के दौरान छोटे पत्ते पीले हो जाते हैं और वयस्क पत्ते हरे रहते हैं। तना दुर्बल होने के साथ साथ पत्ते झुक जाते हैं। पुराने ताड़ों में, पत्तों की संख्या और आकार कम हो जाता है। डंठल कमज़ोर हो जाने के कारण तने के चारों ओर मृत पत्तों का समूह विकसित होता है। पकने से पहले ही फल गिरने लगते हैं। रबड़ समान खोपरा नारियल में सल्फर की कमी का एक खास लक्षण है।

सूक्ष्मपोषक तत्व

बोरोन नारियल के लिए अनिवार्य पोषक तत्व है जो मेरिस्टमी ऊतकों के प्रवर्धन में सहायक है। यह प्रोटीन का चयापचय, पेक्टिन का संश्लेषण, जल संबंध का अनुरक्षण,

शर्करा का स्थानांतरण, ऊतक श्वसन, फलन प्रक्रिया, पराग नली की वृद्धि आदि में और फूलों एवं फलों के विकास में सहायता करता है। नारियल की खेती वाले इलाकों में फसलों की खेती लगातार करते रहने के फलस्वरूप और नियमित उर्वरक प्रयोग के साथ साथ मिट्टी में बोरोन की प्रतिपूर्ति न करने के कारण भारी मात्रा में बोरोन की कमी पायी गयी है।

बोरोन की कमी के लक्षण पत्तों, जड़ों, पुष्टक्रमों और फलों पर प्रकट होते हैं। बोरोन पौधों का अचल तत्व है, अतः छोटे पत्तों पर इसका लक्षण सबसे पहले प्रकट होता है। मेरिस्टमी ऊतकों पर बोरोन की कमी का प्रभाव गंभीर रूप से पड़ता है। संपट्टन, याने पत्तियों का न खुलना बोरोन की कमी का प्रमुख लक्षण है और इसे शिखर रोधन रोग कहा जाता है। छोटे पत्तों पर सिलवर्टें प्रकट होंगी और पत्तों की वृद्धि में बाधा पड़ जायेगी (चित्र 6)। पराग उत्पादन, पराग कण अंकुरण और पराग नली के विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। फल लगना मंद पड़ जाएगा और बुताम तेज़ी से झड़ने लगेंगे। कुछ खास परिस्थितियों में 'हेन एंड चिकन डिसओर्डर' याने एक ही गुच्छे पर अधिक और कम आयु के फल एक साथ पाए जाने लगते हैं।

मैथु एवं अन्य(2018) ने नारियल के पत्तों में बोरोन का निर्णयक स्तर प्रति कि.ग्रा.13.27 मि.ग्रा. और मिट्टी में 0.48 पीपीएम बताया है। निर्णयक स्तर से तात्पर्य है मिट्टी में और पत्तों में बोरोन की मात्रा यदि कम हो तो उसकी कमी के लक्षण प्रकट होते हैं और अधिक हो तो विषाक्तता के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। जैविक उर्वरकों के साथ साथ जून, सितंबर, दिसंबर और मार्च में 40 ग्राम के



चित्र 6 : नारियल में बोरोन की कमी का लक्षण

हिसाब से बोरक्स का प्रयोग करके नारियल में बोरोन की कमी का प्रबंधन किया जा सकता है। अतिरिक्त रूप में जो बोरोन डाला जाता है उस का अच्छी तरह उपयोग हो जाने के लिए के लिए सिचाई सुनिश्चित की जानी होगी। अम्लीय मिट्टी की प्रतिक्रियाएं ठीक करने के लिए बोरक्स के प्रयोग के पहले प्रति ताड़ एक कि.ग्रा. की दर पर डोलोमाइट का प्रयोग करना अनिवार्य है।

क्लोरोफिल के निर्माण में आयरन उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और यह श्वसन एवं ऑक्सीकरण तंत्र से संबद्ध एनज़ाइमों का संघटक भी है। क्षारीय और चूनेदार मिट्टियों में आयरन इस प्रकार अवक्षेपित होता है कि यह ताड़ को उपलब्ध नहीं होता है और फोस्फरस की अधिकता की परिस्थितियों में अधुलनीय स्फेटों के रूप में आयरन का यौगिकीकरण होता है। अम्लीय मिट्टी वाली परिस्थितियों में प्रायः आयरन की कमी का सामना नहीं करना पड़ता है।

एकसमान हरितरोग आयरन की कमी से जुड़ा रोगलक्षण है। शिखर से नीचे तक के सभी पत्ते फीके हरे रंग के या गहरे पीले रंग के हो जाते हैं। शिराओं के सामानांतर लंबी पट्टी के रूप में पत्ते धीरे धीरे पीले पड़ने लगते हैं। गंभीर स्थिति में पत्ते पूरी तरह पीले हो जाते हैं। डंठल और पत्तियों का आकार छोटा हो जाता है। पत्तों के किसी भी हिस्से में ऊतकक्षय न पाया जाना भी आयरन की कमी का खास लक्षण है।

जैसा कि आयरन के मामले में होता है, मिट्टी का पीएच 7.0 से अधिक वाली क्षारीय और चूनेदार मिट्टियों में मैंगनीज़ की भी कमी होती है। मिट्टी में पी एच की अधिकता मैंगनीज़ की कमी का प्रमुख कारण है। मैंगनीज़ की नोड़ी - सी ही कमी हो तो इसका लक्षण है नए निकलते पत्ते हरितरोग के शिकार होते हैं जिन पर लंबाई में ऊतकक्षयी लकड़ियों दिख जाती हैं। यदि मैंगनीज़ की भारी कमी हुई हो तो इन पत्तों का मूलभाग मुड़ जाता है या छल्लेदार हो जाता है।

उच्च अम्लीय बलुई मिट्टी में और भारी जैविक मिट्टी में तथा अत्यधिक चूनेदार एवं क्षारीय मिट्टियों में ताँबे की कमी पायी जाती है। पोषक तत्वों की कमी से युक्त

मिट्टियों में चूना डालने से ताँबे की उपलब्धता कम हो जाती है। छोटे पत्तों का डंठल गंभीर रूप से मुड़ जाता है और साथ साथ पत्तों के सिरे का रंग पीला होकर सूख जाता है और पत्तों का किनारा भूरे या पीले रंग का हो जाता है किंतु मध्य भाग हरा रहता है। जैसे जैसे रोग लक्षण बढ़जाता है, सूखा हुआ हिस्सा फैल जाता है और ताड़ नीचे की ओर झुका हुआ सा दिखाई देता है।

ज़िंक या जस्ता पौधों में ऑक्सीकरण प्रक्रिया त्वरित बनाता है और यह कार्बोहाइड्रेट के रूपांतरण के लिए अनिवार्य है और ऑक्सिन के उत्पादन में सहायता करता है और जल अवशोषण को बढ़ावा देता है। ज़िंक की कमी में बुतामों का झड़ना और शिखर का आकार छोटा होना प्रकट लक्षण है। ज़िंक की कमी से पत्तों का आकार इतना छोटा हो जाता है कि यह 50 प्रतिशत तक घट जाता है। पत्तियाँ हरितरोग के शिकार हो जाती हैं, ये पतली और कम लंबाई की हो जाती हैं। इसकी कमी गंभीर होने पर पुष्पण देरी से होता है।

क्लोरिन पर्यावरणीय प्रवाहकर्त्त्व और जल संतुलन के अनुरक्षण से जुड़ा हुआ है। अंदरूनी क्षेत्रों में स्थित ताड़ों में क्लोरिन की कमी पायी जाती है। ताड़ की वृद्धि दर घट जाती है और इसका आकार एवं फलों की संख्या कम हो जाती है। पत्ते झुक जाते हैं और नमी दबाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप ये टूट जाते हैं। तने पर दरार पड़ जाता है और लगातार तनास्थवण होता रहता है। इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप भी रिपोर्ट किया गया है।

किसी खास पोषक तत्व की कमी से जब ताड़ प्रभावित हो जाता है तो उसके रोगलक्षण प्रकट होने लगते हैं। अतः यह हमेशा उचित होता है कि सावधिक रूप से मिट्टी की व्यवस्थित जाँच और पत्तों के विश्लेषण से मिट्टी और ताड़ के स्वास्थ्य का अनुवीक्षण करें।

नारियल में संतुलित पोषण की रणनीतियाँ

ताड़ के स्वास्थ्य और उत्पादकता टिकाऊ रखने में पोषण की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है अतः, प्रारंभिक वर्षों से ही उचित प्रबंधन रणनीतियाँ अपना लेनी चाहिए। हम

जिस प्रकार छोटी आयु में ताड़ का संरक्षण और प्रबंधन करते हैं उसका प्रभाव बाद की स्थितियों में उत्पादकता पर पड़ता है। अतः ताड़ की उत्पादन क्षमता का पूरी तरह लाभ उठाने के लिए व्यवस्थित पोषण प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाना अनिवार्य है।

मिट्टी की प्रतिक्रियाएं व्यवस्थित करना

हम जिन पोषक तत्वों का प्रयोग करते हैं इनके प्रभावी उपयोग के लिए मिट्टी का पीएच 6.0 से 6.5 के बीच होना चाहिए। अम्लीय मिट्टी में उर्वरकों के प्रयोग के दो हफ्ते पहले प्रति ताड़ 1 कि.ग्रा. की दर पर चूना या डोलोमाइट का प्रयोग करने से मिट्टी का पीएच सुधारा जा सकता है। डोलोमाइट कार्बन और मैग्नीशियम का कार्बोनेट है। चूने की सामग्रियाँ अच्छी तरह मिट्टी में मिला देनी चाहिए। चूना डालकर मिट्टी की अम्लता टीक करने हेतु मिट्टी में रासायनिक प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में नमी मौजूद होना अनिवार्य है।

नारियल में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन

ताड़ द्वारा पोषक तत्वों का अवशोषण ताड़ की वृद्धि और मिट्टी की उर्वरता की स्थिति पर निर्भर होता है। केरल की परिस्थितियों में वयस्क ताड़ के लिए 500:320:1200 ग्राम नत्रजन:फोस्फरस पेंटोक्साइड:पोटेशियम ऑक्साइड ($\text{N:P}_2\text{O}_5:\text{K}_2\text{O}$) अनुशंसित है जिनकी आपूर्ति 1 कि.ग्रा. यूरिया, 1.5 कि.ग्रा. मसूरिफोस और 2 कि.ग्रा. म्यूरिएट ऑफ पोटेश के प्रयोग से पूरी की जा सकती है। बारिश की उपलब्धता के आधार पर दो भागों में पूरे उर्वरकों का प्रयोग किया जा सकता है। दक्षिण-पश्चिमी मानसून की शुरुआत में अनुशंसित उर्वरक के एक तिहाई हिस्से का प्रयोग किया जा सकता है और शेष दो तिहाई हिस्से का प्रयोग उत्तर पूर्वी मानसून के समय सितंबर-अक्टूबर के दौरान किया जा सकता है। मई-जून के दौरान ताड़ के चारों ओर 1.8 मीटर की दूरी में और 25 सें.मी. गहराई में थाला बनाकर उसमें उर्वरक डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिलाया जा सकता है। उर्वरकों के दूसरे भाग के प्रयोग के दौरान 25 कि. ग्राम जैविक खाद मिलाकर थाला बंद किया जा सकता है।

रोपण के तीन महीने बाद वयस्क ताड़ों के लिए अनुशंसित मात्रा के दसवें भाग (1/10)की दर पर उर्वरकों की पहली खुराक दे सकती है। रोपण के एक वर्ष बाद वयस्क ताड़ की मात्रा का एक तिहाई भाग अपेक्षित है और दो वर्ष बाद वयस्क ताड़ की मात्रा के दो तिहाई भाग का प्रयोग किया जाना होगा। रोपण के तीसरे वर्ष से अनुशंसा के अनुसार पूरी खुराक दी जा सकती है।

तमिलनाडु में, दो रुम तुल्य भागों में जून-जुलाई और दिसंबर-जनवरी के दौरान उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है। फोस्फरस युक्त उर्वरकों का प्रयोग थालों में सूपर फोस्फेट के रूप में या यदि सिंचाई का पानी अच्छा हो तो ड्रिप सिंचाई के ज़रिए डाई अमोर्णियम फोस्फेट के रूप में किया जा सकता है। सिंचित परिस्थितियों में, 3-4 भागों में उर्वरकों का प्रयोग किया जा सकता है।

नारियल जैवभार पुनर्चक्रण में सूक्ष्मजीवों की सहायता

नारियल बाग से प्राप्त कृषि अपशिष्ट लिग्नो सेलुलोसिक प्रकृति का बहुत जैवभार (प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 12-14 टन) है जो सूक्ष्मजीवीय अपघटन के प्रति भागिक रूप से प्रतिरोधिता दर्शाता है। नारियल पत्ते, छिलके और कयर गूदा थालों में पलवार सामग्री के रूप में प्रयुक्त होता है। पलवार लगाने का कार्य मानसून के आखिर में किया जाना चाहिए जिससे नमी सुरक्षित रखने में मदद मिलती है, मिट्टी का तापमान अनुकूलतम बनाया रखा जा सकता है और जड़ क्षेत्र में सूक्ष्मजीवीय क्रियाएं बढ़ जाती हैं जिससे कि ताड़ तेज़ गर्मी के मौसम को सहने में सक्षम हो जाता है। अगले मानसून की शुरुआत से पहले भुरभुरे पलवार सामग्रियाँ गोबर की खाद के साथ मिट्टी में मिलाया जा सकता है। एकबार पर्याप्त मात्रा में नमी प्राप्त होने के बाद सूक्ष्मजीवीय विघटन शुरू हो जाता है और विविध सूक्ष्मजीवीय समूहों के अनुक्रम में यह प्रक्रिया अविरल चलती रहती है। मिट्टी के सूक्ष्मजीव खाद उत्पादित करते हैं (जैविक सामग्रियों का अपघटन करके) 'जो मिट्टी की जीवनशक्ति' कहलाती है। यह खाद मिट्टी में नमी बरकरार रखने में और मिट्टी के चूरे जैसी संरचना के गठन में मदद करती है जिससे मिट्टी

अधिक सरंग्र बन जाती है। यांत्रिक विधि से पत्तों को टुकड़ा करने और नारियल पत्ता वर्मिकंपोस्टीकरण और कयर गूदा कंपोस्टीकरण जैसी तकनीकों से नारियल बाग में कृषि अपशिष्टों का जैव अपघटन त्वरित गति से होता है। त्वरित विघटन के अलावा कंपोस्टिंग विधि अपनाने से लाभकारी सूक्ष्मजीव समूह जैसे कि फ्री-लिविंग नन्नजन यौगिक, फोस्फेट विलेयकारी, फ्लूरसेंट स्यूडोमोनास और सिलिकेट विलेयकारियों की संख्या में बढ़ोत्तरी पायी गयी है जिसके परिणामस्वरूप पौध की बढ़वार भी बेहतर होती है।

सूक्ष्मजीव नारियल में पौष्टिक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाते हैं

पौधे वायुमंडलीय डाइ नन्नजन को अमोणिया में बदलने में और अपनी बढ़वार के लिए इसका सीधा उपयोग करने में असमर्थ है। जैविक नन्नजन यौगिकीकरण के ज़रिए वातावरणीय नन्नजन को पौधों के लिए उपयोगी रूप में परिवर्तित किया जाता है। बीजेरिनकिया, एज़ोस्पाइरिलम, हेर्बास्पाइरिलम, बरखोल्डेरिया, एज़ोअर्कस, बैसिलस आदि कुछ आम नन्नजन यौगिकारक बैक्टीरिया हैं जो नारियल के जड़ क्षेत्र में पाए जाते हैं। इनमें से अधिकांश प्रभावी जैव संरोपक हैं जो नारियल नर्सरी के पौधों की बेहतर वृद्धि हेतु उपयुक्त हैं।

कुछ परपोषी बैक्टीरिया और फफूँदों में अधुलनशील स्रोतों से फोस्फेट, पोटेशियम, जिंक और सिलिकेट जैसे खनिज पोषक तत्वों का विलेयीकरण करने और पौधों को उपलब्ध कराने की क्षमता होती है। उदाहरण के लिए स्यूडोमोनास प्रजाति, एंटेरोबैक्टर प्रजाति, एसिनेटोबैक्टर प्रजाति, बैसिलस प्रजाति, माइक्रोकोकस प्रजाति, कोरिन बैक्टेरियम प्रजाति और एलकैलिजेंस प्रजाति नारियल बागानों की मिट्टी में आमतौर पर पाए जाने वाले पोषक विलेयीकारक हैं। एस्पर्जिलस प्रजाति और पेनिसिलम प्रजाति दो प्रमुख फोस्फेट विलेयीकारक फफूँदे हैं जो नारियल के मूल परिवेश में पाए जाते हैं। ये सूक्ष्मजीव ग्लूकोनिक अम्ल जैसे जैविक अम्लों का उत्पादन करते हैं जो अधुलनशील पोषक तत्वों के विलयन में मदद करता है। मिट्टी में जैविक खादों के साथ साथ

प्रति वर्ष प्रति ताड़ 100 ग्राम की दर पर नन्नजन यौगिकारक बैक्टीरिया एज़ोस्पाइरिलम बैसिलेंस और फोस्फेट विलेयीकारक बैक्टीरिया बैसिलस सब्टिलिस युक्त उर्वरकों का प्रयोग अनुशासित है।

पौध वृद्धि संवर्धक राइज़ोबैक्टीरिया पौध की बढ़वार में काफी सहायक होता है। भारत के विभिन्न नारियल उत्पादक इलाकों से प्रवर्धित अधिकांश नारियल राइज़ोबैक्टीरिया स्यूडोमोनास, बैसिलस, एंटेरोबैक्टर और एक्टिनोबैक्टर आदि वर्ग के हैं जो पौध के लिए लाभकारी बहुविध विशेषताएं दर्शाते हैं। 'केरा प्रोबयो' टैल्क आधारित जैव संरोपक है जिसमें पौधा वृद्धि संवर्धन राइज़ोबैक्टीरिया-बैसिलस मेंगाथेरियम निहित होता है जो नारियल और सब्जी पौधों पर जैव लेपन के लिए उपयुक्त है।

माइक्रोराइज़ल फफूँद और जड़ों के बीच आरबस्कुलर माइक्रोराइज़ल द्वारा सहजीवी संबंध से पौध की जड़ प्रणाली का सतही क्षेत्र बढ़ता है जिससे पौध द्वारा अधिक पानी का अवशोषण और फोस्फरस(पी), नन्नजन(एन) और सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे पोषक तत्वों का अवशोषण बेहतर होता है।

उदा: मिट्टी आधारित एमएफ जैवसंरोपक 'केरम' (KERALAM) जिसमें क्लैरोइडियो ग्लोमुसेट्यूनिकेटम निहित होता है जो कि नारियल के मूल परिवेश की प्रमुख प्रजाति है, का विमोचन किया गया है और इसके प्रयोग से नारियल पौधों में पोषक तत्वों और जल अवशोषण क्षमता में सुधार होता है।

थाले की उर्वरता बढ़ाने के लिए संघटक के रूप में दलहन फसलों की खेती

लोबिया, छुर्मुई और सनई जैसी दलहन फसलों के साथ नन्नजन यौगिकी कारक बैक्टीरिया के सहजीवी सहयोग का भी पता लगाया जा रहा है ताकि नारियल बागों में नन्नजन की उपलब्धता बढ़ जाए। दलहनी फसलों के सकारात्मक प्रभाव का लाभ उठाने के लिए उर्वरकों की पहली खुराक का प्रयोग करने के बाद 100 ग्राम लोबिया के बीजों की बुआई अपेक्षित है। एक या दो पौधों में फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर थाले की मिट्टी में मिलाया जा सकता है। दलहन फसलों की खेती करते हुए थाला प्रबंधन करने से प्रति थाला 15-20 कि. ग्राम हरी खाद का उत्पादन होता है

और उन्हें मिट्टी में मिला देने से अन्य प्रमुख पोषक तत्वों के साथ साथ प्रति ताड़ 100-150 ग्राम नत्रजन भी प्राप्त हो जाता है। एक हेक्टर के नारियल बागान में पेड़ों के बीच की जगह दलहन फसलें उगाने से 15 से 20 टन ताजा जैवभार मिट्टी में मिलाया जा सकता है।

सिंचाई

नारियल के उत्पादन में अनिवार्य प्रमुख साधन है पानी की उपलब्धता। पानी ही पौधा पोषक तत्वों के अवशोषण का माध्यम है। प्रकाशसंश्लेषण सहित पौधे के भीतर की सभी कार्यिक क्रियाओं के लिए पानी अनिवार्य संघटक है। मृदा के घोल से ताड़ की जड़ों के ज़रिए वाष्पोत्सर्जन खिंचाव में पानी की गति लगातार ऊपर की ओर रहती है। पौधे के प्रकार्यों और उत्पादकता बनाए रखने के लिए जड़ क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध होना अनिवार्य है। हालांकि तटीय इलाकों के नारियल उत्पादक क्षेत्रों में अधिक मात्रा में बारिश होती है किंतु बारिश की अवधि मानसून के मौसम के दौरान चंद महीनों तक सीमित होती है। ताड़ को 6-7 महीनों तक पानी की कमी और सूखे की परिस्थितियों का सामना करना पड़ जाता है जो ताड़ की उत्पादकता पर विपरीत असर डालता है। तटीय इलाकों को छोड़कर दूसरे नारियल उत्पादक क्षेत्रों में साल भर नारियल की खेती पूरक सिंचाई के द्वारा ही की जा सकती है। जब होस पाइप से सिंचाई का पानी वितरित किया जाता है, प्रति पत्ते प्रति ताड़ 500 लीटर पानी देना आवश्यक होता है। यदि ड्रिप सिंचाई विधि का अनुसरण किया जा रहा हो तो सिंचाई इस बात को ध्यान में रखते हुए तय की जानी चाहिए कि वाष्पोत्सर्जन से पानी का जो नष्ट होता है उसकी भी प्रतिपूर्ति की जा सके।

नारियल ताड़ों की वृद्धि और उत्पादकता के लिए पौष्टिक तत्वों का मिश्रण

केरल के विभिन्न नारियल उत्पादक इलाकों में मिट्टी और पौधा पोषक तत्वों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम ने विविध प्रकार के मिश्रण तैयार किए हैं और इसके विमोचन का तरीका एवं नारियल पौधों द्वारा इसके अवशोषण पर प्रारंभिक एवं क्षेत्र अध्ययन चलाए हैं। विस्तृत परीक्षणों के आधार पर अवयस्क और वयस्क नारियल ताड़ों के लिए क्रमशः ‘कल्प पोषक’ और ‘कल्प वर्धनी’ नाम से पोषक तत्वों के दो मिश्रण विकसित किए गए। ‘कल्प पोषक’ में पोटेशियम, बोरोन, सल्फर, ज़िक, कोपर आदि पोषक तत्व और ‘कल्प वर्धनी’ में पोटेशियम, मैग्नीशियम, सल्फर, बोरोन और ज़िक आदि पोषक तत्व विभिन्न सांदर्भों में निहित हैं। रोपण के पहले वर्ष के दौरान प्रति ताड़ 40 ग्राम की दर पर और दूसरे तथा तीसरे वर्ष के दौरान प्रति ताड़ 100 ग्राम की दर पर ‘कल्प पोषक’ की सिफारिश की जाती है। ‘कल्प वर्धनी’ की मात्रा प्रति वर्ष प्रति ताड़ 500 ग्राम है जिसका प्रयोग दो भागों में किया जाना होगा। इन मिश्रणों का प्रयोग सामान्य रूप से अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों के प्रयोग के 10 दिनों बाद किया जाना होगा।

संक्षेप

नारियल बहुवर्षी रोपण फसल होने के नाते समुचित पोषक प्रबंधन रणनीतियाँ व्यवस्थित रूप में अपनाने से ताड़ से अधिक उपज सुनिश्चित की जा सकती है। यही नहीं ताड़ की अपेक्षाओं के आधार पर पौष्टिक तत्वों की पुनःपूर्ति करने से मिट्टी और ताड़ का स्वास्थ्य सुधर जाता है और तद्वारा ताड़ की उत्पादकता में टिकाऊपन आ जाता है। पौष्टिक प्रबंधन से सूक्ष्मजीवीय क्रियाएं बढ़ जाती हैं और मिट्टी की जैवविविधता को बढ़ावा मिल जाता है। ताड़ के अपशिष्टों के प्रयोग के ज़रिए पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व फिर से इस प्रणाली में पुनर्चक्रित किए जा सकते हैं जो टिकाऊ रूप में इस प्रणाली को जीवंत बनाए रखने के लिए अत्यंत अनिवार्य है। ये रणनीतियाँ उच्चतर पैदावार प्राप्त करने में सहायक हैं जिसके बलबूते किसानों की आमदनी में वृद्धि का जो परम लक्ष्य है वह साकार किया जा सकता है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी: नारियल का घुसपैठिया कीट

डा. अभिषेक शुक्ला

कीट विज्ञान विभाग, न.म.कृषि महाविद्यालय, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी-396450, गुजरात

रूगोस स्पाइरलिंग क्वार्ड फ्लाई या रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी(एल्ट्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेटस) को मूलतः गुम्बो-लिम्बो स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इस सफेद मक्खी को सर्वप्रथम गुम्बो-लिम्बो नामक पेड़ को ग्रसित करते हुए देखा गया था। यह हमारे देश में नारियल को ग्रसित करने वाला एक नया घुसपैठिया कीट है जिसके बारे में सर्वप्रथम वर्ष 2016 में केरल के पालककाट तथा तमिलनाडु प्राँत के पोल्लाची नामक स्थानों पर वर्णन किया गया। इसके बाद इस कीट की उपस्थिति की खबर अन्य स्थानों से भी प्राप्त हुई है। ये एक सर्वभक्षी नाशीकीट है जो कि 200 से अधिक पेड़-पौधों को ग्रसित करती है, मगर इसकी उपस्थिति दक्षिण भारत के नारियल उत्पादक राज्यों में धीमे धीमे देखी जा रही है।

पौष्टि पौधे

नींबु(सिट्रस प्रजाति), आम(मैंजीफेरा इंडिका), अमरुद(सीडियम गवाजवा), केला(मूसा प्रजाति), नारियल(कोकोस नूसिफेरा), जिमीकंद(कोलिकेसीया प्रजाति) आदि सभी इसके प्रमुख पौष्टि पौधे हैं, मगर ये कीट नारियल को

सर्वाधिक ग्रसित करते पाए गए हैं तथा अनेक प्रयोगों से भी यह स्पष्ट हुआ है कि नारियल इस कीट का प्रिय पौष्टि पौधा है।

जीवन चक्र

ये कीट हेमिएरा गण से संबद्ध है। इस कीट के अंडे दीर्घ वृत्ताकार तथा पीले रंग के होते हैं जिनकी लंबाई 0.3 मि.मी. होती है। ये अंडे पारदर्शी होते हैं तथा एक छोटे से वृत्त से जुड़े हुए होते हैं। अंडे एक-एक करके दिए जाते हैं तथा ये चारों तरफ से मोमीय पदार्थ से ढके हुए होते हैं। इन अंडों से निकले प्रथम अवस्था के निम्फ जिन्हें क्रोलर्स भी कहा जाता है, में क्रियाशील पैर होते हैं तथा इनमें विशिष्ट एंटीना भी होती है। इनकी यह अवस्था चलनशील होती है। इनकी अंतिम अपरिपक्व अवस्था आभासी घूपा(स्यूडो घूपा) है जो कि 1.0 मि.मी. लंबी होती है। वयस्क सफेद मक्खी दिखने में छोटे से पतंग के समान होती है। वयस्क सफेद मक्खी के पंख सफेद रंग के होते हैं और इनके अग्र पंखों पर गहरे धब्बे भी पाए जाते हैं। वयस्क सफेद मक्खी की आँखें भूरे रंग की होती हैं। इनके द्वारा उत्सर्जित मोमीय पदार्थ स्पायरल के समान (सर्पिलन) जमा दिखाई पड़ता है अतः यह स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के नाम से जाना जाता है।



सर्पिलन रूप में डाले गए अंडे



निम्फ



वयस्क रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी



एनकार्सिया गुआडेलूपा



कज्जली फूँद भक्षी भृंग लियोक्रिनस निलगिरियानस



प्रकोप के लक्षण

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से पत्तियाँ पीली पड़ कर झड़ने लगती हैं तथा शिखर से नीचे की ओर काला पड़कर सूखने(डाई-बैक) के समान लक्षण दिखाई देता है। ये कीट अपने शरीर से मधुरस (हनी ड्यू) का उत्सर्जन भी करती है जिसके कारण पत्तियों पर काले रंग की फूँदी उग जाती है, जो कि पत्तियों के प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में बाधा पैदा करती है जिसके कारण पौधे कमज़ार हो जाते हैं। इसके कारण पत्तियाँ कमज़ोर पड़ जाती हैं तथा समय के चलते सूख जाती हैं। कीट प्रकोप के कारण नारियल के छोटे पौधों की वृद्धि रुक जाती है उनका फलन-फूलन भी धीमा पड़ जाता है जिससे नारियल उत्पादक किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

प्रबंधन रणनीति

(1) नारियल की पत्तियों(पत्रकों) पर जमी काली फूँदी की परत को हटाने के लिए 1 प्रतिशत स्टार्च के घोल का छिड़काव करना चाहिए। इससे पत्तियों से काली फूँदी की परत हट जाती है तथा वे पुनः प्रकाशसंश्लेषण क्रिया में सक्रिय हो जाती हैं।

(2) नारियल के ताड़ के तने पर पीले चिपचिपे ट्रैप(फंदा) लगाने चाहिए, जिससे रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी की संपूर्ण गतिविधियों पर नज़र रखी जा सके तथा इनकी संख्या को कम किया जा सके। इन पीले चिपचिपे ट्रैप की संख्या को बढ़ा कर इस कीट की संख्या में कमी भी लायी जा सकती है।

(3) नारियल के बाग में परजीव्याभ एनकार्सिया प्रजाति का संरक्षण तथा संवर्धन करना चाहिए तथा एनकार्सिया



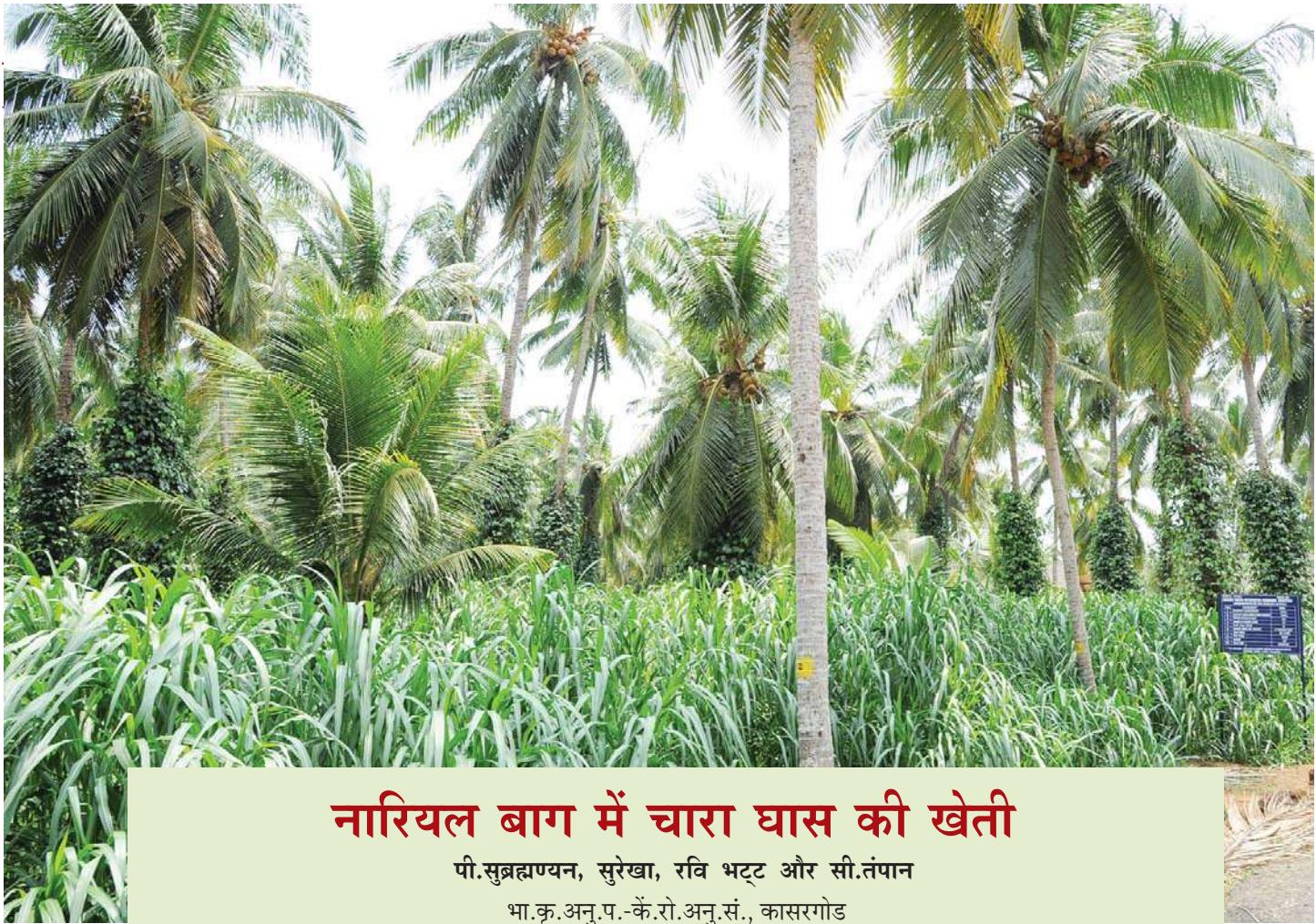
काली फूँद से प्रकोपित नारियल पड़



काली फूँद से प्रकोपित नारियल पड़

से परजीवीकृत प्यूपे को इस कीट से गंभीर रूप से प्रकोपित नारियल के बागों में पुनः छोड़ना चाहिए इससे रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी की संख्या पर प्राकृतिक तौर पर भी काबू की जा सकती है।

(4) जब रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का प्रकोप बहुत ही अधिक हो उन परिस्थितियों में 0.5 प्रतिशत नीम तेल का छिड़काव करना चाहिए।



नारियल बाग में चारा घास की खेती

पी.सुब्रह्मण्यन, सुरेखा, रवि भट्ट और सी.तंपन

भा.कृ.अनु.प.-कै.रो.अनु.सं., कासरगोड

नारियल भारत के आर्द्ध उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगायी जानेवाली लप्पु किसानों की फसल है। इसकी खेती अधिकांशतः एकल फसल के रूप में की जाती है और नारियल की खेती कई किसान परिवारों के लिए आजीविका का ज़रिया है। नारियल की खेती मुख्यतः लाल रेतीली दोमट, जलोढ़, मखरली और रेतीली मिट्टियों में की जाती है।

नारियल बाग में पेड़ों के बीच की दूरी (7.5 मी X 7.5 मी.) अधिक होने के कारण बीच की जगह अंतर खेती के लिए अत्यधिक उपयोगी है। यह सही साबित हुआ है कि नारियल पेड़ों के बीच की जगह में विभिन्न प्रकार की फसलों की सफलतापूर्वक खेती की जा सकती है। नारियल बाग की अंतर जगह में चारा घास की खेती करने से नारियल आधारित मिश्रित खेती प्रणाली की बहुत बड़ी गुंजाइश होगी। इससे बेहतर संसाधन प्रबंधन में मदद मिल जाएगी और अच्छी आमदनी भी सुनिश्चित हो जायेगी।

कृषि पद्धतियाँ

किस्में

हालांकि चारा घास की कई किस्मों की खेती की जा रही है, लेकिन संकर बाजरा नेपियर (CO_3 , $\text{CO}(\text{CN})_4$ और $\text{CO}(\text{BN})_5$) और गिनी घास अधिक लोकप्रिय किस्में हैं और इनकी खेती विधियाँ आसान होने तथा इनसे उच्च पैदावार प्राप्त होने के कारण किसानों द्वारा सफलतापूर्वक इनकी खेती की जाती है। ये चारा घास किस्में दुधारू पशुओं का पसंदीदा भोजन हैं। गिनी घास बकरी को खिलाने के लिए भी बहुत ही उपयुक्त है।

मृदा और जलवाय

चारा घास की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है। तथापि, इसके लिए अच्छी जलनिकास वाली लाल रेतीली मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। उचित नमी संरक्षण प्रणालियाँ अपनाकर ठोस मखरली और तटीय रेतीली मिट्टी में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।



नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में गिनी घास



अंतर फसल के रूप में संकर बाजरा नेपियर

यह उन क्षेत्रों में अच्छी तरह से पनपेगा जहाँ समान वितरित वर्षा प्राप्त होती है। चारा घास की अच्छी पैदावार के लिए गर्मियों के दौरान सिंचाई करने की आवश्यकता है।

पौध रोपण का मौसम

मानसून (जून-जुलाई) की शुरुआत के साथ चारा घास का रोपण किया जा सकता है। तथापि, सिंचित परिस्थितियों में इसका रोपण सालभर किया जा सकता है।

प्रमुख किस्में हैं संकर बाजरा नेपियर: (CO_3 , $\text{CO}(\text{CN})_4$ और $\text{CO}(\text{BN})_5$) और गिनी घास।

भूमि की तैयारी

खरपतवार निकालने और भूमि को समतल बनाने के लिए मानसून की शुरुआत के साथ दो बार अच्छी तरह से भूमि की जुताई करनी चाहिए। नारियल पेड़ से 2 मी. की दूरी पर जो थाला बनाया जाता है, उसे छोड़ते हुए पेड़ों की दो कतारों के बीच अनुशंसित दूरी में 30 से.मी. चौड़ाई, 30 से.मी. गहराई की कतारें बना लेनी चाहिए। तटीय रेतीली मिट्टी में मिट्टी की नमी को बनाए रखने के लिए नारियल छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके छिलकों की एक परत लगानी चाहिए। प्रति हे. 10 से 20 टन की दर पर वर्मीकम्पोस्ट/गोबर को मिट्टी के साथ मिश्रित करके कतारों में डालना चाहिए।

रोपण

रोपण के लिए नेपियर घास की अच्छी तरह से परिपक्व दो गांठों वाली कलमें चुननी चाहिए और कलमें

कतारों के मध्य में तिरछी स्थिति में इस प्रकार लगाएं कि इसकी एक गांठ मिट्टी के अंदर हो। गिनी घास के मामले में 15 से.मी लंबाई की जड़युक्त डाली का उपयोग किया जाना चाहिए। रोपण से पहले इसकी जड़ और अंकुर की छँटाई करें। यह उचित होता है कि हमेशा 10 प्रतिशत अधिक रोपण सामग्रियाँ खरीदी जाएं जिससे कि खाली जगह भरी जा सके। चारे की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए 15 दिनों के अंतराल में क्रमबद्ध तरीके से रोपण किया जाना चाहिए।

रोपण सामग्री की आवश्यकता

- नेपियर घास : 60 से.मी. x 60 से.मी. की दूरी पर एक हेक्टर में रोपण हेतु 27,000 दो गाँठवाली कलमें
- गिनी घास : 50 से.मी. x 50 से.मी. की दूरी पर एक हेक्टर में रोपण हेतु 30,000 जड़युक्त डालियाँ

उच्च पैदावार प्राप्त करने के लिए आधार खुराक के रूप में रोपण के समय अनुशंसित मात्रा में जैविक खाद और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। रोपण के समय 50 प्रतिरात यूरिया और रॉक फोस्फेट या सिंगल सूपर फोस्फेट की पूरी मात्रा का प्रयोग किया जाना चाहिए और रोपण के 30 दिनों बाद शेष 50 प्रतिशत यूरिया डालना चाहिए। तत्पश्चात प्रत्येक फसल कटाई के बाद 106 कि.ग्रा की दर पर यूरिया डालना चाहिए। दूसरे और आगमी वर्षों में

उर्वक प्रयोग

उर्वरक	रोपण के समय/मानसून पूर्व(कि.ग्रा./हे.)		हरेक कटाई के बाद(कि.ग्रा./हे.)
	संकर नेपियर घास	गिनी घास	
यूरिया	106	65	106
रॉक फॉस्फेट (अम्लीय मिट्टी)	162	162	-
म्यूरियेट ऑफ पोटेश	40	40	-
सिंगल सूपर फॉस्फेट (मिट्टी का पोएच 7 या उससे अधिक)	313	313	



गिनी घास का रोपण



कतारों में संकर बाजरा नेपियर घास कलमों का रोपण

मानसून पूर्व अवधि (मई-जून) के दौरान रॉक फोस्फेट और म्यूरियेट ऑफ पोटेश डालना चाहिए, जबकि यूरिया का प्रयोग प्रत्येक फसल कटाई के बाद मिट्टी की ऊपरी सतह पर किया जा सकता है।

खाली जगह भरना

बाग में पर्याप्त मात्रा में पौधों की संख्या सुनिश्चित करने के लिए रोपण के 30 दिनों बाद बीच की खाली जगह में रोपण करना चाहिए।

सिंचाई

गर्मी के महीनों के दौरान स्प्रिंक्लर सिंचाई प्रणाली के द्वारा तीन से चार दिनों में एक बार सिंचाई करनी चाहिए।

फसल की कटाई

बेहतर स्वाद सुनिश्चित करने के लिए सही अवस्था में घास की कटाई करना महत्वपूर्ण होती है। ये दोनों घास रोपण के बाद 80 दिनों में फसल कटाई के लिए तैयार हो जाएंगे। इसके बाद घास की कटाई 40-50 दिनों के बीच की जा सकती है। बेहतर पुनरुत्पादन के लिए ज़मीनी स्तर से 5-10 से.मी. छोड़कर घास की कटाई करनी चाहिए। एक



संकर बाजरा नेपियर

बार चारा घास लगाने के बाद चार सालों की अवधि के लिए इसका अनुरक्षण किया जा सकता है। किन्तु तीन सालों तक अनुरक्षण करना अधिक उचित होता है। जब नया रोपण किया जाता है तो उसी क्षेत्र में चारा घास का तत्काल रोपण करना उचित नहीं होता है जहाँ पर पहले इसकी खेती की गयी हो। इसके बदले वहाँ पर हरी खाद के पौधे उगाएं। उस क्षेत्र में एक मौसम के लिए हरी खाद की फसलों को उगाना उचित होता है और उसके बाद वहाँ पर चारा घास का नया रोपण किया जाना होगा।

एक हेक्टर के नारियल बाग में गिनी घास उगाने से किसान 6-8 गायों को या नेपियर घास से 10-12 गायों को पाल सकता है। चारा खेती के साथ-साथ पशुपालन भी करने से बेहतर आय सुनिश्चित होती है। इसके अलावा चारा और नारियल खेती प्रणाली में गोबर, मूत्र और अन्य अपशिष्टों का प्रभावी ढंग से पोषक तत्वों के स्रोत के रूप में पुनर्चक्रण किया जा सकता है।

पैदावार

	विभिन्न प्रकार की मिट्टी में चारा उपज (ट/हें)*	
चारा घास किस्में	लाल दूमट मिट्टी	रेतीली मिट्टी
संकर बाजरा नेपियर CO3	120	96
संकर कुम्बु नेपियर CO4	119	94
संकर बाजरा नेपियर CO5	126	100
गिनी घास	110**	80

* कासरगोड में रिकार्ड की गई

** प्रत्याशित उपज

अंतर फसल के रूप में चारा घास की खेती का नारियल की उपज पर प्रभाव

चारा घास की अंतर खेती करने से नारियल की पैदावार पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता है। एकीकृत पोषण प्रबंधन प्रणाली के साथ चारा घास की अंतर खेती करने से एकल फसल के रूप में नारियल की खेती की तुलना में पैदावार में 11 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। भा.कृ.अनु.प.-कै.रो.फ.अनु.स., कासरगोड में किए गए परीक्षणों से स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित हुआ है कि यदि चारा फसलों के लिए उचित पोषण प्रबंधन प्रणालियाँ अपनायी जाएं तो अंतर खेती से नारियल की उत्पादकता में वृद्धि हो जायेगी।

अनन्त्रास-नारियल किसानों के लिए लाभदायक फलदार अंतर फसल

जी.चंद्र मोहन रेड्डि, स्वीटी, नेहा शर्मा

बागवानी विभाग, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिंसार, हरियाणा

आमुख

रोपण फसलों में नारियल एक ऐसी प्रमुख फसल है जिसकी खेती बागानों में और वासभूमि प्रबंधन प्रणाली में की जाती है। विश्वभर के करोड़ों लोगों के लिए यह आजीविका सुरक्षा प्रदान करता है। बेहतर पोषण प्रदान करने में और रोज़गार एवं आय सुनित करने में नारियल की जो क्षमता होती है वह काफी मशहूर है। नारियल पेड़ ऐसे कई राज्यों की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डालता है जहाँ पर व्यापक तौर पर इसकी खेती की जाती है और देश में एक करोड़ से अधिक लोगों को आजीविका प्रदान करता है। भारत में इस

फसल पर केन्द्रित प्रसंस्करण और संबंधित गतिविधियाँ 30 लाख से अधिक लोगों के लिए रोज़गार के अवसर प्रदान करती हैं। नारियल भारत के तटीय क्षेत्रों की एक प्रमुख रोपण फसल है जिसकी खेती 21.8 लाख हेक्टर क्षेत्र में फैली हुई है और अधिकांशतः लघु और सीमांत जोतों में इसकी खेती की जाती है। बाज़ार भाव में हो रही उत्तर-चढ़ाव और जैविक-अजैविक दबाव के कारण नारियल किसानों को हमेशा आर्थिक खतरों का सामना करना पड़ जाता है अतः नारियल आधारित व्यवस्थित फसल एवं खेती प्रणाली अपनाने से ही लघु जोतों में नारियल को आर्थिक रूप से लाभदायक फसल बनायी जा सकती है।



फसल/खेती प्रणालियाँ

नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर मिश्रित और अंतर खेती की काफी अधिक गुँजाइश होती है और बागान में उपलब्ध क्षेत्र के लगभग 70-75 प्रतिशत का उपयोग फसल प्रणाली के लिए किया जा सकता है। केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के पथ प्रदर्शक प्रयासों के परिणामस्वरूप नारियल आधारित अंतर/मिश्रित, बहु मंजिली, बहु प्रजातीय फसल प्रणालियों के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित हुई हैं और किसानों द्वारा इन्हें व्यापक तौर पर अपनाया जा रहा है। बाग की मिट्टी और हवाई क्षेत्र का भरपूर फायदा उठाते हुए विविध स्तरों पर एकवर्षीय/द्विवर्षीय और बहुवर्षीय फसलों की खेती करने के साथ साथ कुकुट पालन और पशुपालन भी करके उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली और नारियल आधारित मिश्रित फसल प्रणाली अपनाने से सबसे अधिक लाभ प्राप्त करने में और मुख्य फसल के भाव में गिरावट हो जाने पर उससे जूझने में मदद मिल जाती है। सबसे अधिक आर्थिक आय प्राप्त करने के लिए ताड़ आधारित फसल प्रणाली में उच्च मूल्य के अनन्नास की खेती करने की सिफारिश की जाती है। खेती/फसल प्रणाली में जो निवेश किया जाता है उस में से हरेक रूपए के लिए 1.7 से 2.7 के बीच कुल आय प्राप्त होती है। अनुसंधान कार्यकर्ताओं ने पहले ही यह साबित किया जा चुका है कि नारियल बाग में अनन्नास की खेती करने से नारियल की उत्पादकता भी बढ़ जाती है। किंतु इसके लिए सहफसलों के लिए सिंचाई करना आवश्यक होती है। कई राज्यों में नारियल की खेती सिंचित परिस्थितियों में की जाती है। यह नारियल बागों में अंतर फसल के रूप में अनन्नास की खेती करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। नारियल आधारित फसल प्रणाली से पुनर्चक्रण करने योग्य जो जैवभार प्राप्त होता है वह प्रति हेक्टर 15-20 टन के बीच है। वर्मा कंपोस्ट के रूप में आसानी से इसका उपयोग किया जा सकता है जिसके फलस्वरूप इस प्रणाली में रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम की जा सकती है। यह मिट्टी का स्वास्थ्य सुधारने और उत्पादकता टिकाऊ बनाए रखने हेतु जैव खेती के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।

अनन्नास

अनन्नास(अनानास कोमोसुम(एल) मेर.) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के वाणिज्यिक तौर पर प्रमुख एक फलदार फसल है। अनन्नास भारत की एक प्रमुख वाणिज्यिक फसल भी है और इसकी खेती 90,000 हेक्टर क्षेत्र में होती है और वार्षिक उत्पादन 15.27 लाख टन और उत्पादकता प्रति हेक्टर 15.3 टन है (अज्ञात 2018)। इसके मज़ेदार स्वाद और महक की वजह से विश्वभर के लोगों के चहेता फलों में भी इसका स्थान है। अनन्नास विटामिन ए और बी का बेहतरीन स्रोत है और इसमें अपेक्षित अधिक मात्रा में विटामिन सी और कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम और आयरन जैसे खनिज भी निहित हैं। यह ब्रोमेलेन का स्रोत भी है जो कि एक पाचन एंजाइम है। अनन्नास एक मज़बूत पौधा है जिसके लिए बहुत कम मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है और इसलिए यह दक्षिण भारत के अधिकांश तटीय क्षेत्रों और अंतर्देशीय क्षेत्रों में खेती करने के लिए उपयुक्त है। भारत में अनन्नास का उत्पादन करने वाले प्रमुख राज्य हैं। असम, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, मेघालय, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, केरल और बिहार वर्तमान में भारत 15.3 लाख टन अनन्नास का उत्पादन करता है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 15.3 टन है। हालांकि तटीय राज्यों के नारियल क्षेत्रों में अनन्नास की खेती की गुँजाइश काफी अधिक होती है, किंतु इसकी वाणिज्यिक खेती कुछेक बागों में ही की जाती है। नारियल पेड़ों के बीच उपलब्ध जगह पर अनन्नास की उत्पादकता किसी की खेती करने से नारियल किसानों को अच्छा खासा लाभ प्राप्त होगा अन्यथा यह ज़मीन परती पड़ जाती है।



किस्में

क्यू, जायन्ट क्यू, शार्लट रोथ्सचाइल्ड, चंपका, मॉरिशस, रेड स्पैनिश, क्वीन, रिप्ले क्वीन, विक्टोरिया आदि अनन्नास की खेती के लिए उपयुक्त किस्में हैं।

नारियल के अधीन अनन्नास की खेती के लिए उन्नत खेती विधियाँ

भूमि की तैयारी

खेत की अच्छी तरह जुताई करके फसल योग्य बनाना चाहिए। रोपण के लिए उचित समय अप्रैल-मई या अगस्त से अक्टूबर तक है ताकि बारिश के मौसम के दौरान फसल की तुड़ाई करने से बच सके।

रोपण की विधि

प्रवर्धन सामग्री के रूप में सकर(पत्तों के बीच से निकलती शाखा) या स्लिप (फल के निचले भाग से निकली हुई शाखा) का प्रयोग किया जाता है। रोपण के लिए एक समान आकार के स्लिप का उपयोग किया जाता है जिसका वज्ञन 350 ग्राम हो। रोपण के लिए प्रायः सकर और स्लिप को

अधिक चुना जाता है क्योंकि मुकुट(फल के ऊपर बनने वाली शाखा) की अपेक्षा ये जल्दी फूलने लगते हैं। इसकी खेती एकल फसल के रूप में या मुख्य फसल के रूप में करने के लिए 90x60x30 सें. मी. आकार के गड्ढे खोदकर प्रति हेक्टर 43,500 पौधों का रोपण किया जा सकता है। गोवा में, ढलान वाले क्षेत्रों में काजू और अन्य जंगली पेड़ों की भागिक छाया में अंतर फसल के रूप में इसकी स्थानीय किस्म की खेती की जाती है और प्रति हेक्टर क्षेत्र में लगभग 20,000 पौधों का रोपण किया जाता है।

खाद एवं उर्वरक

अनन्नास उच्च मात्रा में नत्रजन और पोटेशियम की अपेक्षा वाली फसल है जो सतही क्षेत्र से ही पोषक तत्वों का

अवशोषण करता है। अनन्नास की खेती के लिए प्रति वर्ष/प्रति पौध 12, 4 और 12 ग्राम की दर पर क्रमशः नत्रजन, फोसफरस पेंटोक्साइड और पोटेशियम ऑक्साइड की खुराक देना उचित मानी जाती है। बारानी परिस्थितियों में उर्वरकों का प्रयोग नमीयुक्त समय पर याने मानसून मौसम के दौरान किया जाना चाहिए(सारणी 1)।

अंतर खेती क्रियाएं

इसकी खेती में पौधों पर मिट्टी चढ़ाना अत्यंत अनिवार्य कार्य होता है जो पौध की पकड़ मजबूत करती है। पेड़ी फसलों के मामले में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिट्टी की नमी बनाए रखने और खरपतवार की वृद्धि नियंत्रित रखने के लिए पलवार लगाना अनिवार्य होता है। खरपतवार नियंत्रण हेतु प्रति लीटर 4-5 मि.ली. की दर पर ग्लाइफोसेट या प्रति लीटर 2-4 मि.ली. की दर पर डायूरन का छिड़काव करना अनुशंसित है। प्रति पौध सकरों की संख्या बढ़ने के साथ साथ फल का वज्ञन बढ़ जाता है जबकि स्लिप की संख्या अधिक होने से फल पकने में देरी होती है। अतः जहाँ तक संभव हो सकर

सारणी 1. अनन्नास के लिए मिट्टी में प्रयोग हेतु उर्वरकों की अनुसूची						
रोपण के बाद का महीना	नत्रजन ग्राम/पौधा/वर्ष	यूरिया ग्राम/पौधा/वर्ष	फोसफरस पेंटोक्साइड ग्राम/पौधा/वर्ष	रॉक फोसफेट	पोटेशियम ऑक्साइड	म्यूरिएट ऑफ पोटेश
0	-	-	4	13.5	-	-
2	2	4.4	-	-	-	-
4	2	4.4	-	-	-	-
6	2	4.4	-	-	6	36.0
8	2	4.4	-	-	-	-
10	2	4.4	-	-	-	-
12	2	4.4	-	-	6	36.0
कुल	12	26.40	4	13.5	12	72.0

निकालने की प्रक्रिया देरी से की जानी चाहिए, जबकि रोपण हेतु अपेक्षित आकार का हो जाने पर जितना जल्दी हो सके स्लिप निकालने की अनुशंसा दी जाती है।

पादप वृद्धि नियामकों का प्रयोग करके फूल नियमन

आमतौर पर अनन्नास रोपण के 10-12 महीने बाद फूलता है और फूलने के 5-6 महीने बाद फल तुड़ाई के लिए

तैयार हो जाते हैं। रोपण के समय के अलावा, कुछ खास रासायनिकों या वृद्धि नियामकों का प्रयोग करके फूल जल्दी निकालने की विधि तुड़ाई के मौसम को प्रभावित करती है। रोपण और फूल जल्दी निकालने की योजना निम्नप्रकार से बनाई जा सकती है ताकि पूरे मौसम में याने अक्तूबर से मई तक के महीनों के दौरान क्रमबद्ध तरीके से तुड़ाई होती रहे और बाजार में इसकी उपलब्धता में कोई रुकावट न आए।

सारणी 2: क्रमबद्ध रूप में तुड़ाई हेतु फूल का नियमन

रोपण का महीना (पहला वर्ष)	दूसरे वर्ष में वृद्धि नियामकों के प्रयोग का महीना	फूल निकालने के लिए चुने गए महीने	तुड़ाई का महीना
अप्रैल	मार्च-अप्रैल	1-2	अक्तूबर-नवंबर
मई	अप्रैल-मई	1-2	नवंबर-दिसंबर
अगस्त	जुलाई-अगस्त	1-2	फरवरी-मार्च
सितंबर	अगस्त-सितंबर	1-2	मार्च-अप्रैल
अक्तूबर	सितंबर-अक्तूबर	1-2	अप्रैल-मई
नवंबर	अक्तूबर-नवंबर	1-2	मई-जून

हालांकि वृद्धि नियामकों या रासायनिकों का प्रयोग करके पौध की बढ़वार की किसी भी स्थिति में फूल जल्दी निकाला जा सकता है, किंतु समय से पहले जबरदस्ती फूल निकालने हेतु पौधों को प्रेरित करने से फलों का आकार कम हो जाता है। अतः, अनुकूलतम आकार के पौधों को (35-40 पूर्ण विकसित और सक्रिय पत्ते वाले) फूल निकालने के लिए प्रेरित करने से पेड़ी फसल पर बिना कोई बुरा असर पड़े बेहतर आकार के फल प्राप्त हो जाते हैं।

फलों की तुड़ाई और पैदावार

रोपण के 10-12 महीनों बाद अनन्नास के पौधे फूलने लगते हैं और रोपण के 15-18 महीनों बाद फल तैयार हो जाते हैं।

सारणी 3: मूल्यांकित अनन्नास किस्मों की पैदावार की संभावनाएं

किस्म	पैदावार	
	मुख्य फसल(टन/हें.)	पेड़ी फसल (टन/हें.)
जायन्ट क्यू	90-100	60-65
क्वीन	75-80	50-60
स्थानीय	50-60	40-45



नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में अनन्नास

अंतर फसल के रूप में अनन्नास से प्राक्कलित आय

एक हेक्टर के नारियल बाग में उगाई गई जायन्ट क्यू किस्म की मुख्य फसल से प्राक्कलित आय 49.27 टन से लगभग 3 से 4 लाख रुपए होगी(वर्ष 2016 के दौरान अनन्नास का औसतन थोक भाव प्रति कि.ग्रा. 8 रुपए; राष्ट्रीय बगवानी बोर्ड)। प्रथम और द्वितीय पेड़ी फसलों से आय प्रति हेक्टर 36.84 टन और 16.88 टन उपज से क्रमशः 2-3 लाख और एक लाख रुपए होगी। यह नारियल से प्राप्त नियमित आय के बिना किसान की अतिरिक्त आय है। अतिरिक्त उत्पादित पार्श्व सकरों और स्लिप से भी किसानों को आमदनी मिलती है। सकर की लागत प्रति सकर 2 से 4 रुपए के बीच होती है। पत्तों और फलों के मुकुट जैसे अनन्नास से प्राप्त जैव भार का उपयोग कंपोस्ट बनाने और पौष्टिक तत्वों के पुनर्चक्रण हेतु किया जा सकता है जिससे उर्वरकों पर जो खर्च होता है वह कम हो जाता है। बायोएथनोल का निष्कर्षण एल्गो और मछली अपशिष्टों जैसे स्रोतों से भी अधिक आसान और बेहतरीन तरीके से अनन्नास जैवभार सामग्री से किया जा सकता है।



नारियल बाग में मधुमक्खियाँ

डा.स्टीफन देवनेशन

डीन एवं प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) मधुमक्खी परागण अनुसंधान विभाग, केरल कृषि विश्वविद्यालय, वेल्लायणी

नारियल पेड़ पामेसिये परिवार के कोकोस न्यूसीफेरा वैज्ञानिक नाम से जाना जाता है जिसे कल्पवृक्ष भी कहा जाता है। इस पेड़ के सभी हिस्से मानवराशि के लिए फायदेमंद हैं। आहार, पेय, तेल, लकड़ी, तना आदि के साथ साथ सजावटी सामग्रियों के निर्माण में भी नारियल पेड़ के विविध भागों का उपयोग होता है। विश्व में कुल 120.80 लाख हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती होती है और इनमें से 20.97 लाख हेक्टर खेतीगत क्षेत्र भारत में है। औद्योगिक क्षेत्र में नारियल की अहमियत इतनी अधिक होती है कि इससे बनते विभिन्न उत्पादों के लिए बाजार में बड़ी माँग होती है।

नारियल की खेती में उर्वर मिट्टी, सूर्य के प्रकाश की उपलब्धता और सिंचाई सुविधाओं की जितनी अहमियत होती है फसल की वृद्धि में परागण की गुंजाइश भी उतनी ही अहम है। नारियल पेड़ में प्रजनन बीजफलों के ज़रिए होता है। अच्छी गुणवत्ता के बीजफल

प्राप्त करने के लिए परागण प्रक्रिया सही प्रकार से चलना अनिवार्य होता है। मादा फूलों के वर्तिकाग्र पर परागण पड़ने की प्रक्रिया को परागण कहता है। परागण दो प्रकार के होते हैं:

1. स्वपरागण-एक ही फूल के परागकण उसी फूल के वर्तिकाग्र पर पड़ने की प्रक्रिया को स्वपरागण कहा जाता है
2. परपरागण- दूसरे फूल के परागकण वर्तिकाग्र पर पड़े तो इसे परपरागण कहा जाता है।

नारियल पेड़ पर परपरागण प्रक्रिया से प्रजनन होता है। हवा और पतिंगों के ज़रिए परपरागण होता है। इसलिए यदि परागण प्रक्रिया में इन माध्यमों की अनुपस्थिति हो तो पैदावार कम हो जाती है। नारियल के पुष्टक्रम पर आने वाले कई प्रकार के पतिंगे होते हैं। केरल कृषि विश्वविद्यालय के वेल्लायणी में स्थित मधुमक्खी परागण अनुसंधान केंद्र में चलाए गए अनुसंधान से पता चला है

कि लगभग 52 प्रकार के पतिंगों की प्रजातियाँ नारियल पुष्पक्रम पर मँडराती हैं। चीटियाँ, ततैये, भृंग, मक्खियाँ, मधुमक्खियाँ आदि इस श्रेणी में आती हैं। इनमें से सर्वाधिक पाए जाने वाले पतिंगे मधुमक्खियाँ हैं।

केरल में आमतौर पर पाँच प्रकार की मधुमक्खियाँ पायी जाती हैं। अध्ययनों से साबित हुआ है कि भैंरों या पहाड़ी मधुमक्खी (एपिस डोरसेटा), छोटी मधुमक्खी (एपिस फ्लोरिया), यूरोपीय मधुमक्खी (एपिस मेलिफेरा), डामर मधुमक्खी (टेट्रागानुला इरीडीफेनिस) आदि सभी नारियल में परागण बढ़ाने और पैदावार में वृद्धि करने में सहायक हैं।

नारियल पेड़ और मधुमक्खियों के बीच अटूट रिश्ता है। मधुमक्खियों का मुख्य आहार फूलों का शहद और परागकण है। आहार की तलाश में निकलती मधुमक्खियाँ जब नर फूलों पर आती हैं तो अपने शरीर के रोमकूप में चिपकने वाले परागकण को गोल रूप में मधुमक्खी छत्ते के मधु कोष में इकट्ठा करती है।

प्रायः मधुमक्खियाँ सुबह या शाम के समय पुष्पक्रम पर आती हैं। सुबह 8 बजे से 12 बजे के बीच के समय ये पुष्पक्रम में सबसे अधिक पाए जाते हैं। शाम को 4 बजे से 5 बजे तक यह दोबारा पुष्पक्रम पर आ जाती हैं। अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि पश्चिम तटीय लंबा जैसे उच्च कद के नारियल पेड़ों पर 44 प्रकार की मधुमक्खियों का आगमन हुआ था और दूसरी ओर बौनी किस्मों पर 36.5 मधुमक्खी प्रजातियों ने चक्कर काटा। डामर मधुमक्खियों का आगमन सुबह 9 बजे से 11 बजे के बीच अधिक पाया गया।

एक स्वस्थ नारियल पेड़ पर औसतन 12 से 18 पुष्पक्रम निकलते हैं। नारियल पेड़ की खासियत है कि इसके एक ही पुष्पक्रम पर नर और मादा फूल अलग अलग से पाए जाते हैं।

हरेक पुष्पक्रम के दो चरण होते हैं याने नर फूलों का चरण और मादा फूलों का चरण। नर फूल

मादा फूलों पर मधुमक्खियाँ

परागकण का स्रोत होता है जो पहले पकने लगता है। यह अनुमान लगाया गया है कि नारियल पेड़ के एक पुष्पक्रम में 27.2 करोड़ परागकण होते हैं। ये 18 से 23 दिनों तक परागकणों का उत्पादन करते हैं। इसके बाद सारे नर फूल गिर जाते हैं। पाँच दिनों के बाद मादा फूलों का चरण शुरू हो जाता है। तीन से सात दिनों तक की अवधि के मादा फूलों के चरण में मादा फूलों से शहद जैसा मौजूदगी का एहसास होने पर इसे इकट्ठा करने के लिए मधुमक्खियाँ मादा फूलों पर आने लगती हैं और इनके शरीर के नमीयुक्त रोम पर चिपके परागकण मादा फूलों के वर्तिकाण पर गिर जाता है और परागण होता है। अध्ययनों से पाया गया है कि इस तरीके से प्राप्त होने वाले नारियल का आकार बड़ा और वज़न अधिक होता है और इनसे अधिक मात्रा में तेल भी प्राप्त हो जाता है। नारियल बाग में मधुमक्खियों की मौजूदगी से 30 से 50 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि पायी गयी है।

केरल कृषि विश्वविद्यालय के बालरामपुरम स्थित नारियल अनुसंधान केंद्र और केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड में चलाए गए अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि नारियल बाग में मधुमक्खियों की मौजूदगी से नारियल के उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है।

सेवानिवृत्ति

श्री आर.ज्ञानदेवन



श्री आर. ज्ञानदेवन, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड 2 जुलाई 2019 को बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने केरल कृषि विश्वविद्यालय से कृषि विस्तार में अपनी स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की और वर्ष 1985 में कृषि अधिकारी के पद पर अपनी सरकारी सेवा प्रारंभ की। बोर्ड में वर्ष 1988 के दौरान उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया। वे वर्ष 2000 से 2001 के दौरान कृषि सहकारिता कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान, तिरुवनंतपुरम में प्रतिनियुक्ति आधार पर संकाय सदस्य के रूप में कार्यरत रहे। उन्होंने वेजिटबिल एंड फ्रूट प्रमोशन काउंसिल केरल(वीएफपीसीके) में निदेशक के पद पर और काजू और कोको विकास निदेशालय, कोची में उप निदेशक(विपणन) के पद पर भी प्रतिनियुक्ति आधार पर कार्य किए हैं। उन्होंने इंडियन कोकनट जर्नल, इंडियन नालिकेरा जर्नल और इंदिया तेन्ने इदूष आदि बोर्ड के प्रकाशनों के संपादक भी रहे। वे बोर्ड के सतर्कता अधिकारी और शिकायत अधिकारी के रूप में भी कार्यरत रहे।



नारियल पेड़ के परागण में अत्यधिक सहायक मधुमक्खियों को मौनगृह स्थापित करके नारियल बाग में इन्हें पालना पैदावार बढ़ाने के लिए सहायक होता है। आहार की तलाश में नारियल पेड़ पर मधुमक्खियाँ आने से परागण की प्रक्रिया चलती रहती है जिससे नारियल के पुष्पक्रम पर अधिक मात्रा में बुताम बनने लगते हैं। जब परागण में सहायक इन पतिंगों की मौजूदगी कम हो जाती है तो परागण ठीक प्रकार से नहीं होता है और सही परागण के अभाव

श्री पी.एक्स. राफेल



श्री पी.एक्स. राफेल नारियल विकास बोर्ड में 31 वर्षों की सेवा करने के पश्चात् 31 अगस्त 2019 को बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए।

में मादा फूल बुतामों की अवस्था में ही नीचे गिर जाती है।

एक हेक्टर के नारियल बाग में परागण कार्य सुगम बनाने के लिए बाग में विविध स्थानों पर भारतीय मधुमक्खियों के 4-6 मौनगृह (समूह) या इटालियन मधुमक्खियों के 2-23 मौनगृह या 3-5 छोटी मधुमक्खियों के मौनगृह स्थापित किए जा सकते हैं।

मधुमक्खियों की बढ़वार की अवधि अगस्त से दिसंबर के महीने में होती है और इस अवधि के दौरान नारियल बाग में मधुमक्खियाँ पालने से इनकी संख्या अधिक मात्रा में बढ़ जाती है जो मौनगृह का विभाजन करने के लिए सहायक होता है।

किन्तु नारियल बाग में मधुमक्खियों के समूह पालते वक्त यह ध्यान दिया जाए कि मधुमक्खियों के लिए हानिकर किसी भी कीटनाशी का प्रयोग न करें। नारियल की जैविक खेती किए जाने वाले बाग मधुमक्खियों को पालने के लिए उपयुक्त होता है।



नारियल बागों में खेती प्रक्रियाएं

अक्तूबर

खाद प्रयोग

सिंचित परिस्थितियों में, यदि सितंबर के दौरान रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया हो तो अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग किया जा सकता है। जून के दौरान लगाए गए नारियल पौधों के लिए रासायनिक उर्वरकों का (सामान्य सिफारिश का दसवाँ भाग याने 100 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश और 200 ग्राम रॉक फोस्फेट) पहला प्रयोग



उर्वरक प्रयोग

किया जा सकता है। सिंचित परिस्थितियों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग चार भागों में किया जा सकता है। हमेशा यह अनुशंसा दी जाती है कि सामान्य सिफारिशों का अनुसरण करने के बजाय मिट्टी की जाँच करके इसके परिणामों के अनुसार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें। जहाँ भी बोरेन की कमी पायी जाती है थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें। मग्नीशियम की कमी के कारण जिन ताड़ों के पत्तों का रंग पीला दिखने लगा है, ऐसे ताड़ों के लिए दूसरे उर्वरकों के साथ साथ 0.5 कि.ग्रा मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

हरी खाद प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में सनई(क्रोटलेरिया जनसिया) या ठैंचा(सेसबानिया एकुलेटा) या लोबिया(विगना अनगुइकुलेटा) या जंगली नील(टेफ्रोसिया परपुरिया) जैसी हरी खाद फसलें उगायी जा सकती हैं। एकल फसल के रूप में नारियल की खेती किए जाने वाले बागों में पेड़ों के बीच की जगह में हरी खाद फसलों

की बीजदर निम्नप्रकार से अनुशंसित है। सनई-प्रति हेक्टर 20 कि.ग्रा., ढैंचा-प्रति हेक्टर 30 कि.ग्रा., लोबिया-प्रति हेक्टर 25 कि.ग्रा. और जंगली नील-प्रति हेक्टर 15 कि.ग्रा।

यदि अंतर फसलों की खेती की जा रही है तो 1.8 मीटर धेरे के नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाई जा सकती हैं। लोबिया और ढैंचा के लिए प्रति थाला बीज दर 100 ग्राम है जबकि अन्य हरी खाद फसलों के लिए प्रति थाला 75 ग्राम बीज बो सकते हैं।

खेती प्रक्रियाएं

यदि सितंबर में नहीं किया गया हो तो बागान को खरपतवार मुक्त रखने के लिए अंतर जगह की जुताई/खुदाई की जानी चाहिए। यह ध्यान रखा जाए कि जुताई करते समय नारियल पेड़ों को कोई घाव न लगें।

नर्सरी प्रबंधन

तमिलनाडु में उत्तर-पूर्व मानसून का लाभ अधिकांश प्राप्त होने वाले क्षेत्रों में बीजफल बो सकते हैं। नर्सरी की निराई गुडाई करें। पाँच महीने आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से निकाल दें। नारियल पत्तों से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। नारियल पौधों के लिए सिंचाई की जानी चाहिए।

पलवार लगाना

यदि सितंबर के दौरान पेड़ों के थालों में पलवार नहीं लगाया गया हो तो अब पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए



नारियल छिलके से पलवार

नारियल बाग में उपलब्ध गिरे सूखे नायिल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।

पौधा संरक्षण

एकीकृत कीट प्रबंधन

गैंडा भूंग

बीटल हुक का प्रयोग करके गैंडा भूंगों को निकालकर यांत्रिक विधि से इन पर नियंत्रण पा सकता है। भूंगों को निकालते समय ताड़ की वृद्धि बिंदु को कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। रोगरोधी उपाय के रूप में प्रति ताड़ सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों को 250 ग्राम की दर पर चूर्णित नीम खली/चालमुगरा(हाइड्रोकार्पस प्रजाति)/पॉगमिया समान मात्रा में महीन रेत मिलाकर भरें। सबसे भीतर के तीन पर्णकक्षों में 4 ग्राम की



गैंडा भूंग का प्रकोप

नैफ्थलीन गोलियाँ (प्रति ताड़ 12 ग्राम) हरेक पर्णकक्ष में रखकर इसे मिट्टी से ढकना चाहिए। क्लोरएन्ट्रोनिलिप्रोल ए.आई.0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वनस्पति खली(2 ग्राम) निहित छिद्रित सैशे रखें। गोबर/कंपोस्ट गड्ढों में भांट(क्लीरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम लिन.) नामक खरपतवार मिला दें। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(मेटाराइजियम एनिसोलिं) से उपचारित करें।

लाल ताड़ धुन

ताड़ों को घाव लगाने से बचें, क्योंकि यह भूंग को अंडा डालने के लिए आकर्षित कर सकता है। यदि कोई यांत्रिक क्षति लगी



वयस्क धुन



शिखर पर प्रकोप



शिखर का गिरना

हो तो इसे कोल तार से उपचारित करें। पत्तों को काटते समय पर्णवृत्त को तने से 120 सें.मी. की लंबाई में छोड़कर काटना चाहिए ताकि तने पर धुन का प्रवेश रोका जा सके। कीट प्रकोप की गंभीर स्थिति में ताड़ों को काटकर जलाने से तने पर बसे विविध अवस्था वाले कीटों का नाश किया जा सकता है। गैंड भूंग की रोकथाम हेतु पर्णकक्ष भरने के उपाय का जो सुझाव दिया जाता है इसे अपनाना अनिवार्य है क्योंकि यह कीट तने पर लाल ताड़ धुन के प्रवेश के लिए रास्ता बना देता है। यदि नुकसान शिखर पर लगा हो तो नुकसानग्रस्त ऊतकों को निकाल देना चाहिए और कीटनाशी घोल, इमिडाक्लोप्रिड (0.02 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली. की दर पर डाल दें। यदि धुन तने से प्रवेश करता है तो तने पर लगा छेद सीमेंट/कोल तार से बंद करें और बरमा की सहायता से सबसे ऊपर का छेद तिरछा बनाकर कीप से इस छेद में कीटनाशी घोल डाल दें।

एरियोफिड माइट

सबसे बाहरी परागित पाँच नारियल गुच्छों पर नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण दो प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में 200 मि.ली. नीम तेल, 50 ग्राम साबुन और 200 ग्राम लहसुन मिश्रित करके) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 1 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन निहित नीम दवा का छिड़काव करें या 800 लीटर पानी में पाम तेल (200 मि.ली.) और सल्फर (5 ग्राम) के घोल का छिड़काव करें। 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10,000 पीपीएम + 10 मि.ली. पानी जड़ों द्वारा देना भी प्रभावी है। खादों और उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के साथ साथ 5 कि.ग्रा. नीम

खली का प्रयोग भी अनुशंसित है।

कोरिड बग

परागित गुच्छों पर नीम तेल-साबुन घोल (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें। एक लीटर पानी में 5 मि.ली. नीम तेल और 8 ग्राम धुलाई का साबुन मिलाकर यह घोल तैयार किया जा सकता है।

रुग्गोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी

पत्तों पर रासायनिक कीटनाशी का छिड़काव नहीं करना चाहिए। कज्जली फैफूद की परत को निकालने के लिए पत्तों पर एक प्रतिशत कलफ घोल का प्रयोग करें। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, नीम तेल 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें और किसी भी कीटनाशी की अनुशंसा नहीं दी जाती है। वयस्क सफेद मक्खियों को फँसाने के लिए ताड़ के तने पर पीला चिपचिपा फँदा स्थापित करें। परजीवियों (एनकार्सिया गुआडेलूप) के प्रवर्धन को बढ़ावा दें और परजीवीकृत प्यूपे को सफेदमक्खी के प्रकोप की शुरुआत वाले स्थानों में पुनः छोड़ दें। बाग में ही कज्जली फैफूद भक्षी कीट लियोक्रिनस निलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करें।

एकीकृत रोग प्रबंधन

कली सड़न

कॉपल के रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह निकाल दें। सड़े हुए हिस्सों को हटाने और अच्छी तरह साफ करने के लिए यदि आवश्यक हो तो कॉपल के निकट के दो या तीन स्वस्थ पत्तों को भी काट दें। प्रकोपित ऊतकों को हटा



तना स्रावण रोग ग्रस्त ताड़

देने के बाद 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट लगाएं और घाव को पोलिथीन शीट से ढक दें ताकि बारिश का पानी अंदर न घुस जाए। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षित रूप से ढककर रखें। निकाले गए प्रकोपित ऊतकों को जलाकर या गहरे गड्ढे खोदकर मिट्टी में गाढ़ दें। आसपास के ताड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

तना स्रवण

पेड़ के तने के निकट कचरा न जलाएं। तने पर घाव लगने न दें। छेनी से रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह हटाकर घाव पर 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल (100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.) का लेप करें और 0.1 प्रतिशत घोल से प्रति पेड़ 25 लीटर की दर पर थालों को शराबोर करें। तने पर स्राव निकलने वाले भागों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम के टैल्क आधारित दवा के पेस्ट से लेप करें (25 लीटर पानी में 50 ग्राम ट्राइकोडेर्मा मिलाकर पेस्ट तैयार किया जा सकता है)। मिट्टी में प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर ट्राइकोडेर्मा

हर्जियानम से संपुष्ट नीम खली का प्रयोग करें और अनुशंसित सिंचाई/नमी संरक्षण विधियाँ अपनाएं।

पत्ता सड़न

कोंपल के सड़े हुए भाग और आसपास के 2-3 पत्तों को हटाएं और कोंपल के चारों ओर सबसे निचले भाग पर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली.हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी निहित फँकूदनाशी घोल या प्रति ताड़ 500 मि.ली. पानी में 50 ग्राम की दर पर स्यूडोमोनस फ्लूरसेंस या बैसिलस सब्टिलिस के टैल्क आधारित दवा का प्रयोग करें। गैंडा भृंग के प्रकोप की रोकथाम हेतु उपाय अपनाएं।

मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुझ्ञा

मृत और रोग की गंभीर स्थिति वाले ताड़ों को हटा दें और इन ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें। थाले के चारों ओर 2 मीटर की गहराई और एक मीटर की चौड़ाई में गड्ढे खोदकर रोगग्रस्त ताड़ों को स्वस्थ ताड़ों से अलग करें। प्रकोपित बागों में बाढ़ सिंचाई या जुताई न करें ताकि संरोप का फैलाव रोक सके। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. गोबर की खाद या हरे पत्ते का प्रयोग करें। प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नीम खली संपुष्ट ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम का प्रयोग करें और चार दिनों में एक बार ताड़ों की सिंचाई करें और थालों में पलेवा लगाएं। जहाँ भी संभव हो अंतर फसल के रूप में केले की खेती करें। प्रति ताड़ 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) जड़ों द्वारा दें या 40 लीटर घोल की दर पर 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल/1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से मिट्टी को शराबोर करें।

नवंबर

पौधों की सिंचाई

पौधों को ड्रिप या थाला सिंचाई विधि से पानी देना चाहिए। यदि ड्रिप सिंचाई अपनाई जा रही है तो प्रति दिन प्रति पौध औसतन 10 लीटर पानी देना चाहिए। थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियों के ज़रिए चार दिनों में एक बार 40 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।

वयस्क ताड़ों के लिए सिंचाई

उत्तर पूर्व मानसून बारिश मिलने वाले इलाकों को छोड़कर शेष इलाकों के नारियल बागों में सिंचाई शुरू की जा सकती है। उन क्षेत्रों के नारियल बागों में भी सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए जहाँ उत्तर पूर्व मानसून से पर्याप्त मात्रा



ड्रिप सिंचाई

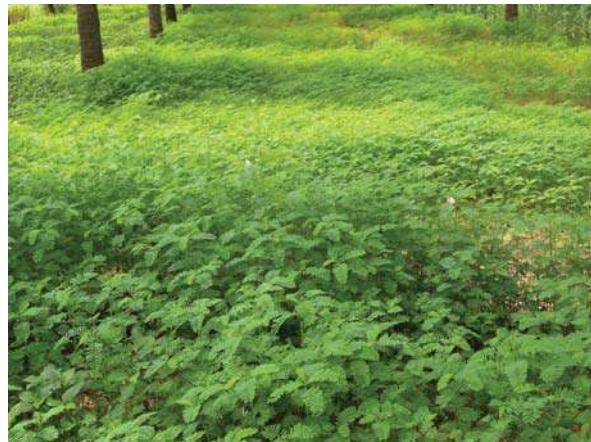
में बारिश प्राप्त नहीं होती है (यदि दस दिनों से अधिक बारिश नहीं मिल रही हो तो)।

यदि थाला सिंचाई विधि अपनायी गयी हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।

नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। पेड़ के तने से एक मीटर के घेरे में समान दूरी में 'x' x' आकार के चार छोटे गड्ढे खोदने चाहिए। गड्ढों को क्यर गूदे से भरना चाहिए। पोलिथीन पाइप की नली के ज़रिए इन गड्ढों की उप सतह पर ड्रिपर/माइक्रोट्यूब स्थापित किया जाना चाहिए। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग पाइंटों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार होनी चाहिए। ड्रिप सिंचाई प्रणाली से प्रति दिन प्रति ताड़ 30-45 लीटर पानी की व्यवस्था की जानी चाहिए।

जल निकासी की व्यवस्था

जिन इलाकों में उत्तर पूर्व मानसून प्राप्त होता है उन इलाकों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए। मिट्टी के प्रकार और भौम-जल स्तर के अनुसार समुचित आकार के, कम से कम 50 सें.मी. गहरी और चौड़ी जल निकासी नाली या तो हाथ से या यांत्रिक विधि से बनायी जा सकती है। ताड़ों के हरेक दो कतारों के लिए जल निकासी नाली का निर्माण करना होगा।



नारियल बाग में हरी स्वाद

खाद प्रयोग

नारियल पेड़ों के लिए ड्रिप फेर्टिगेशन शुरू किया जाए। यूरिया और म्यूरिएट ऑफ पोटेश जैसे जल में घुलनशील उर्वरक ड्रिप सिंचाई विधि के साथ दी जा सकती है। नारियल पेड़ों के लिए सामान्य सिफारिश के अनुसार ये उर्वरक(अनुशंसित मात्रा का 50 प्रतिशत याने प्रति वर्ष प्रति ताड़ के लिए 545 ग्राम यूरिया और 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश) मासिक फेर्टिगेशन कार्यक्रम के ज़रिए दो तुल्य भागों में दी जा सकती है। किंतु, रासायनिक उर्वरकों की मात्रा मिट्टी की जाँच के परिणामों और लक्षित उपज के आधार पर तय की जानी चाहिए।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है वहाँ थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग किया जाए।

मैग्नीशियम की कमी के कारण जिन नारियल पेड़ों के पत्ते पीले पड़ गए हो उनके थालों में 0.5 कि.ग्रा. मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

हरी खाद का प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले क्षेत्रों में हरी खाद के 50 प्रतिशत पौधों में फूल खिलने लगे तो इनकी जुताई करके नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर मिट्टी में मिलाया जा सकता है। इसी प्रकार, नारियल थालों में उगाए जाने वाले हरी खाद पौधों को भी उखाड़के मिट्टी में मिला देना चाहिए।

मातृ ताड़ों का चयन

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियाँ उत्पादित करने के लिए बीजफल एकत्रित करने हेतु मातृ ताड़ों का चयन करें।

लंबी किस्मों में, बीजफलों का एकत्रण उन ताड़ों से किया जाना चाहिए जिनकी आयु 20 वर्ष से अधिक हो, पैदावार बारानी और सिंचित परिस्थितियों में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 80 और 120 नारियल से अधिक और फलों का वज्ञन 600 ग्राम तथा खोपरे का वज्ञन 150 ग्राम या इससे अधिक हो। यही नहीं ताड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और ये रोगमुक्त हों। पेड़ पर चौड़े पर्णधार के साथ छोटा और मज्जबूत पर्णवृत्त होने चाहिए जो तने से मज्जबूती से जुड़ा हुआ हो। गुच्छे का डंठल छोटा, मोटा एवं मज्जबूत हो और नीचे की ओर लटकने या झुकने की प्रवृत्ति नहीं दर्शानी चाहिए। ऐसे ताड़ों को न चुनें जिस पर बंध्या फल लगता हो या अधिक संख्या में अपकव फल का गिराव हो। अधिक आयु के याने 60 वर्ष से अधिक आयु वाले ताड़ों को और खाद के गड्ढे जैसे अनुकूल परिस्थितियों में बढ़ने वाले ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। जिन ताड़ों पर एकांतर वर्षों में फल लगता हो, ऐसे ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। बौनी किस्मों में 12 साल या इससे अधिक आयु के तथा बारानी और सिंचित परिस्थिति में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 60 और 100 से अधिक फल देने वाले ताड़ों से बीजफल एकत्र किया जा सकता है। यही नहीं पेड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और फल का वज्ञन 400 ग्राम से अधिक होना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

- नर्सरी से खरपतवार निकाल देना चाहिए।
- पाँच महीने की आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से हटाना चाहिए।
- नारियल के पत्तों या सूखे घास से या हरी खाद फसल उगाकर जीवित पौधों से नर्सरी में पलवार लगाया जा सकता है।
- सिंचाई की व्यवस्था करें।



नारियल नर्सरी

कीटों और रोगों के खिलाफ आवश्यकता के अनुसार पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। यदि दीमक का प्रकोप पाया जाए तो नर्सरी में प्रति लीटर 2 मि.ली. की दर पर क्लोरपाइरिफोस से मिट्टी को शराबोर करना चाहिए। नारियल नर्सरी को सफेद मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए नारियल पत्तों पर पानी का छिड़काव किया जा सकता है।

पलवार लगाना

यदि पहले नहीं किया गया हो तो नारियल थालों में पलवार लगाया जा सकता है। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध सूखकर गिरे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है। बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों जैसे अपरंपरागत इलाकों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए थालों में मोटी परत में पलवार लगाएं। ऐसे क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव को बेअसर करने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है।



नारियल के सूखे पत्तों से पलवार

पौधा संरक्षण

वर्तमान में, अभूतपूर्व मौसमीय अनिश्चितताओं के कारण नारियल पर कीटों के नुकसान स्तर पर भारी परिवर्तन देखा गया है। प्रायद्वीपीय और पूर्वोत्तर भारत में आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी(एल्ट्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेटस मार्टिन), कर्नाटक में कृष्ण शीर्ष इल्ली(ओपिसिना एरेनोसेल्ला वाकर) और आँध्र प्रदेश और कर्नाटक में स्लग इल्ली(डार्ना नरेरिया मूर) का प्रकोप इस तथ्य के समर्थन के उत्तम दृष्टांत हैं। गैंडा भृंग(ओरिक्टस रिनोसेरस लिन.) और लाल ताड़ घुन(सिंकोफोरस फेरुजिनियस ओलिवर) सर्वव्यापी कीट है जो भारत के प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में मानसून और मानसून के पश्चात् प्रमुख रूप से पाया जाता है। उत्तर-पूर्व मानसून के दौरान घातक शोषक कीट कोरिड बग(पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस डिस्टंट) का प्रकोप पाया जाता है जिससे हम अनजान रहते हैं। कम से कम 2-3 गुच्छों पर इसका प्रकोप होता है जिससे सारा बुताम गिर जाते हैं और फलहीन गुच्छे रह जाते हैं। कली सड़न रोग, फलों का गिराव, पत्ता सड़न, तना स्वरण और मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुझ्हा जैसे रोगों से भी नारियल को नुकसान होता है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में नारियल पर कीटों और रोगों के प्रकोप पर नियंत्रण पाने के लिए व्यवस्थित रूप से अनुवॉक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है। रोगों और कीटों के प्रकोप की पहचान करने के लिए नारियल बागों में नियमित निरीक्षण और अनुवॉक्षण करना चाहिए और फसल को नुकसान होने से बचाने के लिए आवश्यकता आधारित और समुचित पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। नवंबर महीने के लिए कीटों और रोगों के प्रबंधन हेतु अनुशंसाएं नीचे दी गई हैं:

एकीकृत कीट प्रबंधन

यदि बाग में गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन, एरियोफिड माइट, कोरिड बग और रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी का प्रकोप पाया जाता है तो इसके लिए रोगरोधी उपाय अपनाएं जैसा कि अक्तूबर महीने में दिया गया है।

पत्ता भक्षी इल्ली

बुरी तरह से कीटग्रस्त और सूखे 2-3 बाहरी पत्तों को काटकर जला दें ताकि कीट का फैलाव रोका जा सके। संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों और जैविक खादों के प्रयोग के ज़रिए मिट्टी और प्रकापित ताड़ का स्वास्थ्य सुधार सकता है।

बाग में कीट का प्राकृतिक शत्रुजीव अधिक संख्या में मौजूद होने के कारण ओपिसिना एरेनोसेल्ला के प्रबंधन के लिए आम तौर पर रासायनिकों के प्रयोग की अनुशंसा नहीं दी जाती है।

बाग में इस कीट का कुदरती शत्रु जीव काफी अधिक संख्या में रहते हैं, इसलिए ओपिसीना एरेनोसेला के प्रबंधन के लिए सामान्यतया रासायनिकों की सिफारिश नहीं की जाती है। इस कीट के लार्वा और प्यूपा की दशा कई परभक्षियों का आहार है, इसलिए कीट का जैविक नियंत्रण प्रभावी और व्यवहार्य प्रणाली होता है। विविध अवस्था वाले परजीवियों का, जैसे लार्वा परजीवी गोनियोज़स निफेंटिडिस(बेथिलिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, ब्राकोन ब्रेविकोर्निस(ब्रैकोनिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, पूर्वप्यूपा परजीवी एलैसमस निफेंटिडिस(एलास्मिडे) 49/100 पूर्वप्यूपा की दर पर और प्यूपा परजीवी ब्रोकिमेरिया नोस्टोय(कैल्सिडिडे) 32/100 प्यूपे की दर पर, समुचित समय पर बाग में छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का टिकाऊ प्रबंधन मुम्किन पाया गया है। बाग में विविध अवस्था वाले कीटों पर नियंत्रण पाने के लिए परजीवियों को एक साथ छोड़ना भी अपेक्षित है। परजीवियों को छुड़ाने से पहले लार्वा मल पर उनका अनुकूलन बाग स्तर पर परजीविता बढ़ाने के लिए उचित है।

एकीकृत रोग प्रबंधन

यदि बाग में पेड़ कली सड़न, तना स्वरण, पत्ता सड़न और मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुझ्हा आदि रोगों का शिकार हुआ हो तो उचित नियंत्रणोपाय अपनाया जाए।

दिसंबर

बीजफलों का चयन

- गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु मातृ ताड़ के रूप में पहचाने गए पेड़ों से बीजफल इकट्ठा किया जा सकता है।

नर्सरी प्रबंधन

- जैसा कि पहले बताया गया है नर्सरी प्रबंधन हेतु उपाय अपनाएं।

पौधों के लिए सिंचाई

- ड्रिप या थाला विधि अपनाकर पौधों की सिंचाई करें। यदि ड्रिप विधि अपनायी जा रही हो तो प्रति दिन प्रति ताड़ औसतन 10 लीटर पानी दें। थाला सिंचाई जैसी अन्य विधियों में चार दिनों में एक बार 60 लीटर पानी देना काफी होता है।

वयस्क ताड़ों के लिए सिंचाई

- जहाँ भी नारियल थालों में सिंचाई का पानी नालों के ज़रिए आता है उन्हें साफ करें। नारियल बागों में नियमित सिंचाई शुरू की जा सकती है। यदि थाला सिंचाई विधि अपनायी गई हो तो चार दिनों में एक बार प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर सिंचाई करें।
- नारियल के लिए सिंचाई की आदर्श विधि ड्रिप सिंचाई है। ड्रिप सिंचाई विधि से प्रति दिन प्रति ताड़ 30-45 लीटर पानी की व्यवस्था करें।
- बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों जैसे अपरंपरागत क्षेत्रों में कम तापमान के प्रभाव को बेअसर करने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है। थालों में मोटी परत में पलवार लगाएं ताकि ऐसे क्षेत्रों में मिट्टी का तापमान नियमित रखा जा सके।

जल निकासी

- जल निकासी की समस्या वाले क्षेत्रों में नारियल बागों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित करें।

छाया प्रदान करना

- नवरोपित और अवयस्क नारियल पौधों को छाया प्रदान करें।



छोटे पौधे को छाया प्रदान करना

खाद प्रयोग

- सिंचित बागों में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग करें।
- जहाँ भी व्यवहार्य हो मासिक कार्यक्रम के अनुसार ड्रिप फेर्टिगेशन जारी रखें।
- हमेशा यह वांछनीय होता है कि मिट्टी की जाँच के परिणामों और लक्षित उपज के आधार पर रासायनिक उर्वरकों की मात्रा तय की जाए।
- यदि बोरोन और मैग्नीशियम की कमी हो तो इसके निवारणात्मक उपाय अपनाया जाए।
- पेड़ के थाले में प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. की दर पर गाद का प्रयोग करें।

पलवार लगाना और अंतरखेती प्रक्रियाएं

- यदि पहले नहीं किया गया हो तो थालों में पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध गिरे सूखे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।
- नारियल बागों में पहले जो टीले बनाए गए थे उन्हें गिरा दें।

अंतर फसल लगाना

- कृषि पारिस्थितिकीय परिस्थितियों के अनुसार नारियल बागों में बीच की जगहों में उपयुक्त अंतर फसलों की खेती की जा सकती है।

पौधा संरक्षण

नारियल के बागान सहित बहुवर्षीय फसलों की खेती प्रणाली में ठंड और सूखे के दौरान कीटों की मौजूदगी अधिक होती है। नमी के साथ साथ मानसून बारिश के दौरान कीट प्रकोप कम हो सकता है, जबकि सर्दी(दिसंबर) के आगमन के साथ कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है और रोगकारक रोगाणुओं की वृद्धि होती है और इसलिए कड़ी निगरानी और स्थायी रूप से तलाशी करने की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए ताकि समय पर कीटों और रोगों का पता लगाया जा सके और इसका प्रबंधन किया जा सके। पत्ता सड़न, तना स्वरण और मूल तना विगलन जैसे साधारण और सर्वकालिक रोगों का प्रकोप इस अवधि के दौरान भी होता है और इनके प्रकोप को झेलने तथा पेड़ को और नुकसान होने से बचाने के लिए ताड़ को पर्याप्त रूप से स्वरक्षण बनाया रखना होगा। गेंडा भृंग और लाल ताड़ घुन जैसे सर्वव्यापी कीट तथा स्लग इल्ली, रुग्गोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी, कोरिड बग और चूहे का प्रकोप भी इस अवधि के दौरान स्थानीय क्षेत्रों में हो सकता है। स्थायी रूप से अनुवीक्षण और रोगरोधी उपचार करने से कीटों और रोगों के प्रकोप से नुकसान कम किया जा सकता है और समुचित समय पर उपयुक्त स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ अपनायी जानी चाहिए।



गेंडा भृंग के प्रकोप से पत्तों को नुकसान



पुष्टक्रम को नुकसान



मेटाराइज्जियम एनिसोप्लि का प्रवर्धन मेटाराइज्जियम एरिसोप्लि ग्रस्त सूँडी

गेंडा भृंग (ऑरिक्टस रिनोसरस)

यह एक सर्वव्यापी कीट होने के कारण इसका प्रकोप सभी मौसमों में सर्वदा पाया जाता है और अवयस्क ताड़ों को इससे भारी नुकसान होता है। मई-जून के दौरान रोपित नारियल पौधों को इस अवधि के दौरान कीटों की घुस-पैठ से सुरक्षित रखना होगा। प्रायद्वीपीय भारत में ऑरिक्टस रिनोसरस नूडिवायरस का प्राकृतिक प्रकोप 0.5 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया है और इसलिए ऑरिक्टस रिनोसरस नूडिवायरस - घातक नारियल गेंडा भृंग-गुआम(सीआरबी-जी) का प्रकोप हमारे देश में उतनी बड़ी समस्या नहीं रही जिसका प्रकोप दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पेड़ों की बरबादी का प्रमुख कारण बन गया था और अंतर्राष्ट्रीय समूह के लिए यह काफी चिंताजनक मामला बन गया था।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली(नीम खली/चालमुग्रा खली/पोंगम खली(250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालिन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोजाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गेंडा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।
- खाद गड्ढों, जो कि भृंग के प्रजनन स्थान हैं, को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, मेटाराइज्जियम एनिसोप्लि(एक घन मीटर के एक गोबर खाद गड्ढे में अधिके चावल में प्रवर्धित 100 ग्राम मेटाराइज्जियम एनिसोप्लि का प्रयोग) से उपचार करें ताकि गेंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी(एपिजॉटिक) का प्रकोप करा सके। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीट प्रकोप प्रभावी रूप में कम

किया जा सकता है और यह कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका बन जाता है।

- प्रजनन गड्ढों में भाँट(क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्मेटम) नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।

लाल ताड़ घुन (सिंकोफरस फेरुजिनस)

गैंडा भुंग का प्रकोप कम होने के फलस्वरूप धातक कीट लाल ताड़ घुन के प्रकोप की संभावनाएं भी कम होती है, क्योंकि इस कीट को ताड़ पर जमा होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर धाव मौजूद होना आवश्यक है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर अधिकतर इसका प्रकोप होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का खतरनाक शत्रु होने के नाते इसके प्रबंधन हेतु शीघ्र कार्रवाई निर्धारित की जाती है।

प्रबंधन

- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई धाव लगने न देना अनिवार्य होता है और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर काटना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती हैं।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता(पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम होता है।

स्लग इल्ली (डार्ना नैरेरिया)

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में और कर्नाटक के तुम्कूर में स्लग इल्ली, डार्ना नैरेरिया का प्रकोप हो सकता है क्योंकि इस दौरान नदी के तटों में और खारे पानी वाले इलाकों में लगाए गए नारियल पेड़ों पर इस कीट की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है। कई सैकड़ों इल्लियाँ पेड़ पर एकत्र हो जाएंगी और ताड़ की पत्तियों की निचली सतह को अपना आहार बना लेगी जिससे चमकदार चित्तियाँ उत्पन्न होती हैं और इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप होने से सारी पत्तियाँ जली हुई सी प्रतीत होती है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं और मात्र मध्यशिरा रह जाता है। उच्च तापमान और ठंडा मौसम इसका प्रकोप बढ़ने के कारण हो सकते हैं।

प्रबंधन

- कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह से नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है।



स्लग इल्ली प्रकोपित बाग



नारियल पत्तियों पर वयस्क इल्लियाँ

- यूलोफिड लार्वा परजीवी पेंडियोबियस इम्ब्रुएस से जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर बैसिलस थुरिजिएनसिस का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी (एल्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेटस)

इस अवधि के दौरान आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी(एल्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेटस) का प्रकोप नए क्षेत्रों में और पहले प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में फिर से होने की संभावना है। ताड़ के पत्तों की निचली सतह पर सफेदमक्खी की कॉलनियों की मौजूदगी और पत्तों की ऊपरी सतह पर काले रंग के कज्जली फफूँद का होना इस कीट के प्रकोप के प्रमुख लक्षण हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पुराने पत्ते जल्दी पीला पड़कर सूख जाते हैं। सफेदमक्खी का प्रकोप पत्तों, पर्णवृत्तों और फलों पर भी होता है और केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजातियाँ सहित पौधों की एक लंबी श्रेणी पर भी इसका प्रकोप रिपोर्ट किया गया है।

प्रबंधन

- अवयस्क ताड़ों में, जेट की गति में पानी छिड़कने से सफेदमक्खी को निकाला जा सकता है और कीट के आहार लेने तथा प्रजनन की क्षमता कम हो जाती है।
- कीटनाशी का प्रयोग करतई नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कीट का पुनःप्रकोप हो सकता है और कुदरती एफिलिनिड परजीवी एनकार्सिया गुआडेलूपा का संपूर्ण विनाश होता है।
- पीले चिपचिपे फँदे लगाने से और एनकार्सिया गुआडेलूपा का प्रयोग करके जैविक नियंत्रण विधि अपनाने से कीट का प्रकोप 70 प्रतिशत तक कम और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ायी जा सकती है।
- बाग में कज्जली फफूँद भक्षी भूंग लियोक्रिनस निलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से ताड़ के पत्तों पर जमे सारे कज्जली फफूँदों को खा जाता है और पत्ते साफ हो जाने से ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता फिर से बढ़ जाती है।
- समय पर कीट के प्रकोप का पता लगाने के लिए ताड़ का

बारीकी से अनुवीक्षण और व्यवस्थित छानबीन करना अनिवार्य होता है ताकि कीट पर नियंत्रण पाने के लिए सही विधियाँ अपनायी जा सके और दुगुनी आय अर्जित करने के लिए फसल का नुकसान कम किया जा सके।

पत्ता सड़न रोग (कोलेटोट्रिकम ग्लोडियोस्पारिओविड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम)

यह जड़मुझी रोगग्रस्त ताड़ों पर अक्सर पाया जाने वाला रोग है जो सबसे बाहरी कॉपल और निकटस्थ पत्तों पर ऊतक क्षय के रूप में प्रकट होता है। मानसून के बाद दिसंबर महीने के दौरान मुख्यतः यह रोग पाया जाता है। रोगग्रस्त पत्तों का ऊतकक्षय होता है और यह ताड़ से बिना अलग हुए वहाँ पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे घाव के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एकसाथ मिल जाता है और सड़न अत्यधिक व्यापक होकर ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। यह रोग दक्षिण केरल के जड़मुझी रोगग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

प्रबंधन

- आवश्यकता आधारित छंटाई और प्रकोपित कॉपल तथा निकटस्थ सबसे बाहरी पत्तों को नष्ट करना होगा।
- प्रकोपित कॉपल वाले क्षेत्र पर 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज़ोल 2 मि.ली. का प्रयोग करें।

तना स्वाण(थिलावियोप्सिस(सेराटोसिस्टिस) पैराडोक्सा)

यह केरल के अम्लीय मिट्टियों में अधिकांशतः सीमित रोग है और इस अवधि के दौरान इसका प्रकोप अधिक होता है। तने पर लाल-भूरे रंग के चिपचिपे तरल पदार्थ रिसने लगता है जो सूख जाने पर काले रंग का हो जाता है। प्रारंभिक स्थिति में लंबवत् दरार के साथ रिसने वाले छोटे धब्बे के रूप में यह प्रकट होता है, जो बाद में एकसाथ मिलकर बहुत बड़ा घाव बन जाता है। इसके निचले भाग के ऊतक बेरंग हो जाते हैं और बाद में ये सड़ जाते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में पत्तों का बाहरी छल्ला पीला हो जाता है और यह सूखकर समय से पूर्व गिर जाता है जिससे ताड़ के संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। डायोकैलेंड्रा और क्साइलिबोरस जैसे स्कोलिटिड भूंगों के प्रकोप से तना और भी कमज़ोर हो जाता है।



पत्ता सड़न रोगग्रस्त छोटा ताड़



मूल तना विगलन रोगग्रस्त ताड़



ब्रैकेट फूँद

प्रबंधन

- कचरा एवं ताड़ के अन्य अपशिष्ट तने के निकट नहीं जलाएं ताकि तना/जड़ पर धाव लगने से बचाया जा सके।
- पर्याप्त सिंचाइ और मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन तरीका अपनाना चाहिए।
- तने के रिसने वाले घावों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम टैल्क के पेस्ट का प्रयोग भी तना स्वरूप रोग का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है।

मूल तना विगलन रोग(गैनोडेर्मा वर्ग)

यह एक विनाशकारी रोग है जो नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में पाया जाता है और उच्च पीएच वाली मिट्टी में और नम दबाव परिस्थिति में अत्यधिक गंभीर रूप में प्रकट होता है। रोग प्रकोप की प्रारंभिक स्थिति में रोगाणु जड़ तंत्र पर वार करता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होता है। तमिलनाडु के तंजावुर, ओँश्र प्रदेश में पूर्वी गोदावरी जिले के कुछ इलाकों और कर्नाटक के अरसिकरे में यह गंभीर रूप में पाया जाता है। पत्तों का बाहरी छल्ला सबसे पहले पीले रंगे के और फिर धीरे धीरे भूरे रंगे के हो जाते हैं और बाद में तने से जुड़े भाग से नीचे की ओर झुक जाता है जो नीचे की तरफ लंबवत् रूप में लटककर तने के शीर्ष पर लहंगे के समान प्रकट होता है। समय के साथ रोग का प्रकोप बढ़ जाने से तने का शीर्ष शंकु आकार का हो जाता है और धड़ क्षेत्र पर रिसाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। तने के मूलभाग पर लाल भूरे रंग का धाव प्रकट होता है, जिससे गाढ़े चिपचिपे पदार्थ रिसने लगता

है। ये भूरे धब्बे ज़मीनी स्तर से एक मीटर की ऊँचाई तक फैल जाते हैं और कभी कभी तने से छाल निकलते हुए भी पाया गया है। कभी-कभार प्रकोपित तने पर रोगाणु के फलन काय(बेसिडियोकार्प) का विकास होता है।

प्रबंधन

- तने के निकट कचरा और ताड़ का अपशिष्ट न जलाएं ताकि तना/जड़ को धाव लगने से बचाया जा सके।
- मृत ताड़ और गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को काटकर निकालें तथा रोगग्रस्त ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें ताकि रोग संरोपों को हटाया जा सके।
- रोगप्रकोपित ताड़ों के चारों ओर (तने के निचले भाग से 1.2 मीटर की दूरी में) गड्ढे खोदकर (60 सें.मी. गहरा और 30 सें.मी. चौड़ा) आसपास के स्वस्थ ताड़ों से अलग रखें।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ छह महीने के अंतराल में ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम(सीपीटीडी 28) टैल्क दवा(50 ग्राम) से संपुष्ट नीम खली(5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम हो जाती है।
- 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल जड़ों द्वारा देना (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) और 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल या 1 प्रतिशत बोर्ड मिश्रण के 40 लीटर से नारियल थालों में मिट्टी को शराबोर करना अनुशंसित है।

(तंपन सी., सुब्रमण्यन पी, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड और जोसफ राजकुमार, के.रो.फ.अनु.सं. प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम द्वारा तैयार किया गया है)



नारियल किसानों की खुशहाली के लिए नाविबो की पहल वाकई¹ सराहनीय हैं: श्री नरेंद्र सिंह तोमर

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने भारत में नारियल क्षेत्र के एकीकृत विकास हेतु विविध गतिविधियों के कार्यान्वयन में नाविबो द्वारा जो मुख्य भूमिका निभायी जा रही है, उसकी सराहना की। उन्होंने बताया कि इस राज्य के किसान कितनी गंभीर हालातों से गुज़र रहे हैं इससे भारत सरकार अच्छी तरह अवगत है। उन्होंने राज्य सरकार से आह्वान किया कि क्षतिग्रस्त किसानों को और अधिक सहायता देने में नाविबो और कृषि मंत्रालय को सक्षम बनाने हेतु उचित कार्यविधियों का अनुसरण करें। माननीय मंत्री जी 21वें विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में नारियल विकास बोर्ड द्वारा नारियल-परिवार की खुशहाली के लिए विषय पर केआईआईटी कैंपस, भुबनेश्वर में आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए सभा को संबोधित कर रहे थे।

माननीय मंत्री जी ने देश के कृषि क्षेत्र में नारियल खेती की अहमियत पर विशेष रूप से ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि देश के एक करोड़ से अधिक किसान नारियल खेती में लगे हुए हैं जो कि विश्व की कुल नारियल खेती का 33

भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दुगुनी बनाने की जो संकल्पना की है, उसे हासिल करने के लिए प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण पर ज़ोर देना अत्यंत अनिवार्य है।

प्रतिशत हिस्सा बनता है। सकल घरेलू उद्योग में और अधिक योगदान देने हेतु देश में कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। इसे हासिल करने के लिए नारियल की खेती पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

केन्द्र ने देश भर में 10,000 किसान उत्पादक संगठनों के गठन का निर्णय लिया है। उन्होंने ओडिशा के किसानों से आह्वान किया कि नारियल की खेती, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन हेतु नाविबो द्वारा जो सहायता प्रदान की जा रही है उसका फायदा उठाने के लिए अधिकाधिक किसान समूहों का गठन करें। राज्य में चक्रवाती तूफान से नुकसान ग्रस्त क्षेत्रों में पुनरोपन हेतु गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन

करना समय की माँग है। उन्होंने ओडिशा की परिस्थितियों के लिए अनुकूल गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन हेतु भरपूर सहयोग देने के लिए सभी से अनुरोध किया।

यह बताते हुए कि नाविबो किसानों के कौशल विकास हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, माननीय मंत्री जी ने सूचित किया कि पूरे देश में केन्द्र के समर्थन से अब तक 484 नारियल आधारित उद्योग स्थापित किए गए हैं। भारत सरकार की संकल्पना है कि वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी बनायी जाए। सरकार यह उम्मीद कर रही है कि देश में अधिकाधिक शिक्षित किसान स्टार्ट-अप के साथ आगे आएंगे।

सरकार नारियल खेती के विकास, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन के लिए कटिबद्ध है। नारियल विकास बोर्ड इनके कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका निभा रहा है। नाविबो की वित्तीय सहायता से देश में लगभग 484 इकाइयाँ पहले से कार्य कर रही हैं और उम्मीद है कि वर्ष 2022 तक इनकी संख्या दुगुनी हो जाएगी। मूल्यवर्धन में नारियल की जो संभावनाएं हैं वे असीम हैं और नारियल से उत्पादों की एक लंबी श्रेणी तैयार की जा सकती है। नारियल विकास बोर्ड कोशल विकास कार्यक्रम चलाने में सराहनीय भूमिका निभा रही है और इन कार्यक्रमों से इस क्षेत्र में रोज़गार की काफी अधिक संभावनाएं सृजित हो रही हैं। उन्होंने देश के नारियल नक्शे में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए ओडिशा राज्य की प्रशंसा की और से हर संभव सहयोग और सहायता का वाद भी किया।





डा. अरुण कुमार साहू, माननीय कृषि एवं किसान सशक्तिकरण मंत्री, ओडिशा सरकार ने अपने भाषण में भारत में नारियल खेती के परिदृश्य का, विशेषतया ओडिशा का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने कहा कि गत कुछ सालों से नारियल किसानों को प्राकृतिक आपदाओं का लगातार सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने किसानों को जो भारी नुकसान हुआ है इसका मुआवजा करने के लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु विशेष ध्यान देने पर ज़ोर दिया। इन प्राकृतिक आपदाओं के कारण तकरीबन चार लाख पौधे नुकसानग्रस्त हुए हैं। उन्होंने किसान समूह से आह्वान किया कि वे अपने पेड़ों को फसल बीमा के अंतर्गत परिरक्षा प्रदान करना सुनिश्चित करें। उन्होंने आगे विविध नारियल आधारित उत्पादों, विशेषतया नारियल पानी, नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल आदि के स्वास्थ्य लाभों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने नाविबो की विविध योजनाएं ओडिशा राज्य में कार्यान्वित करने का अनुरोध किया।

श्री संजय अग्रवाल भा.प्र.से., सचिव(कृषि), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने भाषण में सभा को अवगत कराया कि नाविबो पहली बार देशभर से इतनी बड़ी तादाद में किसानों के प्रतिनिधित्व के साथ विश्व नारियल दिवस समारोह नाविबो पहली बार आयोजित कर रहा है। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड के तत्वावधान में नारियल उत्पादक समिति, नारियल उत्पादक फेडरेशन और नारियल उत्पादक कंपनी के रूप में किसानों के समूहीकरण की प्रशंसा की। उन्होंने ओडिशा के किसानों से आह्वान किया कि वे

और अधिक किसान समूहों का गठन करें। उन्होंने बताया कि किसान क्रेडिट कार्ड जारी करने में लगने वाली सभी आकस्मिक शुल्क हटा दिया गया है। उन्होंने आगे सूचित किया कि चक्रवात से प्रभावित इलाकों में पुनरोपन करने हेतु गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन करना समय की माँग है और अनुरोध किया कि ओडिशा की जलवायु परिस्थितियों के लिए अनुकूल गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन हेतु सभी अपना सहयोग दें।

श्री सुशांत कुमार राउत, माननीय विधायक, उत्तर भुबनेश्वर, डा.सौरभ गर्ग भा.प्र.से., प्रधान सचिव, कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग, ओडिशा सरकार और श्री बी.प्रधान भा.प्र.से., अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार ने सम्माननीय अतिथिगण के रूप में सभा को संबोधित किया।

श्रीमती उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने अपने स्वागत भाषण में नारियल जो कि एक चमत्कारी फल है, की संभावनाओं के बारे में बात की। नारियल की उत्पादकता में भारत विश्व का अग्रणी देश है और करीब 1.2 करोड़ परिवार अपनी आजीविका चलाने के लिए नारियल पर निर्भर हैं। उनकी राय में नारियल की तुलना हम अपने बेटे या बेटी या किसी परिवारिक सदस्य के साथ कर सकते हैं, नारियल मानवराशि के लिए कुदरत का वरदान है। उन्होंने नारियल के विविध स्वास्थ्य पहलुओं पर बात की और लारिक अम्ल जो कि केवल माँ के दूध और नारियल तेल में पाया जाता है, के

उपचारात्मक खूबियों के बारे में सभा को अवगत कराया। डा. विश्वनाथ राठ, उपाध्यक्ष, नाविबो ने सभा को धन्यवाद अदा किया।

समारोह की शुरुआत से पहले माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जी ने केआईआईटी विश्वविद्यालय के परिसर में आयोजित नारियल उत्पादों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। माननीय मंत्री जी ने इस अवसर पर अंग्रेजी, हिंदी और ओरिया में विविध प्रकाशनों का लोकार्पण भी किया। समारोह में देशभर से हजारों किसानों ने भाग लिया जो कि अब तक की सर्वाधिक किसान सहभागिता थी।

तकनीकी सत्र में डा.अनिता करुण, कार्यकारी निदेशक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, डा.एस.सी.साहू, प्रोफेसर, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, डा.अमित घोष, सहायक प्रोफेसर, अखिल भारतीय आर्योजना संस्थान, भुबनेश्वर और श्री श्रीकुमार पोतुवाल, उप निदेशक, नाविबो ने नारियल संबंधी विविध विषयों पर सत्र संभाले। विविध राज्यों से किसान प्रतिनिधियों ने इस अवसर पर अपने अनुभव बाँटे।

नारियल विकास बोर्ड के साथ साथ सर्वश्री मारिको लिमिटेड, सर्वश्री के.एल.एफ. निर्मल इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, सर्वश्री प्योर ट्रोपिक, सर्वश्री शक्ति कोको प्रोडक्ट्स, सर्वश्री सौख्या एंटरप्राइसेस, सर्वश्री मधुरा एग्रो प्रोसेस प्राइवेट लिमिटेड, सर्वश्री दिनेश फुड्स, सर्वश्री योगिक फुड्स, सर्वश्री कोवै एग्रो फुड्स, सर्वश्री प्रान्शु कोको, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, पादप किस्म और किसान अधिकार संरक्षण प्राधिकरण जैसे कृषि मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत संगठन और बागवानी निदेशालय, ओडिशा सरकार ने कार्यक्रम के सिलसिले में

आयोजित प्रदर्शनी में अपने उत्पादें और सेवाएं प्रदर्शित किए।

एशिया और पैसफिक क्षेत्र के सभी नारियल उत्पादक देश हर वर्ष 2 सितंबर को विश्व नारियल दिवस के रूप में मनाते हैं। इंटर्नेशनल कोकनट कम्यूनिटी(आईसीसी) जो कि यूएनईएससीएपी के दायरे के अंतर्गत स्थापित एक अंतरशासकीय संगठन है, के स्थापना दिवस को सदस्य देशों के बीच विश्व नारियल दिवस के रूप में मनाया जाता है। नारियल दिवस मनाने का लक्ष्य नारियल के प्रति जागरूकता सृजित करना और इसकी अहमियत बढ़ाना तथा इस फसल के प्रति राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ध्यान केन्द्रित करने में मदद करना है। भारत में, हर वर्ष विश्व नारियल दिवस नारियल विकास बोर्ड के तत्वावधान में मनाया जाता है।

ओडिशा में, गत 10 वर्षों के दौरान नारियल विकास बोर्ड के ज़रिए केन्द्र सरकार ने नारियल के अधीन लगभग 2400 हेक्टर क्षेत्र के विस्तारण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की और बोर्ड के समर्थन से राज्य सरकारी फार्मों में 7.5 लाख से अधिक नारियल पौधों का उत्पादन किया गया। एकीकृत खेती कार्यक्रम के अंतर्गत तकरीबन 3700 हेक्टर क्षेत्र के लिए 18.90 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता प्रदान की गई। गत 10 वर्षों के दौरान बोर्ड विविध विकासात्मक योजनाओं के अंतर्गत ओडिशा राज्य को 23.93 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता प्रदान की। इन के साथ साथ नारियल विकास बोर्ड पुनरोपन एवं पुनरुज्जीवन कार्यक्रम के ज़रिए राज्य में फानी चक्रवाती तूफान से क्षतिग्रस्त हुए नारियल किसानों को 29.659 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता प्रदान की।

‘भारतीय नारियल पत्रिका’ के वार्षिक चंदे का नवीनीकरण

यदि आप ने भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया है तो कृपया नवीनीकरण हेतु 40 रु. का मनीऑर्डर या अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड के नाम बना रेखांकित डिमांड ड्राफ्ट नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोच्ची - 682 011.



सरकार नारियल किसानों के हित सुरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध है:

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री के भाषण का मुख्यांश

भारत कृषि प्रधान देश है, लेकिन आज भी हमारे देश के किसानों की हालात ठीक नहीं है। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं, और हमारा लक्ष्य वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करना को हम हासिल कर लेंगे।

आज हमारे किसान खेती में आधुनिक प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं, किसानों के परिश्रम, हमारे कृषि वैज्ञानिकों के अनुसंधान और सरकार के सहयोग के कारण ही आज हम खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर देश बन गए हैं।

नारियल का क्षेत्र भी खेती के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है। देश में लगभग 1 करोड़ से अधिक किसान नारियल की खेती से जुड़ा है, 20 लाख हेक्टर से अधिक क्षेत्र में हम नारियल की खेती कर रहे हैं। पूरी दुनिया में नारियल के कुल खेतीगत क्षेत्र का 33 प्रतिशत हमारे देश में हैं और हम नारियल के क्षेत्र में दुनिया का अग्रणी देश हैं। नारियल विकास बोर्ड कदम से कदम मिलकर नारियल की खेती में सहयोग करता रहता है। भारत सरकार और राज्य सरकार की प्रतिबद्धता है कि यह क्षेत्र और सशक्त हो।

कौशल विकास की दृष्टि से भी इस क्षेत्र में काम हो रहा है, ग्रामीण क्षेत्र के नौजवानों को नारियल की पैदावार और विपणन से संबंधित प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है।

आज देशभर में 484 इकाइयाँ इस क्षेत्र में काम कर रही हैं और हमें 2022 तक इन्हें बढ़ाकर दोगुना करना है। भारत सरकार इस क्षेत्र की हर संभव मदद करने को तैयार है।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा था कि हमें हिंदुस्तान को 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाना है, लक्ष्य

बड़ा ज़रूर है परंतु यदि आदमी ठान ले तो दूरी कितनी भी हो, लेकिन असंभव कुछ नहीं होता। यदि देश को 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाना है तो हमें कृषक की माली हालात को सुधारना होगा। इसलिए कृषि का क्षेत्र कृषक का हित और गाँव का विकास, यह भारत सरकार की प्राथमिकता पर हैं और हम इसके लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

आज भारत सरकार द्वारा किसानों को लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन भाव मिल रहा है। अब समय आ गया है जब हमें उत्पादन केंद्रित विचार को बदलकर, किसान की आय केंद्रित विचार पर बल देना होगा।

प्रधान मंत्री किसान योजना के अंतर्गत आय सहायता के रूप में 6000 रुपए प्रत्येक किसान को मिल रहा है, पहले इसमें लघु और सीमांत किसान आते थे, लेकिन प्रधान मंत्री जी ने इसका विस्तार किया और अब देश के सभी किसानों को इसका लाभ मिल रहा है। ऑडिशा के भी लगभग 30 लाख किसानों को इसका लाभ मिल रहा है।

मोदी जी ने किसानों की सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से प्रधान मंत्री मानधन योजना प्रारंभ की। इसमें 18 से 40 वर्ष तक के किसान सम्मिलित हो सकते हैं। 18 वर्ष की आयु में इस योजना में शामिल होने पर 55 रुपए प्रति माह जमा करना होगा, जिसमें इतनी ही राशि भारत सरकार जमा करेंगी। यदि किसान की आयु 40 वर्ष है, तो उसे 200 रुपए प्रति माह जमा करना होगा, सरकार के द्वारा भी 200 रुपए जमा कराए जाएंगे। 60 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर इस योजना के अंतर्गत किसान को प्रति माह 3000 रुपए पेंशन दी जाएगी।

नाविबो ने देशभर में विश्व नारियल दिवस मनाया

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने तेनी में नारियल-परिवार की खुशहाली के लिए विषय पर विश्व नारियल दिवस मनाया। तिरु.ओ.पी.रवीन्द्र कुमार, माननीय सांसद ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और डा.टी.अरुमुगम, डीन एचसी एवं आरआई, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, पेरियकुलम ने समारोह



नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने स्वागत भाषण दिया और सभा का धन्यवाद अदा किया।

तदुपरांत संपन्न तकनीकी सत्र में डा.पी.जानसिरानी, प्रोफसर और अध्यक्ष, एचसी एवं आरआई, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, पेरियकुलम ने नारियल की खेती विधि के बारे में बात की और इसके बाद डा.आर.चित्रा, सहायक



की अध्यक्षता की। माननीय सांसद ने अपने उद्घाटन भाषण में नारियल किसानों से आह्वान किया कि नारियल से अधिकतम आय प्राप्त करने के लिए नारियल के उत्पादन और मूल्य वर्धन पर अधिक ध्यान केन्द्रित करें। उन्होंने किसानों को आश्वासन दिया कि नीरा उत्पादन को बढ़ावा देने और नीरा आधारित मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे कि नीरा शक्कर, गुड़, फेय आदि का उत्पादन करने के लिए तेनी में एक नीरा प्रसंस्करण इकाई स्थापित की जाएगी। श्रीमती टी.बाला सुधाहरि, निदेशक,

डा.एम.कण्णन, सहायक प्रोफसर, एचसी एवं आरआई, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, पेरियकुलम ने नारियल के एकीकृत कीट प्रबंधन पर बात की। डा.एस.प्रभु, सहायक प्रोफसर, एचसी एवं आरआई, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, पेरियकुलम ने नारियल के एकीकृत कीट प्रबंधन पर और श्रीमती टी बाला सुधाहरि, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने नारियल के मूल्यवर्धन और नारियल के विपणन की अहमियत पर बात की।

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, मोतिहारी के सहयोग से राज्य स्तरीय विश्व नारियल दिवस 2019 कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, मोतिहारी के प्रांगण में 2 सितंबर 2019 को आयोजित किया। इस कार्यक्रम का विषय नारियल-परिवार की खुशहाली के लिए था। श्री राधा मोहन सिंह, माननीय सांसद, मोतिहारी एवं भूतपूर्व केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार ने परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम

का शुभारंभ किया। इस मौके पर श्री प्रमोद कुमार, माननीय कला एवं संस्कृति मंत्री, बिहार सरकार, श्री सचिन्द्र प्रसाद सिंह, माननीय विधायक, कल्याणपुर, श्री श्यामबाबू यादव, माननीय विधायक, पिपराकोठी, श्री कमलेश्वर सिंह, उपाध्यक्ष, जिला परिषद, मोतिहारी, श्री संजीव कुमार सिंह, सदस्य, नारियल विकास बोर्ड, कोची, श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, श्री लाल बाबू प्रसाद, अध्यक्ष, किसान मोर्चा, मोतिहारी, डा.श्रीकान्त, सहायक जिला



उद्यान अधिकारी, मोतीहारी, डा. अरविंद कुमार सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डा. मनीष कुमार, प्रक्षेत्र प्रबंधक, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, डा. ए. रायजादा, प्रधान वैज्ञानिक (वानिकी), महात्मा गांधी एकीकृत खेती अनुसंधान संस्थान, पिपराकोठी, मोतीहारी, श्री आर.एन.दास, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी, नाविबो, प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, सिंहेश्वर, मधेपुरा, श्री रवीन्द्र कुमार, विकास अधिकारी, श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी (संविदा), नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। तत्पश्चात श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा माननीय सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया गया।

श्री राधा मोहन सिंह जी, माननीय सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में कहा कि नारियल विकास बोर्ड की स्थापना वर्ष 1981 में की गई थी। इसका मुख्यालय कोची में है। नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना का कार्यालय वर्ष 1985-86 में शुरू कर दिया था। इसके नए भवन की आधार शिला 12 जनवरी 2017 एवं लोकार्पण 27 जनवरी,

2018 को किया गया। उन्होंने कहा कि नारियल उत्पादक देशों में एशियन एंड पैसेफिक कोकोनट कम्प्यूनिटी (एपीसीसी) के गठन दिवस की यादगार में प्रत्येक वर्ष 2 सितंबर को विश्व नारियल दिवस मनाया जाता है। साथ ही यह बताया कि कल्पवृक्ष नारियल का पेड़ मानव के स्वस्थ एवं समृद्ध जीवन के लिए प्रकृति का अमूल वरदान है। नारियल हमारी संस्कृति, परंपरा, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों, खान-पान आदि का अभिन्न अंग है। विश्व में नारियल उत्पादन एवं उत्पादकता में भारत अग्रणी देश है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत नारियल के समन्वित विकास के कई योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं और इन योजनाओं से पूरे देश के नारियल किसानों को नारियल की वैज्ञानिक खेती, उत्पादों के प्रसंस्करण, विपणन और निर्यात में बढ़ावा मिल रहा है।

बिहार राज्य नारियल की खेती के गैर पारंपरिक क्षेत्रों में आता है और राज्य में नारियल क्षेत्र के विस्तार को बोर्ड विशेष ध्यान दे रहा है। इसी क्रम में नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी के प्रांगण में 26.09.2018 को 10000 नारियल फल नर्सरी की स्थापना की गई थी, जिसमें लगभग 70 प्रतिशत अंकरण



हुआ है। इनमें से 5000 नारियल पौधों का मुफ्त वितरण किसानों को किया जाएगा। इसका शुभारंभ आज इस राज्य स्तरीय नारियल विश्व दिवस के उपलक्ष्य में आए हुए किसानों के बीच किया गया। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

सभा को संबोधित करते हुए श्री प्रमोद कुमार जी, माननीय कला एवं संस्कृति मंत्री, बिहार सरकार ने किसान बंधुओं को अधिक से अधिक नारियल का पौधा लगाने के लिए आव्वान किया। श्री सचिन्द्र प्रसाद सिंह, माननीय विधायक, कल्याणपुर एवं श्री श्यामबाबू यादव, माननीय विधायक, पिपरा ने कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए नारियल विकास बोर्ड द्वारा इस राज्य स्तरीय विश्व नारियल दिवस का आयोजन उनके क्षेत्र में आयोजित करने पर आभार प्रकट किया और साथ ही किसानों से नारियल विकास बोर्ड द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उठाने का आग्रह किया।

श्री संजीव कुमार सिंह, सदस्य, नारियल विकास बोर्ड ने अपने संबोधन में कहा कि उनके द्वारा आधा एकड़ में नारियल की खेती के साथ-साथ मिश्रित खेती जैसे कि अमरुद, केला, पपीता, सब्जियों का उत्पादन कर प्रति वर्ष दो लाख तक की आमदनी की जा रही है ऐसा करके किसान भाई अपनी कर्माई को बढ़ा सकते हैं। साथ ही बताया कि नारियल का पौधा 7 से 8 वर्ष में फल देना शुरू हो जाता है और 80 वर्षों तक फल देता है।

श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने अपने स्वागत संबोधन में बताया कि नारियल विकास बोर्ड के द्वारा विश्व नारियल दिवस के राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम भुबनेश्वर(ओडिशा) में किया जा रहा है। बिहार राज्य में राज्य स्तरीय विश्व नारियल विद्स का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी के प्रांगण में किया जा रहा है और इस बार विश्व नारियल दिवस का विषय है नारियल - परिवार की खुशहाली के लिए।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि नारियल पानी एक ताजा पेय माना जाता है। नारियल पानी की सबसे खास बात यह है कि यह पूरी तरह से शुद्ध होता है, यह मिलावट से परे है। नारियल पानी सेहत के लिहाज से बहुत अच्छा माना जाता है। यह बहुत सारी स्वास्थ्य समस्याओं में राहत पहुंचाता है। नारियल

पानी निर्जलीकरण के लिए एक बहुत आसान उपचार है। इसमें मौजूद इलेक्ट्रोलाइट्स और मिनरल्स शरीर में जाकर निर्जलीकरण की स्थिति को ठीक कर देते हैं। इसके अलावा दस्त की स्थिति में भी नारियल पानी शरीर को आवश्यक पोषण देता है। नियमित रूप से नारियल पानी पीने से हार्ट अटैक के जोखिम कम हो जाता है। साथ ही इसमें मौजूद उच्च मात्रा में पोटाशियम आपके ब्लड प्रेशर को भी नियंत्रित रखता है। नारियल पानी में काफी मात्रा में मैग्नीशियम और पोटाशियम होता है, इस वजह से यह उन लोगों के लिए भी अच्छा है जिनकी किडनी में पथरी होती है। सबसे अच्छी बात यह है कि यह किडनी की पथरी के मरीजों के लिए एक सस्ता उपचार का काम करता है। नारियल पानी शुद्ध होता है और यह सभी प्रकार के रोगाणुओं से मुक्त होता है, यह एसिडिटी, सीने में जलन और कब्ज जैसी अनेक समस्याओं में राहत पहुंचाता है। साथ ही इसके जाने-अनजाने अनेक फायदे हैं। इसलिए हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने जीवन में नारियल के उत्पादों का अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के बाद संपन्न तकनीकी सत्र में श्री आर.एन. दास, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, सिंहेश्वर, मधेपुरा ने बिहार राज्य में नारियल विकास बोर्ड द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही नारियल की खेती के साथ-साथ इसमें लगाने वाले कीट एवं रोग तथा उनके रोकथाम के बारे में जानकारी दी।

डा. श्रीकान्त, सहायक निदेशक, उद्यान, मोतिहारी ने बताया कि किसान नारियल की खेती के साथ-साथ अंतर फसल जैसे केला, पपीता, नींबू, अमरुद, ओल, हल्दी, अदरक इत्यादि उगाकर अपनी आमदनी को बढ़ा सकते हैं, क्योंकि नारियल के पेड़ पर वर्ष भर फल लगाते रहते हैं जोकि किसानों के लिए पूरे वर्ष कर्माई का साधन बना रहता है।

इस मौके पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें नारियल से बने उत्पाद एवं उपोत्पाद जैसे नारियल बुरादा, नारियल चटनी, नारियल आचार, नारियल चिप्स, नारियल शहद, नारियल सिरका, नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल,

विर्जिन नारियल कैपसूल, नारियल झाड़ू, नारियल रस्सी, नारियल चौकलेट, नारियल बिस्कुट, नारियल साबून, नारियल सुगर, नारियल झगड़ी, नारियल पानी, नारियल नीरा इत्यादि प्रदर्शित किए गए। साथ ही नारियल एवं नारियल के उत्पादों की महत्ता को प्रदर्शन करने के उद्देश्य से बैनर एवं पोस्टर प्रदर्शित किए गए। इस कार्यक्रम में लगभग 500 से अधिक किसानों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया।।

क्षेत्रीय कार्यालय, असम

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, असम ने बागवानी अनुसंधान केन्द्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची के सहयोग से बागवानी अनुसंधान केन्द्र, काहिकुची, गुवाहाटी में 2 सितंबर 2019 को विश्व नारियल दिवस मनाया।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के बतौर सभा को संबोधित करते हुए श्री जयंतमल बरुआ, अध्यक्ष, असम पर्यटन विकास निगम ने कहा कि नारियल एक ऐसा संभावी उत्पाद है जो असम के ग्रामीण क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति को सशक्त बना सकता है और सभी हितधारकों से अनुरोध किया कि राज्य के नारियल क्षेत्र को पुनरुज्जीवित करने का प्रयास करें। असम कृषि विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलपति डा.अशोक भट्टाचार्य ने कहा कि नारियल क्षेत्र के विकास हेतु वैज्ञानिक और रणीनीतिपरक रूपरेखा तैयार करना समय की माँग है। श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड ने सरकार की विभिन्न नारियल आधारित योजनाओं और कार्यक्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया और किसानों से अनुरोध किया कि वे इनका लाभ उठाएं।

डा.प्रणब महन्ता, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण निदेशक, असम सरकार ने इस अवसर पर बात करते हुए राज्य में नारियल की उत्पादकता में सुधार लाने के लिए नारियल किस्मों का चयन करने और सिंचाई सुविधाओं की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। पहले डा.शरत सैकिया, मुख्य वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान केन्द्र, काहिकुची ने अपने स्वागत भाषण में किसानों की आय बढ़ाने में नारियल की सामाजिक-आर्थिक भूमिका पर और नारियल के मूल्य वर्धन

राज्य स्तरीय विश्व नारियल दिवस 2019 का मंच संचालन श्री लाल बाबू प्रसाद, अध्यक्ष, किसान मोर्चा, मोतिहारी ने किया। कार्यक्रम का समापन अपराह्न 4.00 बजे डा.ए.रायजादा, प्रधान वैज्ञानिक (वानिकी), महात्मा गांधी एकीकृत खेती अनुसंधान संस्थान, पिपराकोठी, मोतिहारी के द्वारा कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।



की हाल के रुख पर ज़ोर दिया। डा.जे.सी.नाथ, प्रभारी वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, काहिकुची ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

इस दिवस की यादगार में बागवानी अनुसंधान केन्द्र के कैंपस में नारियल पौधों का औपचारिक रोपण भी किया गया। कार्यक्रम के सिलसिले में नारियल आधारित प्रौद्योगिकियों के प्रशिक्षण सह क्षेत्र निर्दर्शन और किसान-वैज्ञानिक भेंट भी आयोजित की गई। नारियल के गुच्छों और नारियल उत्पादों पर एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। कामरूप जिले के विविध नारियल उत्पादक समितियों के किसानों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

राज्य केन्द्र, आँध्र प्रदेश

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केन्द्र, आँध्र प्रदेश ने बागवानी विभाग, आँध्र प्रदेश सरकार, डा.वाई.एस.आर. बागवानी विश्वविद्यालय और सर्वश्री महिमा सीपीसी के सहयोग से सखिनेरीतिपल्लि मंडल, ईस्ट गोदावरी जिला में विश्व नारियल दिवस 2019 मनाया।

श्रीमती चिंता अनुराधा गारु, माननीय सांसद, अमलापुरम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री ओगुरी तंडोनराजु गारु, अध्यक्ष, महिमा सीपीसी लिमिटेड, मोरी ने समारोह की अध्यक्षता की और श्री आर.वी.एस.के. रेड्डि, अनुसंधान निदेशक, डा.वाई.एस.आर. बागवानी विश्वविद्यालय कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि रहे। श्री पी.मल्लिकार्जुन



राव, सहायक निदेशक, बागवानी, अमलापुरम, ईस्ट गोदावरी, डा.जी.भगवान, प्रधान वैज्ञानिक(बागवानी एवं अध्यक्ष) और डा.एन.बी.वी.चलपति राव, वरिष्ठ वैज्ञानिक(कीटविज्ञान), बागवानी अनुसंधान केन्द्र, अंबाजीपेटा और सभी नारियल उत्पादक कंपनियों के अध्यक्षों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

श्रीमती चिंता अनुराधा गारु, माननीय सांसद, अमलापुरम ने अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य विषय पर और उसकी



अहमियत पर बात की। श्री एम.के.सिंह, सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म और उप निदेशक प्रभारी, राज्य केन्द्र, विजयवाड़ा, नारियल विकास बोर्ड ने सभा का स्वागत किया। इसके पश्चात एक तकनीकी सत्र संपन्न हुआ जिसमें अंतर फसल प्रणाली, मूल्य वर्धन और विपणन पर सत्र चलाए गए। कार्यक्रम के सिलसिले में भारतीय कोब्बारी पत्रिका का विशेषांक भी निकाला गया और श्रीमती चिंता अनुराधा गारु, माननीय सांसद, अमलापुरम ने प्रकाशन का लोकार्पण किया।

विविध किसान उत्पादक संगठनों का प्रतिनिधित्व करते हुए 200 से अधिक किसान, बागवानी विभाग के वरिष्ठ पदधारी और डा.वाई.एस.आर.बागवानी विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भी बैठक में भाग लिया। श्री ओ.तंडनराजु, अध्यक्ष, सर्वश्री महिमा सीपीसी, मोरी ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

राज्य केन्द्र, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह

नाविबो राज्य केन्द्र, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह ने पोर्ट ब्लेयर में विश्व नारियल दिवस मनाया। श्री कृष्ण कुमार भाप्रसे, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, जिला परिषद और सचिव ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और सुश्री अंजली सेहरावत भाप्रसे, सचिव, कृषि ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री कृष्ण कुमार भाप्रसे ने अपने उद्घाटन भाषण में विश्व नारियल दिवस की अहमियत पर बात की और सुश्री अंजली सेहरावत





भाप्रसे ने किसानों और उद्यमियों को अधिकतम आय प्राप्त करने हेतु नारियल के मूल्यवर्धन की अवश्यकता पर बात की। तकनीकी सत्र में श्री शशिकुमार सी., विकास अधिकारी, नाविबो ने नाविबो योजनाओं के बारे में और नारियल के मूल्यवर्धन के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। कयर बोर्ड, नाबार्ड और सीएआरआई के प्रतिनिधियों ने भी इस अवसर पर सभा को संबोधित किया।

भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कासरगोड, कृषि विकास एवं किसान कल्याण विभाग और नारियल विकास बोर्ड के सहयोग



से नारियल-परिवार की खुशहाली के लिए विषय पर विश्व नारियल दिवस मनाया।

श्री ए.ए.जलील, अध्यक्ष, मोग्राल-पुतुर ग्राम पंचायत ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री जलील ने नारियल की उत्पादकता बढ़ाने हेतु वैज्ञानिक फसल प्रबंधन विधियाँ अपनाना सुगम बनाने के लिए योजनाओं के कार्यान्वयन की आवश्यकता पर बात की। डा.के.मुरलीधरन, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की और नारियल के उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए मूल्यवर्धन को बढ़ावा देने के लिए अवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने नारियल खेती से अधिकतम आय सृजित

करने के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों का उपयोग सक्षम बनाने के लिए नारियल किसानों के बीच सामूहिक प्रणाली अपनाए जाने की आवश्यकता पर बात की।



विश्व नारियल दिवस समारोह के सिलसिले में नारियल की वैज्ञानिक खेती और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों पर एक जिला स्तरीय संगोष्ठी भी आयोजित की गई जिसमें 100 चुनिंदे किसानों ने भाग लिया जो कासरगोड जिले के सभी ग्राम पंचायतों के नारियल उत्पादक समितियों के सदस्य हैं। श्री ए.ए.जलील, अध्यक्ष, मोग्राल पुतुर ग्राम पंचायत ने इस अवसर पर वैज्ञानिक नारियल खेती पर मलयालम प्रकाशन तेंगु कृषि रीतिकल का लोकार्पण किया।

डा.सी.तंपान, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने संगोष्ठी में नारियल खेती से आय और उत्पादकता बढ़ाने हेतु प्रौद्योगिकियों के प्रभावी उपयोगीकरण

पर व्याख्यान दिया। डा. ए.सी.मैथ्यू, प्रधान वैज्ञानिक ने किसानों की आय दुगुनी बनाने के लिए नारियल बाग में सूक्ष्म सिंचाई और जल संरक्षण पर सत्र संभाला। डा. पी.एस.प्रतिभा, वैज्ञानिक ने नारियल के कीट एवं रोग प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया और डा.शमीना बीगम, वैज्ञानिक ने नारियल के मूल्य वर्धन हेतु

प्रौद्योगिकियों पर व्याख्यान दिया। विश्व नारियल दिवस समारोह के सिलसिले में नारियल खेती पर वैज्ञानिक-किसान विचार-विनिमय सत्र भी चलाया गया। डा.सी.तंपान, प्रधान वैज्ञानिक ने स्वागत भाषण दिया और डा.टी.एस.मनोजकुमार, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, कासरगोड ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

भा.कृ.अनु.प.-कें.रो.फ.अनु.सं., कायंकुलम

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम ने नारियल-परिवार की खुशहाली के लिए विषय पर विश्व नारियल दिवस मनाया। तमिलनाडु के विरुद्धुनगर की 20 महिला किसानों के समूह ने कार्यक्रम में भाग लिया। डा.एस.कलावति, कार्यकारी अध्यक्ष ने नारियल के स्वास्थ्य प्रबंधन और मूल्यवर्धन पर चलाए गए जानकारी सशक्तिकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने संदेश में उन्होंने केरलीय खाद्यव्यंजनों में अभिन्न अंग के रूप में नारियल की अनूठी खूबियों के बारे में प्रकाश डाला जो परिवार के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। उन्होंने इंटर्नेशनल कोकनट कम्प्यूनिटी द्वारा घोषित विश्व नारियल दिवस समारोह की अहमियत पर भी प्रकाश डाला जो बदलती जलवायु परिस्थितियों से जूझते केरल की मदद करने के लिए व्यवस्थित प्रणाली के साथ नारियल खेती को समावेशित



नारियल-परिवार की खुशहाली के लिए विषय पर चलाए गए प्रशिक्षण सत्र में डा. ए. जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने नारियल से लगातार आय प्राप्त करने और रोजगार सृजन हेतु नारियल खेती में वैज्ञानिक प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

डा.वी.कृष्णकुमार, कार्यकारी अध्यक्ष ने विश्व नारियल दिवस समारोह के सिलसिले में केरल कृषि विश्वविद्यालय, वेल्लानिक्करा, तृश्शूर द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में सहभागिता का समन्वयन किया। श्री पी.श्रीरामकृष्णन, माननीय सभापति, केरल विधान सभा और श्री वी.एस.सुनिलकुमार, माननीय कृषि मंत्री ने प्रदर्शनी स्टाल का दौरा किया और नारियल की उच्च पैदावार देने वाली किस्मों के बारे में वैज्ञानिकों से विचार-विमर्श किया। डा.वी.कृष्णकुमार ने वैज्ञानिक नारियल खेती पर तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की और टिकाऊ नारियल उत्पादन के लिए अच्छी खेती प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर बात की।



करने की आवश्यकता दर्शाने में सहायक रहा है। डा.एस.इंधुजा, वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत किया और डा.ए.जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

आईसीसी सत्र में भारत की नारियल किसान उत्पादक कंपनियाँ प्रत्यायन प्रमाणपत्र से पुरस्कृत



हाल में फिलीपीन्स के मनिला में संपन्न आईसीसी सत्र और अनुसचिवीय बैठक में भारत की नारियल किसान उत्पादक कंपनियाँ प्रत्यायन प्रमाणपत्र से पुरस्कृत हुए।

55वाँ आईसीसी सत्र और अनुसचिवीय बैठक कृषि मंत्रालय और फिलीपीन्स नारियल प्राधिकरण, फिलीपीन्स सरकार की मेजबानी में फिलीपीन्स इंटरनेशनल कन्वेशन सेंटर(पीआईसीसी), मनिला, फिलीपीन्स में 26 से 30 अगस्त 2019 के दौरान संपन्न हुई।

विविध राष्ट्रों के मंत्रीगण और वरिष्ठ अधिकारियों जैसे डा.विलियम डी डार, कृषि मंत्री और कार्यकारी सचिव, फिलीपीन्स, माननीय लोपाऊ नतनियेलु मुआ, कृषि और मात्रियकी मंत्री, समोआ सरकार, माननीय क्लेज़ी क्लीवेलैंड रोर, वाणिज्य, औद्योगिक श्रम और प्रवास मंत्री, सोलमन द्वीपसमूह सरकार, माननीय हेन्री जोन्स एमुली, कृषि और पशुपालन उप मंत्री, पापुआ न्यू गिनिया सरकार, माननीय वटिवेलु सुरेश, रोपण उद्योग राज्य मंत्री, श्रीलंका सरकार, माननीय वियाम पिल्लै, सहायक कृषि मंत्री, फिजी सरकार, आईसीसी सदस्य देशों के वरिष्ठ सरकारी पदधारी और सेंटर फोर एग्रिकल्चर एंड ब्योसाइंस इंटरनेशनल(सीएबीआई), युनाइटेड नेशन्स कान्फरेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट(यूएनसीटीएडी), द पैसफिट कम्प्यूनिटी(एसपीसी), सेंटर डि इन्वेस्टिगेशन साइन्टिफिका डि यूकाटन(सीआईसीवाई), आस्ट्रेलियन सेंटर फोर इंटरनेशनल

एग्रिकल्चरल रिसर्च(एसीआईएआर), फ्रेंच एग्रिकल्चरल रिसर्च सेंटर फोर इंटरनेशनल डेवलपमेंट(सीआईआरएडी), करीबियन एग्रिकल्चरल रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट(सीएआरडीआई), मेलानेशियन स्फियरहेड ग्रूप सेक्रेटेरिएट(एमएसजी), इंटरनेशनल ट्रीटी ऑन प्लॉट जेनटिक रिसोर्सेस फोर फुड एंड एग्रिकल्चर(आईटीपीजीआरएफए), कन्सर्वेशन एंड डेवलपमेंट ऑफ कोकनट ऑयल ऑफ थाईलैंड फोरम(सीडीसीओटी), सेंटर नेशनल डि रिसर्च एग्रोनोमिक(सीएनआरए), बयोवर्सिटी इंटरनेशनल, इंडोनेशियन कोकनट कोयलीशन(कोपेक केलापा), इंडोनेशियन फार्मर्स एसोसिएशन एंड तान्जानियन एग्रिकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट(टीएआरआई) ने सत्र में भाग लिया।

सचिव डा विलियम डी डार, कृषि मंत्री और कार्यकारी सचिव, फिलीपीन्स सरकार ने श्री गोनज्ञालो टी.ड्यूक, पीसीए प्रशासक और माननीय सिंथिया ए.विल्लर, सेन्टर, फिलीपीन्स रिपब्लिक, मंत्रीगण, गणमान्य व्यक्तिगण, सदस्य देशों के पूर्णाधिकारी प्रतिनिधियों की समुपस्थिति में सत्र का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर आईसीसी के 50वाँ स्मरणोत्सव वर्षगाँठ भी संपन्न हुआ। श्री उरोन एन सलुम, कार्यकारी निदेशक, आईसीसी ने इस कार्यक्रम को सुसाध्य बनाया। सुरी एरमिदा सालसिया एलिसजहबाना, कार्यकारी सचिव, यूएनईएससीएपी के संदेश का वीडियो प्रसारण किया गया। श्री

रोमुलो एन.अरंकोन जूनियर, भूतपूर्व सहायक निदेशक और कार्यकारी निदेशक और मुहर्तोयो, डोक्युमेंटलिस्ट, आईसीसी सचिवालय ने वर्षगांठ संदेश प्रस्तुत किए।

आईसीसी के 50वें वर्षगांठ स्मरणोत्सव के इस अवसर पर निजी व्यक्तियों, कार्पोरेट संगठनों और राष्ट्रीय संस्थाओं के योगदान और सेवाओं को सम्मानित किया गया और ट्री ऑफ लाइफ पुरस्कार प्रदान किया गया। नारियल क्षेत्र में 25-50 सालों से अधिक सेवारत अन्य कार्पोरेट संगठनों और राष्ट्रीय संस्थाओं तथा निजी व्यक्तियों के साथ साथ भारत के नारियल विकास बोर्ड और क्यार बोर्ड ने भी पुरस्कार ग्रहण किया।

सेवा सम्मान पुरस्कार आईसीसी के भूतपूर्व कार्यकारी निदेशकों और अन्य अधिकारियों को प्रदान किया गया। भारत के किसान उत्पादक कंपनियों के साथ साथ अन्य 11 संगठनों को भी प्रत्यायन प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ।

श्री गोनज्जालो टी.ड्यूक, पीसीए प्रशासक और माननीय वियाम पिल्लै, सहायक कृषि मंत्री, फिजी सरकार ने अनुसंचिवीय बैठक की अध्यक्षता की। छह विशिष्ट कार्यसूची मदों पर संपत्र

अनुसंचिवीय बैठक में विविध कार्यसूची मदों पर प्रस्तुति और परिचर्चाएं संपन्न हुई। गिनिया सरकार को कम्यूनिटी के 20वाँ पूर्ण सदस्य देश के रूप में अनुमोदन प्रदान किया गया।

विविध देशों के प्रतिनिधिगण, निरीक्षक संगठन और निरीक्षक देशों ने राष्ट्रीय सरकार द्वारा नारियल क्षेत्र के विकास को समर्थन देने वाले कानूनों और इस क्षेत्र के विकास के लिए किए जा रहे तथा आईसीसी से संबद्ध नीतियों और कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

सत्र में आईसीसी के लिए वर्ष 2020-2024 की रणनीतियाँ; आईसीसी की स्थापना दस्तावेजों का संशोधन और 49वाँ अंतर्राष्ट्रीय कोकोटेक सम्मेलन के लिए विषय और स्थान का अनुमोदन किया गया। सम्मेलन के लिए प्रस्तावित विषय नारियल के टिकाऊ विकास के लिए स्मार्ट खेती और परिस्थिति अनुकूल प्रौद्योगिकियाँ हैं और वर्ष 2020 के दौरान सम्मेलन की मेज़बानी मलेशिया सरकार करेगी। सत्र द्वारा नए कार्यकारी निदेशक के रूप में इंडोनेशिया के डा.जेलफिना सी.एलोउ को चुना गया जो जनवरी, 2020 में कार्यभार ग्रहण करेंगे।

नाविबो योजनाओं के कार्यान्वयन पर बैठक संपन्न

वर्ष 2019-20 के दौरान नाविबो योजनाओं के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करने हेतु श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड की अध्यक्षता में 4 जुलाई 2019 को राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान(मैनेज), हैदराबाद में राज्य सरकारी अधिकारियों और नाविबो पदधारियों की संयुक्त बैठक संपन्न हुई।



बैठक का दृश्य



श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो सभा को संबोधित करती हुई

उत्पादक क्षेत्र सुस्त पड़ा है और उत्पादकता कम होती जा रही है। अतः वर्ष 2019-20 के लिए क्षेत्र विस्तार के अंतर्गत लक्ष्य करीब 25,000 हेक्टर तक बढ़ा दिया है। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, अध्यक्ष महोदया ने राज्य कृषि और बागवानी विभागों के सहयोगात्मक प्रयासों के लिए आव्हान किया है।

उन्होंने इस ओर ध्यान आकर्षित किया कि नारियल पौधों का वार्षिक उत्पादन वर्तमान में 35 लाख है जो कि प्रस्तावित माँग 100 लाख नारियल पौधों की तुलना में अत्यंत कम है। वर्ष 2019-20 के दौरान सरकार और निजी क्षेत्रों द्वारा नारियल पौधों के उत्पादन हेतु जो आवंटन किया है वह काफी हद तक बढ़ाकर 10 करोड़ से अधिक कर दिया गया है।

अन्य नारियल उत्पादक देशों की तुलना में देश में नारियल के मूल्यवर्धन का वर्तमान स्तर अत्यंत कमज़ोर स्थिति में है। देश में मूल्यवर्धन की भारी संभावनाओं के मद्देनज़र जिससे कि नारियल किसानों को टिकाऊ आमदनी सुनिश्चित होगी, वर्ष 2019-20 के दौरान 40 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है। किसानों और ग्रामीण उद्यमियों के लिए राज्य और जिला और ब्लॉक स्तर पर कार्यशालाएं और संगोष्ठियाँ और अभियान आदि आयोजित किए जाएंगे। भूमि की तैयारी, रोपण, उर्वरक प्रयोग, नर्सरी गतिविधियाँ, पौधा संरक्षण उपाय आदि जैसी विविध कृषीय गतिविधियों के लिए मौसमीय परिस्थितियों के अनुसृत योजना के अंतर्गत लाभ प्रदान करने पर भी अहमियत दी जाएगी। अधिकारियों से अनुरोध है कि वे बोर्ड की वार्षिक कार्ययोजना 2019-20 के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु अपने राज्य में नारियल क्षेत्र की प्रगति के लिए समुचित स्तर पर कार्रवाई करें।

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने बोर्ड की गतिविधियों, योजना प्रावधानों, वर्ष 2019-

20 के लिए पहचाने गए ध्यान केन्द्रित क्षेत्र, विविध राज्यों के लिए आर्बटित लक्ष्य आदि पर प्रस्तुति की। नारियल के मूल्यवर्धित उत्पाद, उनके लाभ और नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन वित्तीय सहायता पर भी प्रस्तुति की गई।

डा.पद्मावती, उप निदेशक(बागवानी), आँध्र प्रदेश सरकार, श्री एन.जी.गाँधी, उप निदेशक(कृषि), संघ शासित क्षेत्र दादरा नगर हवेली का प्रशासन, श्री अनंत पी.होबेल, कृषि सहायक निदेशक, गोवा सरकार, श्री आर.एच.लाडानी, उप निदेशक(बागवानी), राजकोट प्रभाग, गुजरात सरकार, श्री अल्पेश एम.दत्रोज, उप निदेशक(बागवानी), गिर सोमनाथ प्रभाग, गुजरात सरकार, श्री के.धनराज, बागवानी संयुक्त निदेशक(रोपण फसल और रोपण संरक्षण), कर्नाटक सरकार, श्री सुरेश वी.भालेराव, उप निदेशक(बागवानी), महाराष्ट्र सरकार, श्री सुवश चंद्र महतो, उप निदेशक(बागवानी), ओडिशा सरकार, श्री एम.वेधाचलम, अपर निदेशक(बागवानी), पुतुच्चेरी सरकार, श्रीमती एम.पोनमलर, उप निदेशक(कृषि), तमिलनाडु सरकार, श्री वी.उदय कुमार, बागवानी अधिकारी, तेलंगाना सरकार, श्री वेणु माधव, बागवानी अधिकारी, तेलंगाना सरकार, श्रीमती टी.बालासुधा हरि, निदेशक प्रभारी, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै, डा.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नाविबो, राज्य केन्द्र, ओडिशा, श्री प्रमोद पी.कुरियन, सहायक निदेशक, नाविबो, राज्य केन्द्र, ठाणे, श्री जयनाथ आर., सहायक निदेशक, नाविबो, राज्य केन्द्र, विजयवाड़ा, आँध्र प्रदेश, श्रीमती जयश्री ए., विकास अधिकारी, नाविबो, मुख्यालय और श्री कुमारवेल एस., विकास अधिकारी, नाविबो ने बैठक में तथा परिचर्चा में सक्रिय रूप से भाग लिया।

हेल्थ टूरिस्म एक्स्पो

नारियल विकास बोर्ड ने 3 और 4 जुलाई को कोची में संपन्न केरल हेल्थ टूरिस्म एक्स्पो के सातवें संस्करण में भाग लिया। इस दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन भारतीय वाणिज्य संघ(सीआईआई) ने सेवा निर्यात संवर्धन परिषद्(एसईपीसी) के सहयोग से किया था। सर्वश्री केराटेक और सर्वश्री प्राणात्मका आयुर्वेदिक प्राइवेट लिमिटेड जैसे विर्जिन नारियल तेल निर्माताओं ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।



हेल्थ टूरिस्म एक्स्पो में बोर्ड का स्टाल

नारियल विकास बोर्ड की 136वीं बैठक संपन्न



बैठक का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड की 136वीं बैठक श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो की अध्यक्षता में 23 जून 2019 को नारियल विकास बोर्ड के मुख्यालय, कोची में संपन्न हुई। बोर्ड के सदस्य डा.के.मुरलीधरन, प्रभारी निदेशक, सीपीसीआरआई, श्री पी.सी.मोहनन मास्टर, केरल, श्री पी.आर.मुरलीधरन, केरल, श्री एस.मोहन राज,

तमिलनाडु, श्री एम.आर.शंकर नारायण रेड्डि, कर्नाटक, श्रीमती दक्षा रामी, गुजरात और श्री संजीव कुमार सिंह, बिहार, श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी और श्री आर.मधु, सचिव, नारियल विकास बोर्ड ने बैठक में भाग लिया। बैठक में वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिए बोर्ड की वार्षिक कार्य योजना हेतु अनुमोदन प्रदान किया गया।

एग्रि इंटेक्स 2019 ट्रेड फेयर

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने कोडिसिया, कोयंबत्तूर में 12 से 15 जुलाई 2019 तक संपन्न एग्रि इंटेक्स 2019 ट्रेड फेयर में भाग लिया। सर्वश्री पोल्लाची सीपीसी, सर्वश्री विनायगा सीपीसी, सर्वश्री कोयंबत्तूर सीपीसी,

सर्वश्री पराशक्ति टूल्स एंड इंस्ट्रिमेंट्स ने अपने उत्पाद और सेवाएं बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए।

तमिलनाडु एवं दूसरे राज्यों के विविध जिलों से किसानों, छात्र-छात्राओं और उद्यमियों ने नाविबो स्टाल का



एग्रि इंटेक्स 2019 प्रदर्शनी में बोर्ड का स्टाल

सर्वश्री मट्टुकुलम सीपीसी एवं सर्वश्री कन्याकुमारी सीपीसी जैसी तमिलनाडु की नारियल उत्पादक कंपनियों और केरल में कोषिककोट की सर्वश्री वटकरा सीपीसी, सर्वश्री मथुरा फुड्स, सर्वश्री सूपर कोको, सर्वश्री वेट्री, सर्वश्री शक्ति कोको और

दौरा किया। आगंतुकों को बोर्ड की विविध योजनाओं जैसे कि नारियल प्रौद्योगिकी मिशन, क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, नर्सरी, नारियल पेड़ बीमा आदि के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया।

निर्यातक संगोष्ठी संपन्न

नारियल विकास बोर्ड ने वर्ष 2019-20 के लिए निर्यातकों का पहला सम्मेलन 24 जुलाई 2019 को आयोजित किया। बैठक का उद्घाटन श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने किया। इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने इस कार्यक्रम को सार्थक

संयुक्त महानिदेशक विदेश व्यापार नीति, कोयंबत्तूर ने नारियल उद्योग पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए विदेश व्यापार नीति पर और ट्रेड फिनैन्स सोल्यूशन्स पर भारतीय विदेश व्यापार संस्थान(आईआईएफटी), कोलकाता के डा. गौतम दत्त ने सत्र चलाया।



बनाने हेतु उपस्थित सभी के सहयोग के लिए अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि नारियल उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने की गुंजाइश सबसे अधिक तमिलनाडु राज्य में है और यदि निर्यातक चाहे तो बोर्ड ऐसे कार्यक्रम तमिलनाडु के दूसरे प्रमुख जिलों में भी आयोजित करने की व्यवस्था करेगा। श्री मोहन राज, बोर्ड सदस्य ने इस अवसर पर सभा को संबोधित किया।

बैठक इस प्रकार से आयोजित हुआ था कि सहभागियों को आपस में विचार-विनिमय करने और जानकारियों के आदान-प्रदान के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुआ। छह तकनीकी सत्र चलाए गए और सहभागियों को अपनी शंकाएं दूर करने और अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति के लिए जो कदम आगे बढ़ाने हैं उन्हें पहचानने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ।

प्रारंभिक सत्र डा.गौतम दत्त, संकाय, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान(आईआईएफटी), कोलकाता ने संभाला। इस सत्र में उन्होंने निर्यात परिदृश्य, एचएसएन कोड आदि का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने यह भी बताया कि व्यापार संभालने का नज़रिया ही बदल गया है और निर्यातकों को परंपरागत उत्पादों के परे आगे देखना होगा।

डा.गौतम दत्त ने भोजनांतर सत्र अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों की पहचान और इनके चयन पर चलाया। श्री श्रमन आईटीएस,

डा.गौतम दत्त ने निर्यात प्रोत्साहन पर और श्रीमती दीप्ति नायर एस., उप निदेशक(विपणन), नारियल विकास बोर्ड ने नाविबो की निर्यात/बाज़ार संवर्धन योजनाओं पर सत्र चलाया।

श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने विचार-विनिमय सत्र में भाग लिया और सहभागियों द्वारा उठायी गई शंकाओं का समाधान किया और बकाया मामलों के निपटान हेतु भरपूर समर्थन का वादा किया। इस बातचीत से निर्यातकों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और अधिक जोश और संकेन्द्रित तरीके से करने का हौसला प्राप्त हुआ।

बैठक में निर्यातकों ने अच्छी गुणवत्ता की पौर्किंग सामग्रियों का अभाव, साफ्टा करार के अंतर्गत श्रीलंका से डेसिकेटड नारियल का अनियंत्रित निशुल्क आयात, विर्जिन नारियल तेल के लिए शून्य निर्यात प्रोत्साहन, यूएसए के नए जनरल सिस्टम ॲफ फिरेंस(जीएसपी) के परिणामस्वरूप यूएसए में भारतीय कार्गो की निकासी पर 4.8 प्रतिशत की दर पर लगने वाले भारी शुल्क, ताज़ा नारियल तथा डाब के निर्यातकों को परिवहन सहायिकी पर विचार करने का अनुरोध आदि जैसे कई मुद्दे उठाए थे।

श्रीमती टी.बाला सुधाहरि, निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, नाविबो, चेन्नै ने स्वागत भाषण दिया और श्रीमती दीप्ति नायर



एस., उप निदेशक, नाविबो ने धन्यवाद अदा किया। श्री के.एस.सेबास्टियन, सहायक निदेशक, नाविबो और लगभग 70 नारियल उत्पाद निर्यातकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

नारियल विकास बोर्ड ने वर्ष 2019-20 के लिए दूसरा निर्यातक सम्मेलन कोची में 26 जुलाई 2019 को आयोजित किया। श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। उद्घाटन भाषण देते हुए अध्यक्ष महोदया ने सूचित किया कि नाविबो ने नारियल आधारित उद्यमियों का समर्थन करने के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत 40 करोड़ रुपए का आबंटन किया है जो कि अब तक का सर्वाधिक आबंटन है और निर्यातकों से अनुरोध किया कि विश्वस्तरीय उत्पादों के उत्पादन के लिए प्राप्त अवसरों का लाभ उठाएं और अपने विदेशी व्यापार को और अधिक फैलाएं। उन्होंने याद दिलायी कि गत वर्ष के दौरान नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत आबंटन 5 करोड़ रुपए था। उन्होंने सभा को यह भी सूचित किया कि नाविबो ने चार महीने की इस छोटी अवधि में ही निर्यातकों की प्रमुख समस्याओं, जैसे कि विर्जिन नारियल तेल के लिए अलग एचएस कोड, खोपड़ी कोयला और सक्रिय कार्बन के मामले में उलटा निर्यात प्रोत्साहन संरचना, साफ्टा करार के अंतर्गत भारत से अंधाधुंध आयात आदि पर वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय और विदेश व्यापार महा निदेशक के साथ उठाई है। उन्होंने यह भी बताया कि खोपड़ी कोयला निर्माताओं को संबंधित प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनापत्ति प्रमाणपत्र प्राप्त करने में जो मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है इन समस्याओं की ओर भी बोर्ड ध्यान दे रहा है। उन्होंने निर्यातकों से किसान

उत्पादक संगठनों के साथ सीधा संबंध स्थापित करने का और बिचौलियों से बचने की कोशिश करने का भी अनुरोध किया और इस मामले पर बोर्ड के पूरे सहयोग का वाद किया। उन्होंने निर्यातकों को यह भी सुझाव दिया कि प्रौद्योगिकियों को और अधिक उन्नत बनाने के लिए केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान, मैसूरु, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा और नूतन पैकेजिंग प्रौद्योगिकियों के लिए भारतीय पैकेजिंग संस्थान द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण अवसरों का लाभ उठाएं।

बोर्ड के सदस्य श्री मोहनन मास्टर और श्री मुरलीधरन ने भी इस अवसर पर बात की। श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने भी बैठक में भाग लिया।

कार्यक्रम के सिलसिले में आयोजित 8 सत्रों में 60 संभावी निर्यातकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और उन्हें अपनी शंकाओं को दूर करने और अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को और अधिक आगे बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

प्रारंभिक सत्र में डा.गौतम दत्त, संकाय, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान(आईआईएफटी), कोलकाता ने निर्यात परिवृश्य, एचएसएन कोड आदि का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने यह भी बताया कि व्यापार संभालने का नज़रिया ही बदल गया है और निर्यातकों को परंपरागत उत्पादों के परे आगे देखना होगा।

अगला सत्र नारियल उद्योग पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए विदेश व्यापार नीति पर था जिसमें श्री हरिलाल आईटीएस, संयुक्त निदेशक, विदेश व्यापार, एरणाकुलम ने बताया कि मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यातकों को देशीय बाज़ार में कच्ची सामग्रियों के उच्च भाव के कारण ठोकर खाना पड़ रहा है। उनके राय में वृद्धि में जो रुकावट हो रही है वह इसी की वजह से है। चर्चा के दौरान उन्होंने इंडोनेशिया और फिलीपीन्स जैसे अन्य प्रमुख नारियल उत्पादक देशों से छिलका निकाले गए नारियल के आयात के लिए अग्रिम प्राधिकरण अनुशास्ति प्रदान करने के सुझाव का समर्थन किया।

श्री अनिल कुमार, मूल्य निरूपक, सीमाशुल्क आयुक्त का कार्यालय, कोची ने सीमाशुल्क कार्यविधियों पर सत्र चलाया और सीमाशुल्क कार्यविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया और

निर्यातकों के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने सूचित किया कि शिपिंग बिल का ऑनलाइन फाइलिंग बहुत जल्द ही लागू होगा जो निर्यातकों को शिपिंग बिल चंद घंटों में फाइल करने के लिए सहायक होगा।

श्री प्रसाद चक्रवर्ती, सहायक कृषि विपणन सलाहकार, डीएमआई, भारत सरकार ने निर्यातकों के लिए डीएमआई योजनाओं पर सत्र चलाया। उन्होंने निर्यातकों की आवश्यकता पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करते हुए कृषि विपणन आधारिक संरचना(एमआई) योजना के बारे में बात की। यह योजना कृषि विपणन संरचना विकसित करने पर लक्षित है। देश विनिर्दिष्ट परिस्थिति में व्यापार बाधायें(प्रशुल्क और गैर प्रशुल्क) डा.गौतम दत्त, आईआईएफटी, कोलकाता ने चलाया और इस सत्र में अंतर्राष्ट्रीय बाजारों की पहचान और चयन पर बात की। उन्होंने बताया कि हर व्यापार का केंद्र भाग इसके ग्राहक होते हैं और सबसे प्रथम और सर्वप्रमुख कदम उत्पादों के लिए सही ग्राहकों की पहचान करना है और बाजार को पहचानने हेतु जो कदम उठाए जाने हैं इन पर प्रकाश डाला और रिवोल्ड कंपेरिटिव एडवांटेज(आरडब्ल्यूए) के बारे में व्याख्या दी।

व्यार वित्त समाधान पर सत्र में डा.गौतम दत्त, आईआईएफटी, कोलकाता ने निर्यातकों के लिए उपलब्ध विविध व्यापार वित्त विकल्पों के बारे में बात की। उन्होंने अग्रिम भुगतान, साखपत्र आदि जैसे भुगतान के निबंधनों पर व्याख्या दी। उन्होंने निर्यात क्रेडिट एजेंसियों(ईसीए) के बारे में भी बताया जो कि सार्वजनिक सरकारी स्वामित्व वाली एजेंसियाँ और संस्थाएं हैं जो विकासशील देशों और उभरते बाजार में विदेशी व्यापार करने के लिए कोपरेट को सरकार समर्थित ऊर्ध्व, गैरिटियाँ और बीमा प्रदान करता है।

डा.गौतम दत्त, आईआईएफटी, कोलकाता ने निर्यात प्रोत्साहन पर सत्र भी चलाया और नारियल उत्पादों के लिए प्राप्त निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने निर्यात प्रोत्साहन योजना के बारे में समझाया और भारत से वस्तुओं की आयात योजना के बारे में विस्तृत व्याख्यान दिया। नाविबो की निर्यात/बाजार संवर्धन योजनाएं विषयक सत्र में श्री सेबास्टियन के.एस. सहायक निदेशक(विपणन), नारियल विकास बोर्ड ने वित्तीय वर्ष 2019-20 के दौरान



श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास

अधिकारी 15 अगस्त 2019 को नाविबो मुख्यालय के प्रांगण में राष्ट्र ध्वजारोहण करते हुए। श्री श्रीकुमार पोतुवाल, उप निदेशक और बोर्ड के अन्य अधिकारी भी चित्र में दर्शित हैं।

नाविबो द्वारा शुरू की गई नई संघटक योजनाएं जैसे कि बिक्री आउटलेटों की स्थापना हेतु समर्थन, सहायता हेतु गुणवत्ता प्रमाणन, अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों/व्यापार मेलाओं/क्रेता-बिक्रेता बैठकों में भाग लेने हेतु निर्यातकों को सहायता, ब्रैंड के प्रचार हेतु समर्थन, डिजिटल मार्केटिंग के ज़रिए ब्रैंड का प्रचार, जन माध्यम से ब्रैंड का प्रचार, प्रचार सामग्रियों के मुद्रण हेतु सहायता, आउटडोर विज्ञापन हेतु सहायता, कुशल श्रमिकों के विकास के ज़रिए गुणवत्तापूर्ण नारियल उत्पादों का निर्माण आदि के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने आगे हरेक संघटक योजनाओं, योग्यता मानदंड और योजना के लिए आवेदन करने की कार्यविधि का संक्षिप्त परिचय दिया और इस अवसर का लाभ उठाने के लिए निर्यातकों को प्रेरित किया।

नाविबो बोर्ड सदस्य, श्री पी.आर.मुरलीधरन ने सत्र के विशेषज्ञों की सराहना की और बैठक में भाग लिए निर्यातकों को धन्यवाद अदा किया। श्रीमती दीप्ति नायर एस., उप निदेशक, नाविबो ने सभा का धन्यवाद अदा किया। तत्पश्चात संपन्न विचार-विनिमय सत्र में निर्यातकों ने विविध मुद्दों पर सवाल उठाए।

अन्नपूर्णा-अनु फुड इंडिया

नारियल विकास बोर्ड ने महाराष्ट्र के बोम्बे एक्सिबिशन सेंटर, मुंबई में 29 से 31 अगस्त 2019 तक संपन्न अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी अन्नपूर्णा-अनु फुड इंडिया 2019 में भाग लिया। फेडरेशन ऑफ इंडियन चॉबर ऑफ कोमर्स एंड इंडस्ट्री(एफआईसीसीआई), नई दिल्ली ने इस प्रदर्शनी के 14वें संस्करण का आयोजन किया था।

प्रदर्शनी में अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय सहभागियों ने आहार, पेय और सत्कार क्षेत्र के लिए एक ज़बरदस्त पेशेवर मंच सृजित किया जिसमें उनको अपनी उपलब्धियाँ प्रदर्शित करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ। मेले में 300 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शकों ने भाग लिया।

अन्नपूर्णा अनु फुड-2019 में सहभागिता से नारियल विकास बोर्ड का मुख्य लक्ष्य विविध नारियल उत्पादों का निर्माण और विपणन करने वाले उद्यमियों को बढ़ावा देना और भारत में और विदेश में उद्यमियों/वितरणकर्ताओं/खुदरे व्यापारियों और नारियल उत्पादों के उपभोक्ताओं के बीच भविष्य में विपणन के अवसर हेतु आपस की कड़ियाँ सृजित करना है।

विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेट नारियल पाउडर, विर्जिन प्लस टैबलेट और नारियल क्रीम के विनिर्माता सर्वश्री केराटेक(प्रा.) लिमिटेड, केरल; डाब पानी, नारियल दूध शेक और नारियल शक्कर के विनिर्माता सर्वश्री मधुरा एग्रो प्रोसेस प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबत्तूर, तमिलनाडु; नारियल तेल, नारियल



बोर्ड के स्टाल का दृश्य

फ्लेक्स, नारियल शक्कर के विनिर्माता सर्वश्री वामा ऑयल प्राइवेट लिमिटेड, कोयंबत्तूर; नेटा डि कोको उत्पादों के विनिर्माता सर्वश्री नेटा न्यूट्रिको कोकनट फुड प्रोडक्ट्स, केरल; कोल्ड प्रेस नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेट कोकनट पाउडर, नारियल शक्कर, अचार आदि के विनिर्माता सर्वश्री पोल्लाची सीपीसी लिमिटेड, कोयंबत्तूर, तमिलनाडु; विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेट नारियल पाउडर आदि के विनिर्माता सर्वश्री साम्राज होल्सम लिविंग प्राइवेट लिमिटेड, कन्याकुमारी; नारियल शक्कर, नीरा, चिप्स, गुड पाउडर आदि का विनिर्माण करने वाला सर्वश्री डि एल्बेन और डेसिकेट नारियल पाउडर और नारियल फ्लेक्स का विनिर्माण करने वाले सर्वश्री सूपर कोको कंपनी ने अपने उत्पाद और सेवाएं नाविबो स्टाल में प्रदर्शित किए।

पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल और हिंदी, अंग्रेजी और मराठी में सूचनात्मक चार्ट, पोस्टर एवं बोर्ड के प्रकाशन नाविबो स्टाल में प्रदर्शित किए। विविध देशीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों और व्यापार समूह के अधिकारियों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया।

इंद्रधनुषी रंगों की छवि में पुण्य त्योहार मनाया गया

कोची में बोलगाटी द्वीप के सेंट सेबास्टियन गिरिजाघर में इस वर्ष भी पुण्य त्योहार भक्तिमय वातावरण में मनाया गया। त्योहार मनाने के लिए हर वर्ष गिरिजाघर के प्रांगण में एक पंडाल का निर्माण किया जाता है जो हमेशा दूसरों से कछ हटके और अनूठा होता है। इस वर्ष की खासियत यह थी कि नारियल की खोपड़ी से इंद्रधनुषी रंगों में पंडाल सजाया गया। 220 फीट लंबी और 20 फीट चौड़ी सफेद पगड़े के पंडाल का भीतरी भाग इंद्रधनुषी रंगों में रंगे गए नारियल खोपड़ियों के तोरणों से सजाया गया। इसके लिए 9000 नारियल खोपड़ियों का उपयोग किया गया था। पंडाल के दोनों ओर डाब और केले के गुच्छों और अन्य फलों से सजाया गया। इसके साथ साथ नारियल खोपड़ियों को पिरोकर झालर भी बनाए गए। त्योहार के सिलसिले में बनाए गए मंच को बाँस

इंडोनेशिया के बाली में तीसरा नारियल फेस्टिवल

बाली प्रान्त के रीजेंट ऑफ कारंगासेम रीजेंसी ने कोअलिशन ऑफ कोकनट एसोसिएशन ऑफ इंडोनेशिया के सहयोग से सुकसदा वाटर पैलस, कारंगासेम में 14 से 17 सितंबर 2019 के दौरान विश्व नारियल दिवस समारोह और तीसरा नारियल फेस्टिवल आयोजित किया। समारोह का विषय नारियल पर्यटन और आर्थिक विकास था। भारत से 10 संभावी उद्यमियों ने समारोह में भाग लिया।

प्रो. इर नेल्सन पोमालिंगो, एम.पीडी, अध्यक्ष और भूपति, गोरेंटालो रीजेंसी ने माननीय आई.गस्तिआयु मास सुमंत्री, एस.एसओएस, एमएपी, भूपति, कारंगासेम रीजेंसी की समुपस्थिति में समारोह का उद्घाटन किया। सुश्री अमीना अली, व्यापार मंत्री, तानज्ञानिया सरकार भी इस अवसर पर उपस्थित थी।

फेस्टिवल में तकनीकी सेमिनार, नारियल उत्पादों की प्रदर्शनी और व्यापार बैठक शामिल थे। इंडोनेशिया, श्रीलंका, तानज्ञानिया, चाइना और तिमोर लेस्टे ने भी फेस्टिवल में भाग लिया। क्वीन्सलैंड विश्वविद्यालय, कृषि विभाग, इंडोनेशिया

साभार: डोमिनिक नटुवत्तेश्वर

के विविध हिस्सों से सजाकर आकर्षक बनाया गया। देशवासियों ने ये सारी चीज़ें मुफ्त प्रदान की थीं और उन्हीं चीज़ों से उनके हाथों से ही पंडाल का निर्माण हुआ और इंद्रधनुषी आभा में पूरी श्रद्धा के साथ त्योहार मनाया गया।

सरकार; नारियल जानकारी केन्द्र, इंडोनेशिया और इंडोनेशियन ताड़ फसल अनुसंधान संस्थान, कृषि मंत्रालय के प्रतिष्ठित वक्ताओं ने रोपण सामग्रियों की उपलब्धता, नारियल में ऊतक संवर्धन; नारियल उत्पादों का प्रसंस्करण और विपणन आदि के बारे में बात की। इस फेस्टिवल का वि

अतः न

तथा भ

क्षेत्र में

उद्योग

प्रदान

उत्पादों

को बढ़ावा दन के बार म यथा का गइ। कायक्रम क भागस्वरूप विविध देशों के सहभागियों के बीच व्यापार संबंधी विचार-विनियम मुख्यतः गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों, ताज़ा नारियल और डाब पानी की आपूर्ति पर संपत्र हुई।

नारियल की खेती प्रौद्योगिकी पर जिला स्तरीय संगोष्ठी

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केन्द्र, ओडिशा ने बागवानी उप निदेशक का कार्यालय, भद्रक के सहयोग से 24 जुलाई 2019 को ओडिशा के भद्रक जिले में नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की।

डा.बिनोद कुमार जेना, एएचओ, भद्रक ने सभा का स्वागत किया और जिले में नारियल खेती की संभावनाओं के बारे में किसानों के साथ चर्चा की। डा.अरबिन्द दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, केवीके, रानिताल ने वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर बात की जिसमें उन्होंने मातृ ताड़ का चयन, बीजफल चयन, नर्सरी प्रबंधन, रोपण का वैज्ञानिक तरीका, अंतरखेती क्रियाएं आदि के बारे में बताया। श्रीमती ऊर्मिला महापात्र, बागवानी सहायक निदेशक, भद्रक ने राज्य सरकार की विविध योजनाओं पर किसानों से बात की। डा.श्याम सुंदर महापात्र, सहायक निदेशक अनुसंधान, आरआरटीएस, भद्रक ने नारियल के एकीकृत पोषण प्रबंधन और एकीकृत कीट प्रबंधन पर बात की। डा.उमाशंकर नायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कीटविज्ञान, ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने एकीकृत कीट प्रबंधन पर बात की।

डा.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नाविबो ने नारियल विकास बोर्ड की विविध योजनाओं पर चर्चा की। तकनीकी सत्र के दौरान चर्चा का मुख्य विषय जिले में नारियल किसानों के हित के लिए नारियल उत्पादक समितियों के गठन की



अहमियत था। कुमारी सस्मिता पल्लई, नाविबो ने नारियल के मूल्यवर्धन पर और विर्जिन नारियल तेल, चिप्स, सिरका, डेसिकेटड नारियल, नारियल दूध, कयर आधारित उत्पाद, छिलका आधारित उत्पाद आदि जैसे नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। डा.श्याम सुंदर महापात्र, अपर आयुक्त अनुसंधान, आरआरटीएस, भद्रक ने जिले में नारियल उत्पादक समितियों के गठन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को जानकारियाँ प्रदान करने में सहायक रहा और किसानों ने आपसी परिचर्चा सत्र में अपनी समस्याएं बतायी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विशेषज्ञों ने किसानों की शंकाओं का समाधान किया। 100 से अधिक किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्री विजय कुमार महंत, एएचओ, भद्रक ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला संपन्न

वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों और नारियल के मूल्यवर्धन पर एक ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला मलंचा नारियल किसान कल्याण समिति, मलंचा के सहयोग से मीनाखान बीड़ीओ कार्यालय, मीनाखान प्रखंड, उत्तर 24 परगनास जिला में 7 अगस्त 2019 को संपन्न हुआ। संगोष्ठी में किसान समूह ने भाग लिया।

श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने सभा का स्वागत किया। श्री एस मिश्रा, सहायक निदेशक कृषि, बरासात ने किसान समूह द्वारा खेती प्रौद्योगिकी अपनाए जाने की अहमियत के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और नारियल खेती एवं उद्योग के समग्र विकास हेतु पश्चिम बंगाल सरकार से सभी प्रकार के समर्थन की माँग की और



बताया कि राज्य में लघु और सीमांत किसानों की प्रगति हेतु बोर्ड भरपूर समर्थन प्रदान करेगा।

श्री शांति स्वराप दास, फिशरीस विस्तार कार्यालय, मीनाखान ब्लॉक ने लघु और सीमांत किसानों की आय में बढ़ोत्तरी लाने के लिए नारियल के मूल्यवर्धन और नीरा उत्पादन पर संक्षिप्त परिचय दिया। श्री हाजी अयूब हुस्सेन, अध्यक्ष, मीनाखान प्रखंड और श्री अबुल कलाम मल्लिक, ब्लॉक सचिव, मीनाखान प्रखंड ने किसानों को राज्य में नारियल खेती संबंधी गतिविधियाँ चलाने और नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार करने की सलाह दी ताकि वे अपने बागों से अधिकतम आय प्राप्त की जा सकें।

नारियल के विविध उपोत्पादों के लिए इकाइयाँ स्थापित की जा सकें।

श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने किसान समूह को रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने की ओर नारियल बाग में एकीकृत खेती प्रणालियाँ अपनाने की सलाह दी ताकि वे अपने बागों से अधिकतम आय प्राप्त की जा सकें। श्री रवीन्द्र, कुमार, विकास अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय ने नारियल की खेती और बोर्ड की योजनाओं के बारे में उस क्षेत्र के किसानों को अवगत बनाया। संगोष्ठी में ब्लॉक के स्थानीय ग्राम पंचायतों से 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

नाविबो अध्यक्ष ने प्रबीउ फार्म, पित्तापल्ली का दौरा किया



श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने 3 सितंबर 2019 को प्रबीउ फार्म, पित्तापल्ली का दौरा किया। अध्यक्ष महोदया ने फार्म की गतिविधियों की समीक्षा की और फार्म के पदधारियों के साथ परिचर्चा की। उन्होंने फार्म के प्रांगण में एक नारियल पौध का रोपण किया।

बाजार समीक्षा

जून 2019

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जून 2019 के दौरान कोची और आलप्पुऱ्णा बाजार में प्रति किंवटल 14400 रुपए और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 15050 रुपए पर खुला। महीने के दौरान कोची और आलप्पुऱ्णा बाजारों में नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ।

कोची और आलप्पुऱ्णा बाजारों में भाव प्रति किंवटल 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14500 रुपए पर और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 50 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 15000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11533 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 66 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 11467 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरे

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 8900 रुपए, आलप्पुऱ्णा बाजार में 8800 रुपए और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 9200 रुपए पर खुला। कोची और आलप्पुऱ्णा बाजारों में भाव में थोड़ा बढ़ाव का रुख रहा जब कि कोषिक्कोट बाजार में पेषण खोपरे के भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुऱ्णा बाजारों में प्रति किंवटल 100 रुपए के शुद्ध लाभ

के साथ कोची बाजार में प्रति किंवटल 9000 रुपए तथा आलप्पुऱ्णा बाजार में प्रति किंवटल 8900 रुपए पर बाजार बंद हुआ। कोषिक्कोट बाजार में भाव प्रति किंवटल 9200 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में भाव प्रति किंवटल 8000 रुपए पर खुलकर प्रति किंवटल 200 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 8200 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाजार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 14900 रुपए पर खुला और भाव में महीने भर घटाव का रुख रहा और प्रति किंवटल 3900 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 11000 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्पुर बाजार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 15000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 2500 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 12500 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाजार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 10000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान संपूर्ण घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 400 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9600 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाजार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हजार

फल 12000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाजार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 10000 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा और प्रति हजार फल 10000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हजार फल 17000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 20500 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में नारियल के देशीय बाजारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव अ में महीने के दौरान घट-बढ़ का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स में खोपरे के देशीय भाव में मिश्रित रुख रहा। श्रीलंका में खोपरे के देशीय भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा जबकि भारत में खोपरे के भाव में थोड़ा बढ़ाव का रुख रहा। विविध देशीय बाजारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

जुलाई 2019

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जुलाई 2019 के दौरान कोची में प्रति किंवटल 14400 रुपए, आलपुष्टा बाजार में प्रति किंवटल 14500 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 15000 रुपए पर खुला। महीने के दौरान कोची बाजार में नारियल तेल के भाव में बढ़ोत्तरी का रुख रहा और आलपुष्टा और कोषिककोट बाजारों में नारियल तेल के भाव में थोड़ा घटाव का रुख दर्शात हुआ।

कोची और आलपुष्टा बाजारों में भाव प्रति किंवटल क्रमशः 400 रुपए और 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14800 रुपए पर बंद हुआ और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11467 रुपए पर खुला और महीने के दौरान संपूर्ण बढ़ाव का रुख दर्शाया और प्रति किंवटल 533 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 12000 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 8500 रुपए, आलपुष्टा बाजार में प्रति किंवटल 8900 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 9150 रुपए पर खुला। कोची बाजार में पेषण खोपरे के भाव में थोड़ा बढ़ाव का रुख रहा जबकि आलपुष्टा और कोषिककोट बाजारों में पहले पक्ष के दौरान भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा और तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शात हुआ।

कोची, आलपुष्टा और कोषिककोट बाजारों में भाव प्रति किंवटल क्रमशः 1000 रुपए, 500 रुपए और 450 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 9500 रुपए, 9400 रुपए और 9600 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में भाव प्रति किंवटल 8200 रुपए पर खुलकर प्रति किंवटल 600 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 8800 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिककोट बाजार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 11400 रुपए पर खुला और भाव में महीने भर बढ़ाव का रुख रहा और प्रति किंवटल 1100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 12500 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिपुर बाजार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान बढ़ाव का रुख दर्शाकर महीने के आखिरी दिनों में भाव में घटाव हुआ। भाव प्रति किंवटल 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13800 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाजार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 9500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान संपूर्ण घटाव का रुख दर्शाकर प्रति किंवटल 100 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9400 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाजार में अंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हजार फल 12000 रुपए पर खुला और पूरे

महीने उसी भाव पर स्थिर रहा। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाजार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 10000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 11000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर एपीएमसी बाजार में अंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हजार फल 20500 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 18000 रुपए पर बंद हुआ। मंगलूर बाजार में अंशिक रूप से छिले नारियल का भाव 20000 रुपए पर पूरे महीने स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

श्रीलंका में नारियल के अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव में महीने के दौरान बढ़ाव का रुख रहा। किंतु फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और इंडिया में नारियल के देशीय भाव में घट-बढ़ का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शात है।

नारियल तेल

श्रीलंका में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव में महीने के दौरान बढ़ाव का रुख रहा। किंतु फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और इंडिया में नारियल तेल के देशीय भाव में घट-बढ़ का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और इंडिया में खोपरे के देशीय भाव में मिश्रित रुख रहा। श्रीलंका में खोपरे के देशीय भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा। विविध देशीय बाजारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

अगस्त 2019

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अगस्त 2019 के दौरान कोची और आलपुष्टा बाजारों में प्रति किंवटल 14800 रुपए और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 15100 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाजारों में नारियल तेल के भाव में बढ़ोत्तरी का रुख रहा किंतु महीने के आखिरी दिनों में भाव में घटाव हुआ।

कोची और आलपुष्टा बाजारों में भाव प्रति किंवटल क्रमशः 1600 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16400 रुपए पर बंद हुआ और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 2200 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 17300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 12000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान संपूर्ण बढ़ाव का रुख दर्शाया और प्रति किंवटल 1333 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 9500 रुपए, आलपुष्टा बाजार में प्रति किंवटल 9400 रुपए और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 9600 रुपए पर खुला। तीनों बाजारों में खोपरे के भाव में संपूर्ण बढ़ाव का रुख रहा किंतु महीने के आखिरी दिनों में भाव में घटाव हुआ।

कोची और कोषिक्कोट बाजारों में भाव प्रति किंवटल 10700 रुपए पर

और आलपुष्टा बाजार में प्रति किंवटल 10600 रुपए पर बंद हुआ और कोची और आलपुष्टा बाजारों में प्रति किंवटल 1200 रुपए और कोषिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 1100 रुपए का शुद्ध मुनाफा हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में भाव प्रति किंवटल 8800 रुपए पर खुलकर प्रति किंवटल 900 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 9700 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाजार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 12600 रुपए पर खुला और भाव में महीने भर घट-बढ़ का रुख रहा और प्रति किंवटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13000 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्पुर बाजार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13800 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख दर्शाता रहा। भाव प्रति किंवटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 13600 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाजार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 9400 रुपए पर खुला और महीने के दौरान घट-बढ़ का रुख रहा। भाव प्रति किंवटल 2100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 11500 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाजार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हजार

फल 13000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 15000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाची बाजार में भाव प्रति हजार फल 11000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 13000 रुपए पर बंद हुआ। बैंगलूर एपीएमसी बाजार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हजार फल 14000 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा। बैंगलूर बाजार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव 21000 रुपए पर पूरे महीने स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और इंडिया के देशीय बाजारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

नारियल तेल

श्रीलंका में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय और देशीय भाव में महीने के दौरान बढ़ाव का रुख रहा। किंतु फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और इंडिया में नारियल तेल के देशीय भाव में घट-बढ़ का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और इंडिया में खोपरे के देशीय भाव में मिश्रित रुख रहा। श्रीलंका में खोपरे के देशीय भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा। विविध देशीय बाजारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

बाजार भाव-देशीय

जून 2019

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सुखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
					(रु. / क्वि.)				(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषिं क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्स)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषिं क्कोट	कंगयम	कोषिं क्कोट	तिपूर	कोषिं क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर (ग्रेड-1)
01.06.2019	14400	14400	15050	11533	8900	8800	9200	8000	14900	15000	10000	12000	10000	17000 21000
09.06.2019	14400	14400	15050	11500	8900	8800	9200	8000	14500	13500	9800	12000	10000	17000 21000
16.06.2019	14500	14500	15150	11600	9000	8900	9350	8200	13200	12500	9800	12000	10000	18500 20000
23.06.2019	14500	14500	15150	11533	9000	8900	9300	8200	13000	13000	9800	12000	10000	18500 20000
30.06.2019	14500	14500	15000	11467	9000	8900	9200	8200	11000	12500	9600	12000	10000	20500 20000

जुलाई 2019

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सुखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
					(रु. / क्वि.)				(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषिं क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्स)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषिं क्कोट	कंगयम	कोषिं क्कोट	तिपूर	कोषिं क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर (ग्रेड-1)
01.07.2019	14400	14500	15000	11467	8500	8900	9150	8200	11400	13000	9500	12000	10000	20500 20000
07.07.2019	14400	14400	14850	11333	8500	8800	9050	8200	11300	13500	9300	12000	10000	20500 20000
14.07.2019	14400	14400	14800	11267	8950	8850	8950	8100	11500	13700	9300	12000	10000	18000 20000
21.07.2019	14500	14500	15000	11667	9200	9050	9400	8300	12900	14000	9200	12000	10000	18000 20000
31.07.2019	14800	14800	15100	12000	9500	9400	9600	8800	12500	13800	9400	12000	11000	18000 20000

अगस्त 2019

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सुखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
					(रु. / क्वि.)				(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषिं क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्स)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषिं क्कोट	कंगयम	कोषिं क्कोट	तिपूर	कोषिं क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर (ग्रेड-1)
01.08.2019	14800	14800	15100	12000	9500	9400	9600	8800	12600	13800	9400	13000	11000	14000 21000
11.08.2019	15600	15500	16000	13000	10300	10100	10100	8800	12500	13600	12500	13000	12000	14000 21000
18.08.2019	15800	15800	17100	14000	10500	10400	10800	9300	13500	13800	12500	15000	13000	14000 21000
25.08.2019	16700	16500	17650	14000	11000	10800	10700	9600	13600	13400	12500	14000	14000	14000 21000
31.08.2019	16400	16400	17300	13333	10700	10600	10700	9700	13000	13600	11500	15000	13000	14000 21000

स्रोत

- कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2
- कोषिंक्कोट : 'मातृभूमि'
- आलप्पुळा : 'मलयाला मनोरमा'
- अरसिकरे : ए पी एम सी, अरसिकरे
- कोषिंक्कोट बाजार में 'ऑफीस पास' खोपरे का और आलप्पुळा बाजार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव

बाजार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

जून 2019

तारीख	नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)				छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				
	अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		फिलीपीन्स		फिलीपीन्स		इंडोनेशिया		श्रीलंका		भारत*
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
01.06.2019	111	140	140	313	642	638	639	1,757	1679	407	389	930	1165
08.06.2019	112	140	159	320	647	620	642	1,531	1675	410	392	930	1165
15.06.2019	111	रि.प्रा.नहीं	159	328	651	620	रि.प्रा.नहीं	1,614	1689	409	रि.प्रा.नहीं	930	1194
22.06.2019	111	रि.प्रा.नहीं	140	328	634	617	रि.प्रा.नहीं	1556	1679	404	रि.प्रा.नहीं	928	1194
29.06.2019	100	रि.प्रा.नहीं	139	328	611	623	रि.प्रा.नहीं	1,699	1670	405	रि.प्रा.नहीं	928	1194

जुलाई 2019

तारीख	नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)				छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)					
	अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		फिलीपीन्स		फिलीपीन्स		इंडोनेशिया		श्रीलंका		भारत*	
	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
06.07.2019	105	108	136	320	1650	634	621	628	1562	1650	399	390	931	1194
13.07.2019	104	105	128	313	641	638	615	615	1596	1641	398	386	832	1180
20.07.2019	103	105	126	320	1699	651	609	615	1677	1699	397	387	832	1209
27.07.2019	101	105	130	349	1747	702	665	656	1729	1747	398	400	828	1281
29.06.2019	100		139	328										

अगस्त 2019

तारीख	नारियल तेल (यूएस \$/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$/ मे.ट.)				छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$/ मे.ट.)				
	अंतर्राष्ट्रीय		देशीय		फिलीपीन्स		फिलीपीन्स		इंडोनेशिया		श्रीलंका		भारत*
	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका
03.08.2019	103	106	130	345	689	638	641	1725	1688	398	398	826	1238
10.08.2019	96	121	133	373	701	663	663	1654	1828	389	402	852	1238
17.08.2019	95	121	130	408	708	671	668	1626	1969	392	415	887	1308
24.08.2019	95	128	122	422	712	670	668	1560	1969	403	408	881	1350
31.08.2019	95	128	122	408	740	675	673	1605	1875	420	415	791	1364

*भारत

- नारियल तेल : कंगयम बाजार
- खोपरा : कंगयम बाजार
- नारियल : पोल्लाच्ची बाजार

नारियल क्षेत्र में सफल स्वार्द अप के लिए



नारियल प्रोद्योगिकी
मिशन
(टीएमओसी)
के अधीन नाविबो की
क्रेडिट बद्द वित्तीय
सहायिकी
प्राप्त करें



नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ
स्थापित करने हेतु वित्तीय सहायता
उद्यमियों के लिए परियोजना लागत का
25 % अधिकतम 50 लाख रुपए तक और
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति
की महिला उद्यमियों के लिए
परियोजना लागत का 33.3 %
अधिकतम 50 लाख रुपए तक।



अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:



नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय), भारत सरकार, केरा भवन
एसआरवी रोड कोची -682 011, भारत

ई मेल:kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेब:www.coconutboard.nic.in दूरभाष: 0484-2376265, 2377266, 2377267

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

श्रीमती वी.उषा रानी भा.प्र.से.
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सरविंदु दास
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
श्री आर. मधु
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पा.बा.स. 1021, केरा भवन
कोची - 682011, केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्स: 2376265, 2376553,
2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in,
cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

कर्नाटक

इ. अरवाडी
प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
ब्रेवरघट्टा रोड
बंगलरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम

श्री लम्हार ओबेद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रांशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाटसफेड काम्पलक्स, (छाता तल),
वायरलेस बसिष्ठा राड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहाटी - 781 006
दू.भा. : (0361) 2220632
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु

श्रीमती बाला सुधाहरि
प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
से 47, एफ-1, डा. रामस्वामी शालड,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दू.भा. : 044- 23662684
23663685
ई-मेल : cdbroc@gmail.com

बिहार

श्री राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के सामने,
जगदेवपथ, फुलवारी रोड,
डाक-बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.बी.सी.),
पटना-800014
दू.भा. : (0612) 2272742
फैक्स : 0612- 2272742
ई-मेल : cdbpatna@gmail.com

अन्धमान व निकोबार द्वीप समूह

उप निदेशक नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्धमान
अन्धमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : cdban@rediffmail.com

आंध्र प्रदेश

सहायक निदेशक
राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.ने.4-123, राजुला बाजार
रामवराण्डा डाक, जिला परिषद हाई स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफॉक्स नं. 0866-2842323/मोबाइल: 09866479650
ई-मेल: cdbvijap@gmail.com

महाराष्ट्र

डा. अमेया देवनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, यूकालिप्ट्स बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, डाण(वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : cdbthane@gmail.com

राज्य केन्द्र

पश्चिम बंगाल

उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, बी.जे.-108-सेक्टर-11
साल्ट लेक, कोलकाता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स: 91 33-23599674
ई-मेल : cdbkolkata@gmail.com

बाजार विकास सह सचना केन्द्र, दिल्ली

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाजार विकास सह सचना केन्द्र, 120,
हरगांवन्द एनक्लोव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्यिकल्वरल अबन हॉलसेल मार्केट
(वर्ल्ड मार्केट) आनंदया बी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दू.भा., फैक्स : 0471-2741006
ई-मेल : cdbtvm@yahoo.in

सी आई टी, आलुवा

श्री श्रीकमार पोतुवाल
उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कोनपुरम,
दक्षिण वाष्पकुलम, आलुवा पिन-683105,
दू.भा. : 0484 2679680,
ई-मेल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

आंध्र प्रदेश

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वैगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359,
ई-मेल : dspfmvgda@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

कर्नाटक

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, येमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेल : cdbnrlm@gmail.com

महाराष्ट्र

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, येमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : 04252 256090
ई-मेल : dspfarmalpalghar@gmail.com

असम

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोगेगांव,
असम - 783 384, टेली. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेल : cdbdspahayapuri@gmail.com

बिहार

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला,
बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेल : dspfms@gmail.com

पश्चिम बंगाल

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
डीएसपी फार्म, फुलिया, एसबीआई फुलिया शाखा के पास,
एनएच-34, बेलमठ डाक, नारिया, पश्चिम बंगाल-741 402
दू.भा. : 03473 234002
ई-मेल: dspfarmfulia@gmail.com

छत्तीसगढ़

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोडांगांव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेल : cdbkgm1987@gmail.com

तमिलनाडु

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति
नगर डाक, उदुमलपेट,
तमिलनाडु-642112, दू.भा.: (04252) 265430
ई-मेल: dspfarmdhali@gmail.com

त्रिपुरा

सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा,
सकवारी डाक, जोलाइवारी (मार्ग),
सबरम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा.: 038 23263059
ई-मेल: dspfarmhichachartripura@gmail.com